वैद्यक-

रसराज महोदधि भाषा

(प्रथम भाग)

श्रीवेंकटेश्वर प्रेस प्रकाशन, बम्बई ४.

श्रीः।

वैद्यक रसराजमहोदधि भाषा।

प्रथम भाग।

जिसमें

यूनानी हिकमत, यूनानी दवा, फकीरोंकी जडी-
बूटी और सन्तोंकी पुस्तकोंका संग्रह है।

जिसको

मुन्शी भगवानप्रसादके शिष्य भगत भगवानदास
वल्द सुबराज गाँव चकवढवल निवासी
जिला जौनपुरने विरचित किया।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
छाप कर प्रकट किया।

संवत २०२९ शके १८९४

मुद्रक और प्रकाशक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक—"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

श्रीः ।

रसराज-महोदधि-विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता।

भूमिका।

कोटि कोटि दंडवत हैं उस निर्गुण निराकार पूरण-ब्रह्म सच्चिदानंदघन अवधविहारी गोवर्द्धनधारी श्याम-सुंदर श्रीमुरारी. मोरमुकुटधारीको जिसकी अपार महिमाको शारदा, ब्रह्मा, शिव, वेद, पुराण कोई बयान नहीं कर सकता। जिसके चरित्रको गायके कैसाही अधम और पातकी होवे सोभी इस अपार संसारके भवसागरसे पार उतरा है यह ओषधि-रूपी "रसराजमहोदधि" वैद्यक ग्रंथ पांच खंड प्रगट करता हूँ और सब सज्जन पुरुष और पंडित साधु स्वामी लोगोंकी बहुत तरहसों विनती करता हूँ कि जिस जगह कोई भूल होय तो सँभार लेवें और इस ग्रंथमें यूनानी और फकीरोंकी दी हुई बूटियोंकी संग्रह है इसके पढ़नेसे हजारों आदमीका हितकारज होगा. और जो इसकी विधिप्रमाण दवा करैगा ता उस पुरुषको इस संसारमें मान और यश मिलेगा। और एक पैसेकी दवाईमें हजारों रुपयेका गुण दिखावेगा. और इस ग्रंथका वर्णन लिखने योग्य नहीं है जो देखेगा उसको इसका गुण मालूम होगा. श्रीपंडित कामताप्रसाद संतन प्रतिपालक और सुकुल भगवान-

दत्त पंडित और बाबाहंसदास और शिरोमणि पंडित और ठाकुर उदवंतासिंह ये सब सज्जनपुरुषकी आज्ञा-नुसार मुंशी भगवानप्रसाद कायथ जिले जौनपुर गांव रसूलपुर शिष्य भगत भगवानदास मुराई जिला जौनपुर गांव ठाठर गोदामके पास गाम चकबढ़-बल इन्होंने बनाया.

भगत भगवानदास.

ॐ
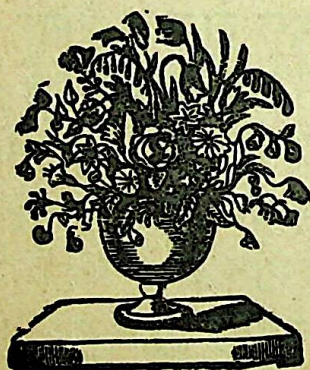
श्रीगणेशाय नमः ।

वैद्यक रसराजमहोदधि ।

वन्दना ।

दोहा ।

उमा महेश गणेश गुरु, ब्रह्मा विष्णु फणीश ॥
भगवानदासकरजोरिकहै, कृपाकरहुजगदीश ॥
विष्णुरूप हियमें धरौं, करौं गुरूको ध्यान ॥
सरस्वती उर धारिकै, रचौं ग्रंथ परमान ॥
जग कारज कल्याणहित, वैद्यक अमृतरूप ॥
धन्वंतर वैद्यक किये, औषध अमृतरूप ॥
कहा फारसी वैद्यक, जिसमें वैद्यकसार ॥
रसराजमहोदधि कहों, वैद्यक भाषिविचार ॥
विविधभांतिसुमिरण करौं, शिवचरणनकी आस ॥
सर्वद्विजन आशीशके, सुजन पुरुषकी आस ॥
मुन्शी भगवान प्रसादके, चरणन करौं प्रणाम ॥
वैद्यकग्रंथविरचितकियो, भगवानदासहैनाम ॥
जगतमही परकाशहै, विधिहरिहरहै नाम ॥

ऐसे उस जगदीशको, बहुविधिकरौं प्रणाम ॥
जो वैद्यकहै निगमके, भाषा वैद्यकभूप ॥
गणपतिको करिदंडवत, वैद्यक रचों अनूप ॥

अथ प्रथमरोगविचार.

अनेक प्रकारकी पीड़ाओंको रोग कहते हैं. रोग दो प्रकारके हैं. एक कायिक दूसरा मानसिक कायामें रहै सो कायिक उसका नाम व्याधि है. मनमें रहै उसका नाम आधि है. सो ये दोनों शरीरमें किसी प्रकारके कुपथ्यसे वात पित्त कफरूप दोष और मिथ्या आहार वा मिथ्या विहारके होनेसे सब रोगोंको उत्पन्न करते हैं और यह वात, पित्त, कफ कई प्रकारके कुपथ्यसे बिगड़कर देहको बिगाड़ते हैं. और यही अच्छेप्रकार पथ्यके सेवनेसे शरीरको पुष्ट करते हैं.

अथ सर्वरोगोंकी परीक्षा.

नाडीपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा और मल शरीर या सकल व नेत्र शिरसे पैरतक ये रोगीके परीक्षा करैं.

अथ नाडीपरीक्षा.

पुरुष रोगी होय तो उसके दहिने हाथकी और स्त्री रोगिणी होय तो उसके बायें हाथकी नाड़ी देखै परतु वैद्यको उचित है कि एकाग्र चित्त और प्रसन्न-मन होकर विचारपूर्वक रोगीके हाथको हिलने न

देवै और चतुर वैद्यजन नाडी ऐसे देखे कि रोगीका हाथ लम्बा करावे और कछुक टेढ़ा हाथकी अंगुली सब पसारके हाथको न हिलावे और कड़ा करै ऐसी विधि करायके अंगुष्ठमूलसे नाडी देखे. प्रभात समयमें तीनवार नाडीपरीक्षा धारण करै फिर छोडदे, ऐसे तीनवार परीक्षा करै और फिर बुद्धिसे विचारकर रोगको नाडीद्वारा प्रगट करै, वैद्य गुरुका ध्यान करिके नाडी देखे कौवाकी चाल नाडी चले तो उसके ज्वर जानै और बहुत सुस्त बारीक नाडी चले तो कफज्वर जानो और मोर या मुर्गा या बतक इसके मिसाल चलै तो कफपित्तका ज्वर जानो और अंगुलीमें दबि दबि जाय तो वातके फिसाद ज्वर जानो, और साँपकीचाल नाडी चले तो वात कफका ज्वर समझना और काठफोरा जो काठको ठाक ठंक काटते हैं जो नाडी ऐसी चाल चले तो सन्निपातज्वर जानो यही सब नाडी परीक्षा है और इसीसे सब रोग जाना जाता है.

अथ मूत्रपरीक्षा.

लाल रंग मूत्र होय तो उसके खूनका जोर समझना चाहिये. और पीला हो तो ज्वर समझना और सफेद रंग होय तो बलगमके व्याधि जानो और

अंजीरके रंग मूत्र होय तो खूनसे बिगड़ा मूत्र समझो और केसरीके रंगका मूत्र होय तो वादी वा पित्तसूं बिगड़ा मूत्र जानो. और खूनके रंग मूत्र होय तो और जरा स्याही रंगलिये होय तो गरमीका रोग जानो. और जो निहायत कालारग हो तो असाध्य जानो और जो कि ज्वर मिला हो तो ६ महिनाके अन्दर मरै और ज्वर न रहै काला रग मूत्र होय तो रोगी जीवैगा मरै नहीं.

जो तस्वीरमें नसें बनाई हैं इसी तरहसे मनुष्यके शरीरमें नसें होती हैं. तमाम शरीरमें जो नसेंहैं सो इनकी जड़ छातीसे हैः सो वह नसें छातीसे पैर व हाथ तक हैं.

अथ कफ खाँसी डाँसी ऊर्द्ध्वश्वासका लक्षण.

दोहा—उद्र विषे एक नाटिका, होवै मलसों बन्द ।
कफ खांसी उद्रश्वास बहु, करै व्यथा सब अंग ॥

अथ मन्दअग्निलक्षण.

जिस पुरुषके पेटमें मल खराब हुआ हो उसकी नाडी बहुत सुस्त चले, पेटमें गर्मी मालूम हो. शरीर सुस्त रहै, खाना बराबर हजम न होय, मूत्र लाल उतरै और सब अंगमें पीडा हो, या अंग गर्म रहै, मल बराबर उतरै नहीं ये लक्षण मन्द अग्निके हैं.

अथ संग्रहणीका लक्षण.

जिस पुरुषके अंगमें संग्रहणी होय, शिर भारी रहै. आंख बैठ जायँ, मल, मूत्र साथ ही उतरै, दस्त पानीके सरीखा होय अन्न पचे नहीं, दस्तके साथ वह अन्न गिरा करै, शरीरका चेहरा बदल जाय ये लक्षण संग्रहणीके हैं.

खूनीबवासीरका लक्षण.

तृषा अरुचि रुधिर निकलै. दुर्बल होय, अतीसार होय. खाज होय. गुदाके बीचमें फोडा निकलैं ये लक्षण खूनीका है.

अथ दाहका लक्षण.

बाहर अन्दर दाह बहुत होय, उदर गरम रहै, मूर्छा होय, तृषा होय, ये लक्षण दाहके हैं.

अथ बदनमें बादी कब्जियत बिगडेका लक्षण.

जिस आदमीके अंगमें बादीका बहुत जोर होता है उससे खाना नहीं खाया जाता और न बराबर हजम होय, तमाम अंगमें सुस्ती होवे हाथ पांवमें चिकनाहट होवे और पानीके मुवाफिक मालूम होय पानी पीनेकी इच्छा न लगै गर्मी मिजाजमें मालूम होय.

अथ खून बिगड़ेका लक्षण.

जिस पुरुषके अंगमें रक्त बिगड़ा होवे उसके मुँहका स्वाद मीठा कडुआ होय, शिर भारी होय और हड्डीके अन्दर दर्द होय, जबान सूखी रहै और अंगमें खुजली, आंख सुर्ख रहै पेशाब लाल उतरै नाड़ी बहुत जल्दी जल्दी चलै ये लक्षण रक्त बिगड़ेके हैं.

वात पित्त मिश्रित होय उसका लक्षण.

दोहा—वात पित्त कफ धीरते, करत बदनके रोग ।
जील दोष दुर्वासना, फोड़ा फुडिया योग ।

अथ वायुका लक्षण.

दोहा—तनु कांपै सूखे अधर, तृषा जलकी होय।
हुचकी शूलरु उदर दुख, मुख फीका कहुसोय॥

अथ वातका लक्षण.

दोहा—सब शरीर नख नेत्रकों, विष्ठा मूत्र जु होय।
ये लक्षण ज्वरवायुके, मूत्र रुधिररँग होय॥

अथ कफज्वर लक्षण.

मूत्र बहुत जल्दी जल्दी उतरै चित्त भ्रमित रहै. बुद्धि नष्ट हो जाय नींद बहुत आवे कफ छाती छेके रहै देहमें दँदोरा ऐसा मालूम होय तो कफ-ज्वरका लक्षण है.

निरोगरहनेका बयान.

मनुष्यको चाहिये कि दिनको सोना नहीं और रातको जागना नहीं, बहुत आदमी ऐसे निद्रा करनेसे रोग उत्पन्न करते हैं और खराब खाना खाय नहीं और दिनको स्त्री भोग करै नहीं.जोड़ा पहननेसे आंखों-को गुण करता है छतरी धारण कियेसे शरीरको सुख होता है और मनुष्यको उचित है कि सज्जन पुरुषसे प्रीति करै और सत संगति करै ब्राह्मण वृद्ध पुरुष वैद्य और राजासे प्रीति करै और गुरुका कहना माने

दुष्ट पुरुषको त्याग करै वैरीसे दूर रहै और किसीको दुःख देवै नहीं, और विश्वास विचारके करै मिथ्या बोलै नहीं, अपनेसे बलवान् पुरुषसे युद्ध करै नहीं, स्त्रीका विश्वास करै नहीं, सामके वक्त घड़ी दिन रहे सोवै नहीं, सोनेसे आयुहीन और दरिद्र होता है स्त्रीका सोलह वर्षतक बाला नाम है और बत्तीस वर्षकी स्त्री तरुणी संज्ञा है पचास वर्षतक अधिरूढा पचास वर्षके उपरांत वृद्ध अवस्था है, रजस्वला वृद्ध गर्भिणी वैरवाली और गोत्रकी गुरुकी स्त्रीसे मनुष्यको उचित है कि ऐसी स्त्रीसे भोग करै नहीं जो मूर्ख लोग करते हैं तो पूर्वजन्ममें गूंगे होते हैं और परीक्षित रोग होता है, वह आदमी सदा क्लेशमें रहता है, मनुष्यको चाहिये कि अपनी स्त्री सिवाय दूसरी स्त्रीसे भोग नहीं करे और स्त्रीको चाहिये कि अपने पतिको छोड़कर दूसरेसे भोग करै नहीं यह धर्म और वेदकी रीति है.

अथ स्वप्न विचार.

जो स्वप्न मनुष्यको शामसे आधीराततक दीख आवै तो छः महीनेके अन्दर फल करै और आधी रातसे सबेरेतक जो स्वप्न देखै तो दश महीनाके अन्दर फल करै और वह्य धर्मवाला और भक्तिवाला

शीलवाला ये अच्छा है, पढ़ लिखे शास्त्र-विष निश्चयवाला और गैर लालची ये वैद्य अच्छा हैं,ये स्वप्नमें आवैं तो श्रेष्ठ है, जो खराब स्वप्न देखै तो किसीसे कहै नहीं और ब्राह्मणको दान दे और सींगवाला बैल बंदर और शूरवीर और नाव पर चढ़ा ये देखै तो राजाका भय होय, और काला कपड़ा लाल कपड़ा पहरे स्त्री देखे तो मृत्यु होय, और शिर मुँड़ाये और अपना व्याह देखै और घरमें नाच तमासा देखै तो मृत्यु होय, और भैंसा ऊंट गधा दक्षिण दिशाको जाता देखै अच्छा मनुष्य देखै तो बीमार होय, और बीमार देखे तो अवश्य मरै और जो सफेद कपड़ा पहरे सफेद माला पहरे स्त्री-को पुरुष देखै तो लक्ष्मी प्राप्त होय, ब्राह्मण गुरु और बर्तिआगि साधुनका झुंड बुढ़ापा ये स्वप्न सदा आनंदकारी हैं

अथ दूतपरीक्षा.

पवित्र होकर शीलमान आदमी वैद्यको बुलाने जाय तो श्रेष्ठ है और काना और अंधा लँगड़ा मैला कपड़ा ये अशुभ है, वैद्यको अच्छा दृष्टांत मिलै तो जाय और मान होय, रोगी जीवै परीक्षा बहुत है जियादा लिखनेसे काम नहीं.

अथ साध्यलक्षण.

रोगी आदमीका सब शरीर शोभायमान होय चेहरा ज्योंका त्यों रहै मुख रूखा रहै दाँत सफेद रहैं वो रोगी जीवे, ओठ लाल रहैं शरीरमें मैल बास न रहै कानसे सुनै ये लक्षणका रोगी जीवै और जिसके पैर गर्म रहैं और कपड़ामें खराब बास नहीं आवै मधुर वचन बोलै वह रोगी अवश्य जीवै, सबेरे रोगीका मूत्र पानी सरीखा हो तो वह रोगी मरै नहीं.

असाध्यलक्षण.

देहकी शोभा जाती रहै और चेहरा भयंकर होय रात दिन अचेत रहै तो वह रोगी अवश्य मरै और रोगी-का मुँह रोरी सरीखा होय, जीभ काली होय और वचन दब दब बोले वह रोगी असाध्य है, और जिस रोगीके शरीरमें खराब बास आवै तो वह रोगी असाध्य, आँखि बैठ जाय और किसीको पहिचाने नहीं और बोले औरका और तो वह रोगी असाध्य है.

अथ मलज्वरलक्षण.

कंठ सूखै, दाह बहुत होय, मस्तक पीड़ा होय, भ्रम उपजै, मूर्च्छा होय. हड़फूटनी होय, हिचकी, पेटमें शूल, वमन होय तो मलज्वर लक्षण जानो.

कालज्वरके लक्षण.

पेशाब बहुत होय. देह गलिजाय. माथ नाक शीतल होय ये लक्षण कालज्वरके हैं.

कफज्वर, शीतज्वरके लक्षण.

अरुचि होय, अग्नि मंद होजाय, मुखमें खराब गंध आवै, ज्वर बहुत होय, देह शीतल होय, निद्रा बहुत होय, ये लक्षण कफज्वर और शीतज्वरके हैं.

कामज्वरके लक्षण.

शीत लगै, शरीर काँपै, चित्तभ्रम होय, माथामें पीड़ा होय, कंठ सूखा रहै, मुँह कसैला होय, यह लक्षण कामज्वरके हैं.

रक्तज्वरके लक्षण.

शरीरमें पीड़ा होय, मुख नाकसे खून निकलै, ये लक्षण रक्तज्वरके हैं.

सर्वज्वरके दूर होनेका चूर्ण.

सोंठि धनियां छोटी बड़ी कटाई देवदारु सब बराबर ले कपडछान करिके छः मासे शामको छः मासे सबेरे गर्म पानीके साथ खाय तो सब प्रकारका ज्वर दूर होय.

अथ सर्वज्वरकी उत्पत्ति.

श्रीमहादेवजीने अपने तीसरे नेत्रसे वीरभद्रको उपजाया सो यहीं वीरभद्रसे आठ प्रकारका ज्वर उत्पन्न

हुआ सो आठ प्रकार ज्वरसे सैकरों ज्वर हैं जो लिखने योग्य नहीं. आठ प्रकारके ज्वरोंको अलग२ लिखते हैं वातज्वर १ पित्तज्वर २ कफज्वर ३ वातपित्त-ज्वर ४ वातकफज्वर ५ कफपित्तज्वर ६ सन्निपात-ज्वर ७ आगंतुकज्वर ८ यही आठ प्रकारके ज्वर हैं.

अथ वातज्वरलक्षण.

शरीर काँपै, कभी शरीर जलै.कभी कम होना, गल ओंठ मुखका सूखना, निद्रा न आना. छींक न आना, अंगमें रुखाई, शिर हृदय व देहभरमें पीडा, मुख फीका, बहुत कडा दस्त होना, पेटकी पीडा, पेट फूलना, जँभाई आना ये सब वातज्वरके लक्षण हैं.

अथ वातज्वरकी दवा.

सोंठ चिरायता नागरमोथा गिलोय इन्होंका काढा करि देइ तो वातज्वर दूर होय.

गुडूच्यादि काढ़ा.

गिलोय, छोटी पीपली, जटामांसी, सोंठि इन्होंका काढा करि देय तो वातज्वर जाय यही सुंठचादि काढा है.

(भैरवरस)

बचनाग विष सोंठि पिपली मिरच रक्त आक सब बराबर लेय अदरखके रसमें खरल करिके दे वातज्वर तत्काल दूर होय.

पित्तज्वरा लक्षण.

नेत्रमें दाह होय,मुँह करुवा होय,पियास बहुत लगे, भवँर छुटै,बकै,शिर गरम रहै, मल पतला उतरै, वमन होय, नींद न लगै, मुख सूखै और पाकि जाय,पसीना आवै, नेत्र मूत्र मल पियर होयँ ये लक्षण जेहि पुरुष के होयँ तो पित्तज्वर जानो.

अथ पित्तज्वरका काढ़ा.

धमासा बांसा कटुकी पित्तपापडा मालकांगुणी चिरायता इन्होंका काढ़ा बनाय मिसिरी डारि पिये तो पित्तज्वर दाहसहित नाश होय.

(पुनः काढ़ा)

गिलोय नागरमोथाधनियाँ मुलहटीचिरायता इन्हों-का काढ़ा तृषा शूल अरुचि छर्दि पित्तज्वरको दूर करै है.

अथ कफज्वर लक्षण.

अन्नकी अरुचि होय, शरीर भारी होय, मूत्र नेत्र नख सफद होयँ, नींद घनी आवै, शरीरमें ठंढी होय, मुँह मीठा होय, दस्त न उतरै, आलस्य आवै, श्वास खांसी होय ये लक्षण कफज्वरके हैं.

कफज्वरपर त्रिफलादि चूर्ण.

त्रिफला पिपली चूर्ण करि शहदके साथ चाटै तो कफज्वर श्वास खांसी दूर होय.

निम्बादिका काढ़ा.

निम्ब सोंठि गिलोय शतावरी धमासा चिरायता पुष्करमूल पीपलामूल कटेली इन्होंका काढ़ा करि पिये तो कफज्वर दूर होय-

अथ वातपित्तज्वरके लक्षण.

मूर्छा होय, भवँरी छूटै, दाह, नींद आवै नहीं, माथेमें पीडा हो, कंठ मुँह सूखै, वमन रोमांच होय, अरुचि होय, सर्व अंगमें पीडा होय, जँभाई आवै और बकवाद करै ये लक्षण वातपित्तके हैं.

अथ वातपित्तज्वरपर पंचमूलादि काढ़ा.

पंचमूल गिलोय नागरमोथा सोंठि चिरायता इन्हों-का काढ़ा करि पिये तो वातपित्तज्वर दूर होय.

मुस्तादि काढ़ा.

नागरमोथा धनियाँ चिरायता गिलोय नीं व कटुकी कडू परवर इन्होंका काढ़ा करि पियं तो वात पित्त ज्वर दूर होय.

अथ वातकफज्वरके लक्षण.

खांसी अरुचि संधि २ में पीडा माथ बाय पीनस संताप अंग कंपै शरीर में भारीपना होय नींद आवै नहीं पसीना श्वास पटमें शूल होय और यही लक्षण

जिस मनुष्यके होयँ और नाड़ी सर्प हंसकी चाल चले तो वातकफज्वर जानो.

अथ वातकफज्वरकी दवा.

कली चूना १० टंक हरताल तवकी १० टंक ले घीकुवारके रसमें ४ पहर घोटै तब गोला बाँधिझुरावै, फिर गजपुट कर आंच देय शीतल भयेपर रोगीका बल देखिके १ टंक गरम पानीके साथ देय तो नित्य-ज्वर, अँतराज्वर, तिजारीज्वर, चौथियाज्वर, वात-कफज्वर ये सब ज्वर जायँ.

और काढ़ा.

कायफल, सूँठि, वच, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धनियां, हर्र, काकड़ासिंगी, देवदारु, भारंगी इन्होंका काढ़ा बनाय पिये तो वातकफज्वर जाय.

अथ कफपित्तज्वर लक्षण.

चटचटाहट और मुख कड़ू होना, आलस्य होना और खांसी आना, अरुचि, प्यास बार२लगै, दाहहोय, शरीर ठंढा रहै ये कफपित्तज्वरके लक्षण हैं.

कफपित्तज्वरकी दवा.

सोंठि, पित्तपापड़ा, धमासा इन्होंका काढ़ा कफ-पित्तज्वरको दूर करता है.

और काढ़ा.

कटैली, गिलोय, सोंठ, पुष्करमूल, चिरायता इन्होंका काढ़ा सर्वज्वरको हरै है.

ज्वरांकुशरस. कफ पित्त सब ज्वरोंपर.

पारा २९ गंधक २९ विष २९ सोहागाचौकिया २९ त्रिफला ३७॥ लेकर कूटि कपड़छानकर अदरखके रसमें घोटि गोली उरद प्रमाण बाँधे एक शाम एक सबेरे खाय तो कफपित्तज्वर सर्वज्वर दूर होय.

अथ सन्निपातका लक्षण.

अकस्मात् क्षण २ में रोवै, हँसै, गावै, क्षणमें दाह होय, क्षणमें शीत लगै, क्षणमें स्वभाव फिर जाय, इंद्रियाँ अपने अपने धर्म्मको छोड़दें, शरीरकी संधियोंमें हाड़ोंमें माथेमें पीड़ा होय, आँसू आवैं नेत्र काल वा लाल होयँ, कानमें शब्द होय अंगमें पीड़ा होय कण्ठ परिजाय तन्द्रा, श्वास, कास, अरुचि, भ्रम होय जीभ काली खरदरी लाठरसी होय लोहूसे मिला कफ होय दिनमें सोवै रातिको जागै पसीना बहुत आवै वा न आवै तृषा बहुत होय छातीमें पीड़ा होय मल मूत्र उतरै नहीं, उतरै तो थोड़ा उतरै दूबर होय कफ घुरघुराय मौन रहै ओंठ आदि इन्द्रिय पाकि जायँ पेट भारी रहै, नाड़ीकी गति महामन्द होय, सूक्ष्म टूटींसी होय मूत्र

पीला वा लाल वा काला वा सेंदुर समान होय, मल काला या सफेद वा सुवरके मांसके समान होय, ये लक्षण होयँ तो जानो कि सन्निपात रोग है.

अथ सन्निपातकी दवा, वीरभद्र रस.

(त्रिकुटा) तिरकूठ ३। नोन ९। सौंफ १। दोनों जीरा ३। पारा १। गंधक १। अभ्रक रस १। सबकी कजरी करै, फिर अदरखके रसमें सब दवा छोंड़िके घोटै, फिर अनोपान आदिके रसमें और सेंधौ और चितावारिमें देइ तो तेरहौं प्रकारका सन्निपात दूर होय, जैसे सिंह हाथीको मारै तैसे ज्वरको वीरभद्र रस मारै.

पुनः दूसरा रस.

पारा शुद्ध, गंधक शुद्ध, विष शुद्ध, २९ टंक जायफल, ६२ टंक पीपरी, १० टंक पारा, गंधककी कजली करे, तब दवा डारिके अदरखके रसमें एक दिन खरल करे, फिर १ रत्ती प्रमाण रोगीको दीजे तो सन्निपातज्वर, शीतज्वर, जीर्णज्वर, विषूचिका, विषमज्वर, मन्दाग्नि माथेके रोग सब दूर होयँ.

अथ रोगीकी परीक्षा.

रोगीकी उमर बाकी हो तब भी औषध बिना रोगीकी पीड़ा दूर नहीं होती, दृष्टांत जैसे हस्ती कीचड़में खड़ा हुआ उपाय बिना निकल नहीं सकता उमर बाकी हो

अरु चिकित्सा नहीं करे तो रोगी मरसकता है, जैसे दीपकमें तेल बाती होते भी पवनसे दीपक नष्ट होता है, तैसे साध्य रोगी चिकित्सा नहीं करे तो स्वल्पासाध्य हो,स्वल्पासाध्यकीचिकित्सा नहींकरेतोअसाध्य हो, असाध्यकी चिकित्सा नहीं करे तो मृत्यु होय, जबतक श्वास आवें तबतक चिकित्सा करनी चाहिये, कोइ समयमें चिकित्सासे मरणप्राय भी जीवता है आदिमें रोगीकी परीक्षा करै पीछे औषधकी परीक्षा करे, पीछे समझकर औषध रोगीको देवै.

१ अथ शर्बत गाजबाँ.

गाजबाँ पावसेर, खांड एक सेर, पहिले गाजबांको साफ करके दो या तीनवारपानीसे धोकर कपड़ेमें बांधि-के रातिको भिगोवै,सबेरे अग्निपर दो सेर पानी डारिके चुरावै जब आधासेर पानी रहिजाय तो खांड डारिके शर्बत तयार करै, एक तोला खुराक शर्बतका है, सब रोगोंपर देवै.

२ अथ गाजबांके शर्बतकी दूसरी विधि.

हरी गाजबाँका रस एक सेर ले और एक सेर सफेद कंद ले, दोनोंको एकमें मिलायके चुरावै, तब छानिले,सात तोले छः मासे गुलाबका अर्क मिलायके चासनी कर ले खुराक एकतोला दे यह हौलदिलको शां

यह्रोगीहै
धुनिज्वरका
भयंकर
स्वरूप

रोगी
दूसराज्वर
रूप.

तीसरा ज्वर रूप.

रोगी.

चौथ्याज्वररूप.
रोगी

यमदूत

पापीरोगी

यमदूत

यमदूत
धर्मी रोगी
यमदूत

गर्भाशयका चित्र.

फुफ्फुस (फेंफड़)

अंत्र (आँतडी) प्रदर्शक चित्र.

चलगर्भका चित्र

नरकंकाल

अथवा मनुष्य अस्थिपंजर.

जलंधर रोगी.

अंडकोस वढजानेका रोगी और दवादांम.

कालज्वरका भयंकर स्वरूप.

भगत भगवानदास

आदिब्रह्मधन्वंतरी महाराज.
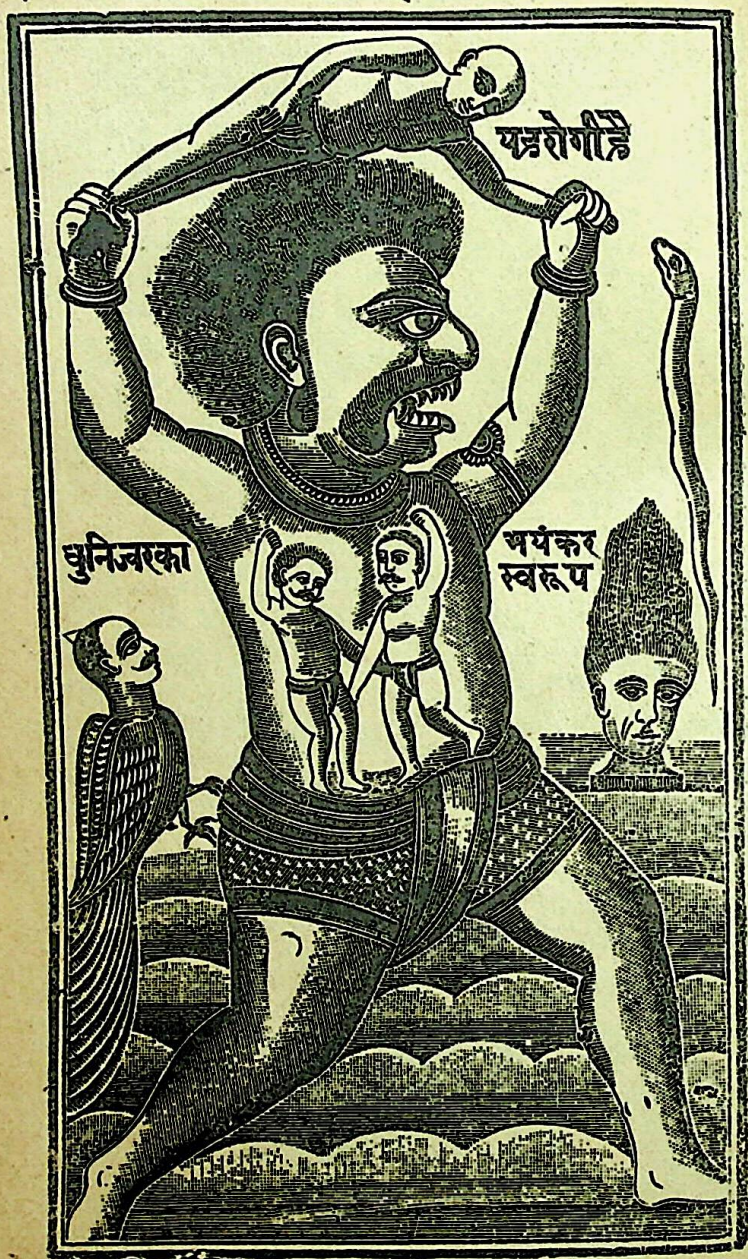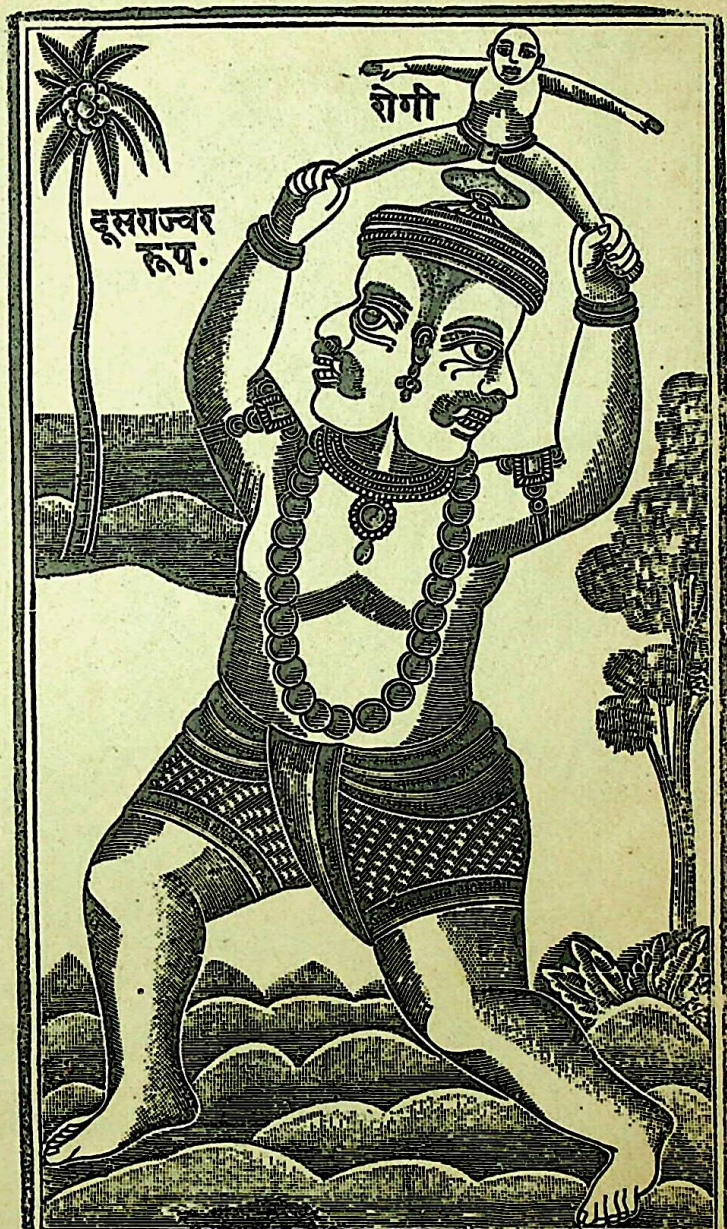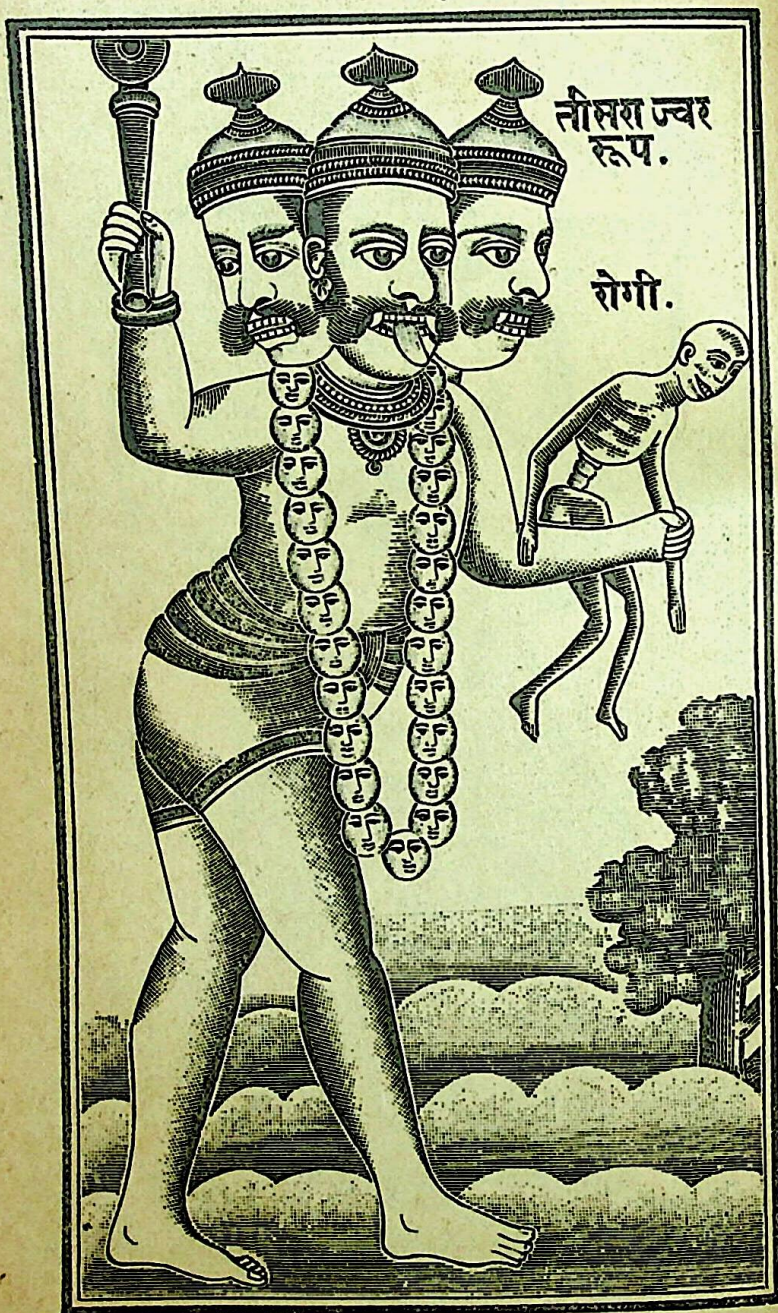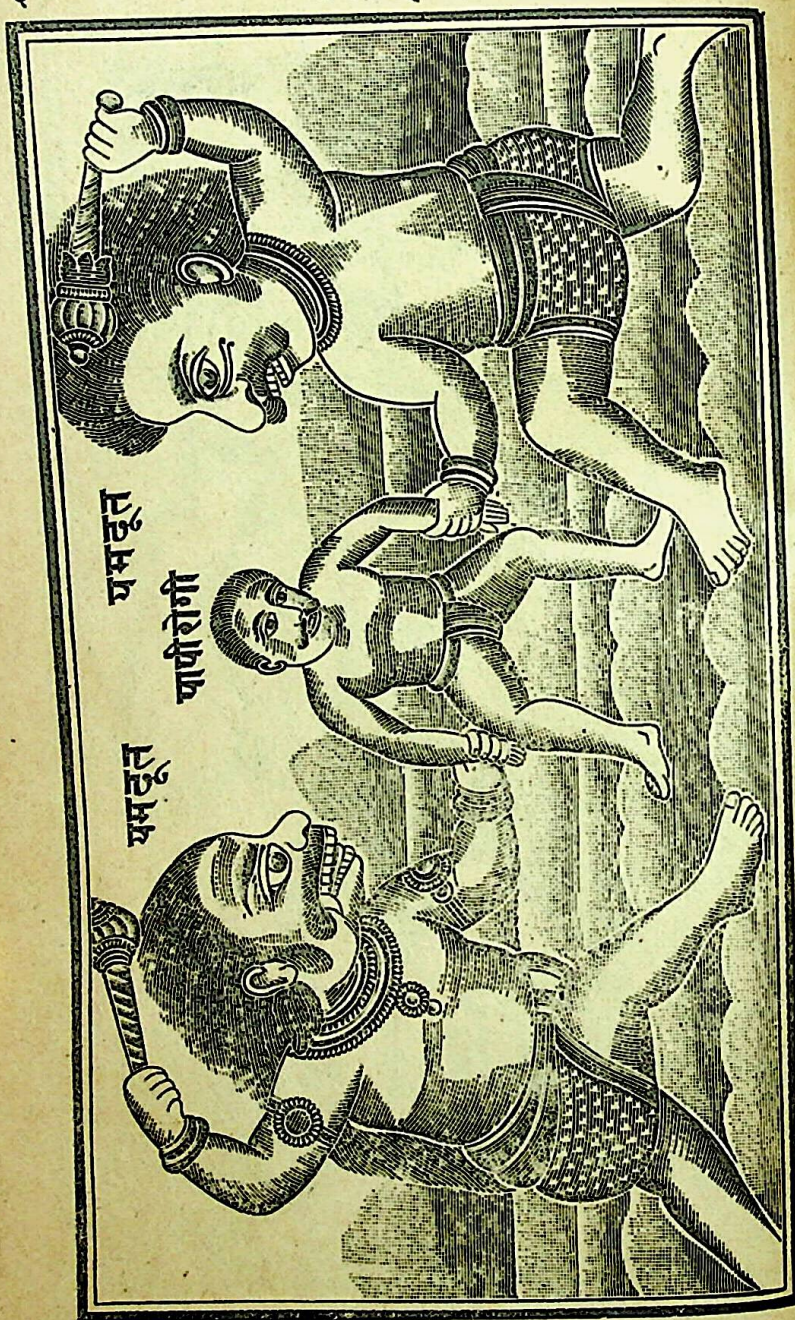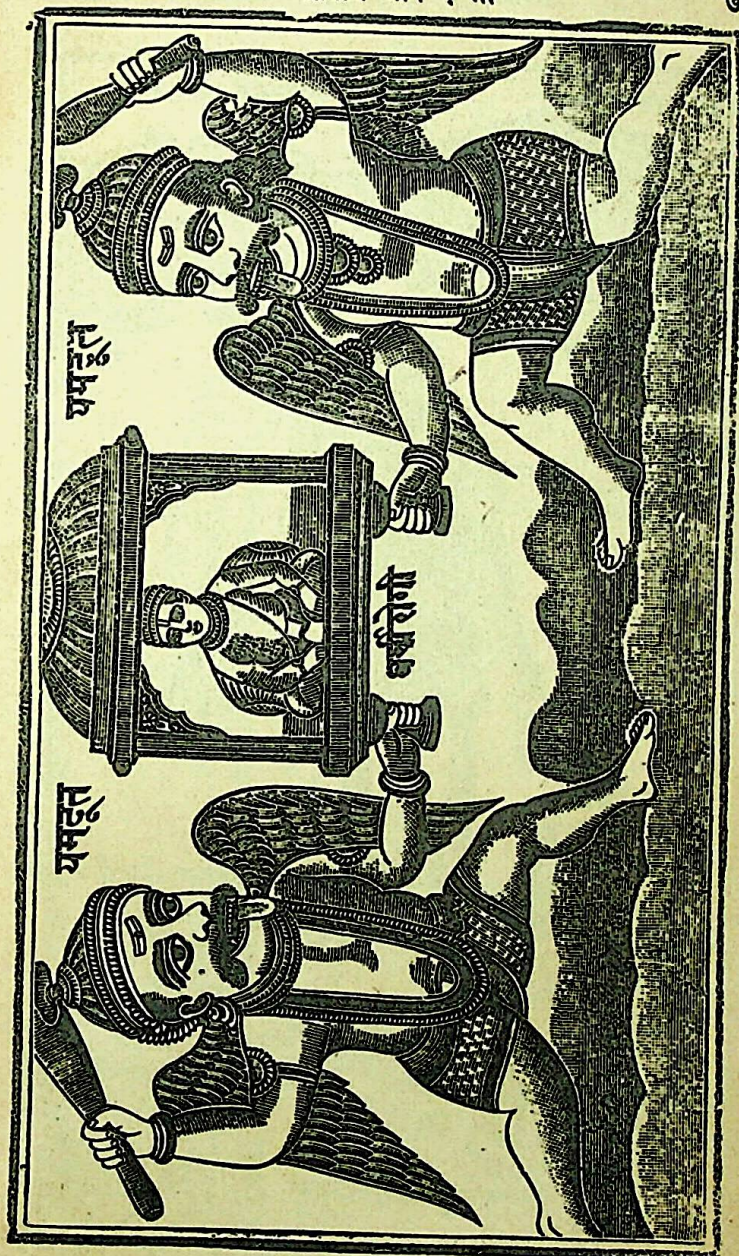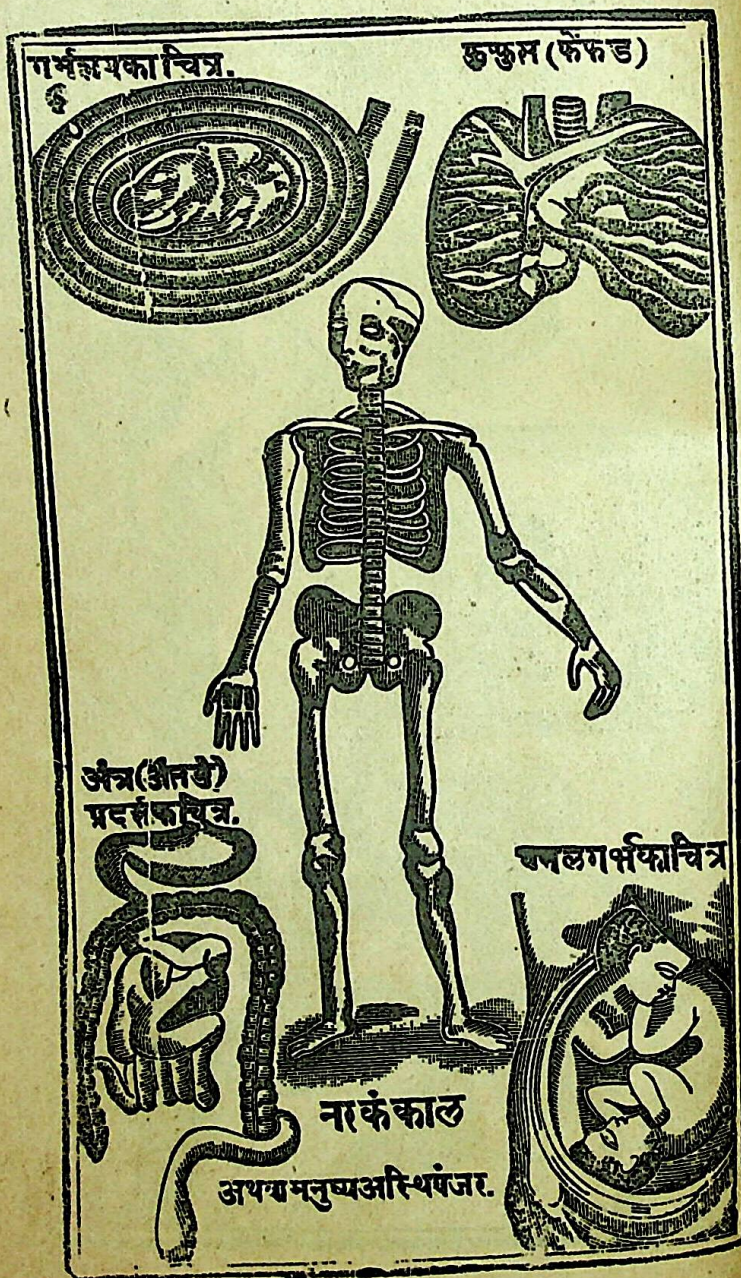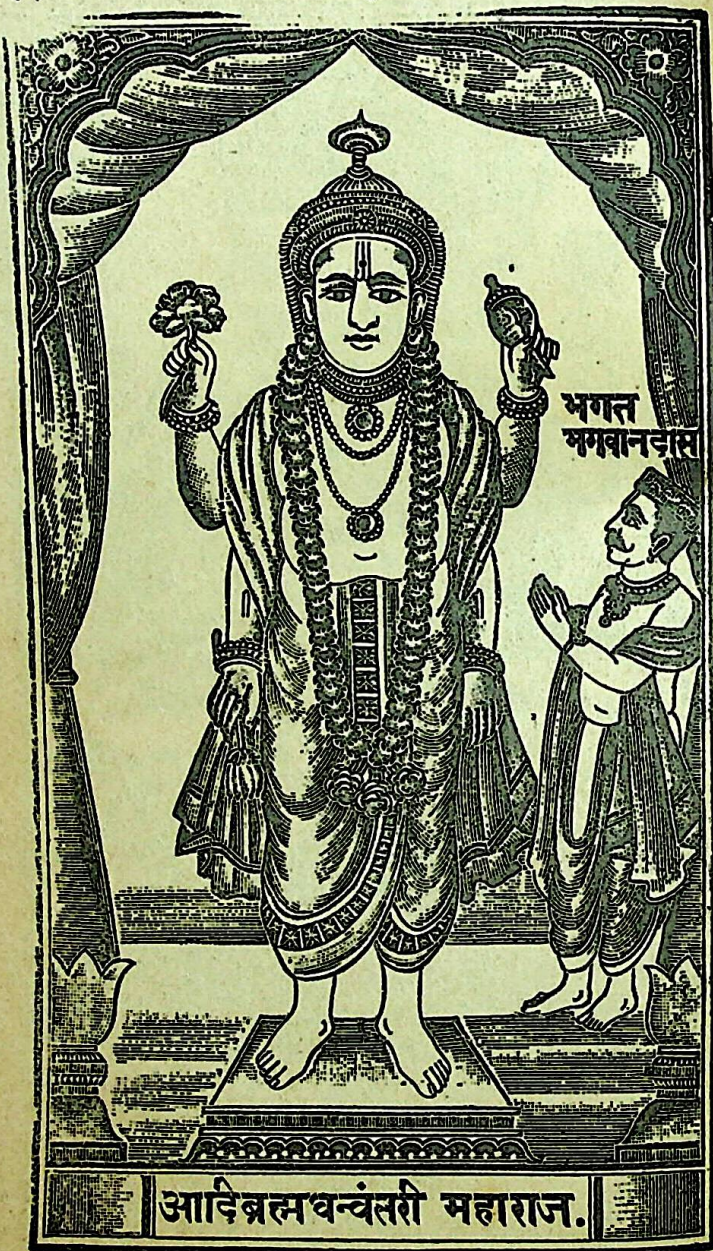
करता है और कलेजेको फायदा देता है, सुस्ती और फफराको दूर करता है.

३ शर्बत नीलोफ़रकी विधि.

नीलोफरका फूल आधा सेर दो सेर पानीमें सामको भिगावै, सबेरे एक सेर चीनी मिलाय कर शबत तैयार करै, खुराक ९ मासे, दिमागको खुश करता है और पित्तज्वरको दूर करता है.

४ शर्बत दीनार (कासनी) की विधि.

कासनीका बीज ८ मासे, गुलाबका फूल ८ मासे, कासनीकी जड़का छिलका ४ मासे, गाजबां ४ मासे, कुसुम ४ मासे, सब दवा डेढ़ सेर पानीमें चुरावे और आधा रहजाय तब डेढ़ पाव शक्कर मिलायके चासनी करके खुराक एक तोला अनोपान मुवाफिक सब रोगोंपर दे.

५ शर्बत जूफाकी विधि.

सम्पुकी जड़, अजमोदाकी जड़, सोसनकी जड़, हंसराज, अंजीर ये सब बारह बारह मासे ले सवा दो सेर पानीमें चुरावै और आधा रहजाय तब डेढ़ पाव शक्कर मिलाके शर्बत तय्यार करै, खुराक चारि मासे, खाँसीको दूर करता है, कलेजको तर करता है.

६ शर्बत अनार विलायतकी विधि.

दो सेर अनारके दानेका रस निकाल ले और ढाई सेर शक्कर मिलाके शर्बत तय्यार कर ले, खुराक दो तोले नजलाको दूर करता है, दिल और दिमागको ताकत देता है.

७ शर्बत शंहतूतकी विधि.

लाल शहतूत दो सेर मलिके छानि ले और दो सेर कन्द मिलाकर चासनी कर ले,खुराक दो तोले,दिलको प्रसन्न करता है और कफज्वरको दूर करता है.

८ शर्बत गुलाबकी विधि.

पावसेर गुलाबके फूल लेकर दो सेर पानीमें चुरावे, आधा रहजाय तब आधासेर शक्कर मिलाकर चासनी करले, खुराक एक तोले, पित्तकी गर्मीको शान्त करता है और पियासको बुझाता है, कलेजेको ताकत देता है.

९ शर्बत वनफ्शाकी विधि.

वनफ्शाके पत्ते आध पाव लेकर डढ़ पाव पानीमें चुरावे,जब आधा रहजाय तब आधसेर चीनी डारिके चासनी कर ले,खुराक एक तोला, फायदा पलईको गुणकारक है, फफड़ेकी पीड़ा और शिरकी पीड़ाके दुःखको दूर करता है, और ज्वरको फायदा करता है

१० शर्बत बेलकी विधि.

पावभर बेलका मगज लेकर भिगोवे, एक सेर पानीमें थोड़ा चुरावै, फिर डेढ़ पाव शक्कर मिलाकर चासनी करले, खुराक एक तोला, कब्जियत दूर करता है, खूनी बवासीरको फायदा करता है और दस्त बंद करता है.

११ शर्बत पुदीनाकी विधि.

एक पाव अनारको कूटकर रस निकाल ले और पुदीनाका रस पावभरि, आधासेर कन्द मिलाकर चासनी करले, खुराक एक तोला, दिलको प्रसन्न करता व प्यास बुझाता है.

१२ शर्बत नींबूकी विधि.

बीस नींबू लेकर उसका रस निकाल कर डेढ़ सेर सफेद चीनी मिलाकर चासनी करले, खुराक एक तोलासे डेढ़ तोला तक, कलेजेकी गरमीको शांत करता है, भूख लगाता है और मन प्रसन्न करता है.

१३ शर्बत केवड़ाकी विधि.

पावभर केवड़ेके फूल लेकर एक सेर पानीमें भिगोकर फिर थोड़ा चुरावै, जब आधा रह जाय तब तीन पाव चीनी मिलाकर चासनी करले. खुराक एक तोला है.

यह यन्त्र शर्बत बनानेकी विधि है.

दवाईका अर्क कढ़ाईमें डालकर मिश्री डालके चुरावै, जब गाढ़ा हो जावै तब कलछुर्लीसे चलाकर

उठावै, जोकि टोप बाँधि लेवै तब कढ़ाईमेंसे निकालकर शीसी में रखदे इसी तरहसे शर्बत बना ले.

ये यंत्र अर्क उतारनेकी विधि है.

एक घड़ा ले उसमें पानी डालकर, तब उसमें दवाई डालके ढपनासे घड़ाको बन्द कर दे, मधुरी आंचसे

चुरावै, जब आधा रहजाय तब कोई दवाईका अर्क हो,इसीतरहसेबनाले,अर्क की यही विधि है शर्बत बनानेके वास्ते.

१४ शर्बत पानकी विधि.

पक्का पान दोसै मलकै रस निकाल ले और एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करले, खुराक एक तोलासे दो तोले तक, दिलको प्रसन्न करता है, शरीरको ताकत देता है.

१५ शर्वत इमली विधि.

आधा सेर इमलीको दो सेर पानीमें भिगोकर उस

को मलिके छानिके एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करल, खुराक सवातोला, उलटीको शान्त करता है-

१६ शर्बत चन्दनकी विधि.

चन्दनका चूरन एकसेर पांचसेर पानीमें अंगार पर चुरावै जब आधा रहजाय तब चारसेर कन्दमें मिलाकर चासनी करल, खुराक एक तोला पित्तज्वर-रको दूर करताहै, उलटी शान्त करता है, भूख लगा-ताहे और तमाम शरीरको खुश करता है.

मृगीकी दवाई.

दोहा—बच तुरशानी शहद सँग, दोय टंक जो देय ॥
मृगी रोग तुरतै हरै, दूध भात पथ लेय ॥
ब्रह्मणी वच कुट संगसों, शंखाहोली लेय ॥
गऊघीवमें पीजिये, मृगी व्याधि क्षय होय ॥
मिरच डिठोहारिमें धरै, दिन इक्किस परिमान ॥
जलसों नाश ज्ञु लीजिये, होय मृगीकी हान ॥

परमाकी दवाई.

शंखाहोलि, इलाइची, शिलाजीत पुनि लेय ॥
सब परमोंका दुख हरै, प्रात समय जो सेय ॥
रस गिलोये निकालके, पीजै शहद मिलाय ॥
सब परमाका दुख हरै, प्रात समय जो खाय ॥

बवासीरकी दवाई.

दोहा—दुद्धी बहि जो अ निके, लौंग संगमें खाय ॥
वा घृतसँग जो पीजिय, खून बवेशी जाय ॥

बूटीका गुण.

दोहा—पातकसौंजी विष हरै, जडसे सांप डराय ॥
फलसे बाघ डरात हैं, फूल रतौंधी जाय ॥

बांझिनी स्त्रीका लक्षण.

दोहा—मुखडब्बा कुचपुहुप सम, कटिविशाल जो होय ॥
कवि कोविद दोऊ कहैं, होय वांझिनी सोय ।

दरिद्रिनी स्त्रीका लक्षण.

दोहा—जाकीनाभिगँभीरअति, श्रवणहोइँ जस शूप ।
सो तिय होय दरिद्रिणी, जो पावै पति भूप ॥

अथ गुंजाप्रकाशविधि.

दोहा—गुंजाकी गति कहत हौं, कौतुक चरित अपार ॥
गिरिजासों शिव यों कह्यो, सब कल्पनको सार ॥
भूत रु डाकिनि प्रेत गण, यक्ष वीर वैताल ॥
इक गुंजाके कल्पमें, कोटिन माया जाल ॥
बहुत चरित हैं कहौं कुछ, सकल कल्पकी खानि ॥
जो चाहै सोई करै, साधनके वरदानि ।
अब याके साधन करै, यथायोग उपदेश ।
जो साधै सो सिद्धि है, कसर नहीं लवलेश ।

पुष्य होय आदित्यको, जो लीजै यह मूल ॥
शुक्रवार की रोहिणी, गहन होय अनुकूल ॥
कृष्णपक्षकी अष्टमी, हस्त नक्षत्र जु होय ॥
अर्धरात्रिको जायके, मनकी शङ्का खोय ॥
धूप दी पदे लायकर, धरै दूधमें धोय ॥
जो काहू नर नारिके, विषधर काटे होय ॥
विष उतरे सब तुरतही, जानि पिलावे सोय ॥
जो घिसिकर मुखमें तबै, सभामध्य नर जाय ॥
हाँजी हाँजी सब कहै, जोइ कहै सो थाय ॥
चतुरलोग या विधि करैं, कबहुँ न आवे आँच ॥
एक जड़ीके युक्त सों, सबै नचावै नाच ॥
तांबा माहिं मढ़ायकै, कटिमें बाँधे कोय ॥
नवें मास वहि नारिके, निश्चय बालक होय ॥
काजलसों घिसि आंजिये, मोहै सब संसार ॥
जो माँगे वह वस्तु कछु, सो लावे तत्कार ॥
जो घिसि पयके योगसों, लेपन कीजै अंग ॥
भूत प्रेत अरु यक्ष गण, लगे फिरैं सब संग ॥
घिसिके रुई भिगोयकर, बाती करे बनाय ॥
फेर भिगोवे तेलसों, दीपक धरे जलाय ॥
होय अचंभो शयन तब- मृत्युक सभा देखाय ॥
मनमें ले स्तुति करे, सबही पूजे पाय ॥

जो घिसिये वह घीवसों, लेप शरीर बनाय ॥
केसाही होवे हठी, लावै प्रीत लगाय॥
मेष मूत्रसों रगरिकै, जो लेपै द्वौ हाथ ॥
कहै दूरकी बात वह, सब मानो है साथ ॥
गोरोचनको लौंगसे, लिखिये जाको नाम ॥
मित्र होय वह तुर्तही, नहिं वैरीको काम ॥
बेल अर्कसों युक्तकर, अञ्जन लेय बनाय ॥
भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखतही भगिजाय ॥
खांड संग जो रगरिकै, तलवातले लगाय ॥
आंखि मिजतकै पलकमें, सहस कोस उड़िजाय ॥
जो घिस आंजै पीकसों, जा दिश नजर कराय ॥
व्याधि परेसो छुट नहीं, काटिन करै उपाय ॥
जो गुलाबसों रगरिकै, नाभी लेप कराय ॥
त्यहि शरीर घड़ि चारमें, जागे सहज उपाय ॥
फिरि वाको ले तेलसों, जो घिसि आंजै कोय ॥
धन देखे पातालका, दैवी दृष्टी होय ॥
जो वाघिनिके घीवसों, घिसि चुपरे सब देह ॥
तीर तुपक लागै नहीं, ज्यों बरसे घन मेह ॥
घिसिकै तिलके तेलमें, मर्दन करै शरीर ॥
देखे सब संसारको, महावीर रणधीर ॥
जो अलसीके तेलमें, घिसिये शहद मिलाय ॥

कूटकाट लेपन करै, कंचन तनु ह्वै जाय ॥
जो मुर्गीके बीटसों, अंधा आंजे कोय ॥
सात दिना जो आंजही, दृष्टि चौगुनी होय ॥
कस्तूरीसों आँजिये, प्रातसमय लवलाय ॥
नृत्य लखै संसारकी, काल रूप दरशाय ॥
गंधक संग मिलायके, बीसों नखन लगाय ॥
जो नर होय कुमारगी, देखत वश ह्वै जाय ॥
जो आँजै निज मूत्रसों, खुले रागिनी राग ॥
जो पीवै घिसि गाभमें, मिटे देहका दाग ॥
गंगाजलसों आंजिये, दोनों नयनों माह ॥
वर्षा वर्षै पुष्पकी, होय अचंभो नाह ॥

यंत्र १.

यह यंत्र गोरोचनसों भोजपत्रपर लिखै फिर गूगुल की धूप देकर कंठमें बांधै, जिस औरतका लड़का जीता नहो तो जीवै और होना नहीं होय तो होवै. यंत्र लिखनेकी विधि-

शंकरम त शंकरपित

१०	१२	४	९
१	३	१८	२३
१६	१५	९	४
२	७	४	१

अच्छे दिन और अच्छे नक्षत्रमें लिखै और जिस जगह किसी चीजपर लिखनेका प्रमाण नहीं है वहां भोजपत्रपर लिखे और जहां कलम नहीं लिखी है, वहां

अनारकी कलमसों लिखना चाहिये. और जो किसी चीजसे लिखनेको न लिखा हो तो देवी चंदनसे लिखना चाहिये. प्रथम स्नान करिके कोई होवै, यंत्र फूल और नैवेद्य देय करके उत्तर मुँह होकर लिखना.

यंत्र २.

यह यंत्र शीघ्र काम पूर्ण करनेके वास्ते है, जो कोई

मं. ४	ह्राँ १	ॐ ८
मह:५	ह्रीं २	श्रीं. ९
म: ६	श्रीं ३	ह्रीं. ८

अपने संकेत पड़े परलिखै और दहिने हाथपर बांधै तो अवश्यं काम सिद्धि

यंत्र ३.

स: ७ ४	स: १	स: ३ ८
स: ९	२ स:	स: ५
स: ८	स: ६	स: ४

होय यह यंत्र एतवारके लिख दहिने हाथमें रोज तो चौथियाज्वर छूटिबांधै जाय पीछे जो कुछ बनि परै सो दान देय जरूर

यंत्र ४.

यह यंत्र सब काम सिद्ध करनेके वास्ते है इसको भोजःपत्रपर अष्टगंधसे लिखै.

और धूप दीप दे. पूजा करिके अपने पास रक्खै तो सब काम सिद्ध होवै सही.
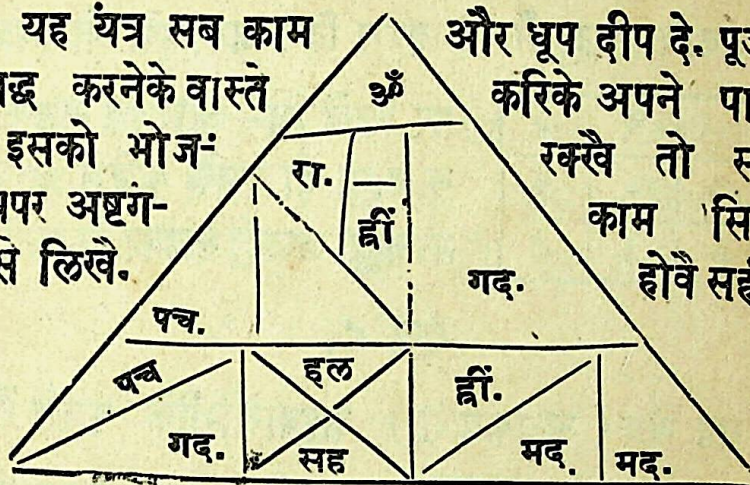
यन्त्र ५.

इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर व धूप देकर गलेमें बाँधे नो किसी तरहका भय न होवै, भूत नहीं लगै, जो लगा होय तो छूटजाय, इस यंत्रको जगाइ करके लिखै.

१४	७	४	३
६	३	६	९
७	३	४	१४
४	१४	३	७

यंत्र ६.

७	२	८
८	६	४
३	८	९

यह यंत्र जूडीके वास्ते है, इसको भोजपत्रपर लिखकर जगायकेगलेमें बांधैतोजूडीजायसही.

यंत्र ७.

यह यंत्र पंद्रहवाँ है- बहुत दिन जगायके भोजपत्र

२	९	४
७	५	३
६	१	८

पर लिखै जिस औरतके लड़का न होता हो उसके कटिमें बांधे तो बहुत जलदी लडका हो जावे.

यंत्र ८.

यह यंत्र (अधकपारी) आधाशीशीके वास्ते है,

एतवारको वा मंगलको लिखकर बांधे तो अध-कपारी जाय.

यंत्र ९.
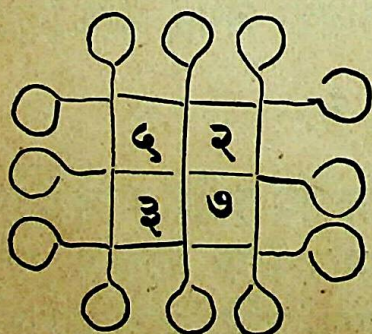
यह यंत्र पीपरके पत्तापर रविवारको लिखकर हाथमें बाँधे तो अतराज्वर जाय.

यंत्र १०.

यह यंत्र अष्टगंधसे जिसका नाम लिखकर जाप करै वह मान करै.

यंत्र ११.

इस यंत्रको अष्टगंधसों भोजपत्रपर लिखकर

११७	१२४	२	७
६	३	१२१	१२०
११३	११८	८	१
४	५	११९	१२२

धूप दीप देकर पगियामें राखै तो राजा प्रीति करै और संसारमें मान होय.

यंत्र १२.

इह यत्र धतूरके रससों रविदिन शत्रुका नाम लिखै तो शत्रु भागि जाय.

यंत्र १३.
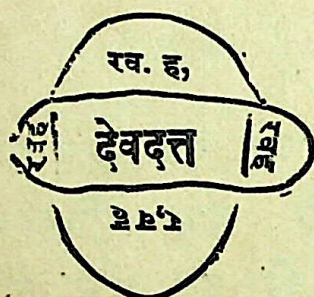
यह यत्र नीबीके रससों कौवाके परसों लिखै शत्रु दूर होय.

यंत्र १४.

६३	४२
३११	७०

यह यंत्र स्याहीसों लिखक माथेमें बाँधै तो आधाशीशी दू हो सही.

यंत्र १५.
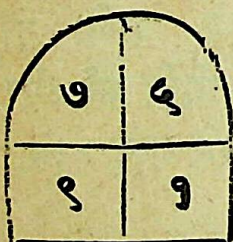
यह यंत्र कागजपर स्याहीसों रा दिन लिखै और सूर्यके सामने पानी धोय कर पीवै तो वायगोला जाय

यंत्र १६.

भ.	ज	व.
क्र	ग	जः
छः	छः	ढः

यह यंत्र कानकी पीड़ा वास्ते है, लिखकर कानमें बाँ तो पीडा दूर होय.

यंत्र १७.

यह यंत्र कागजपर बुधके दिन हरदीसे लिखकर जो लड़का बहुत रोता होय उसके गलेमें बाँधै तो रोवै नहीं और चुप होय.

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३९
९३	७	४०	१
२०	१३४	९	१४७

यंत्र १८.

यह यंत्र स्याहीसे कागजपर लिखैं जिसकी आँख (९७८२०६०[illegible]) आवती होय उसको दखावै तो आंखैं न उठैं.

यंत्र १९.

३७१००३ ७१३७१००
३७७००७७००३७००
३७७०० देवदत्त. ३००

यह यंत्र पीपरके पत्तापर लिखैं जिसके चुरैल लगी होय, उसके गलेमें गूगलकी धूप देके बाँधे तो छूटिजाय.

यंत्र २०.

यह यंत्र कोरे खपड़ापर लिखे और जिसके प्रेत लगा होय उस आदमीका नाम लिखे पीछे रोगीको देखाय के अग्निमें जराय दे तो प्रेत भाग.
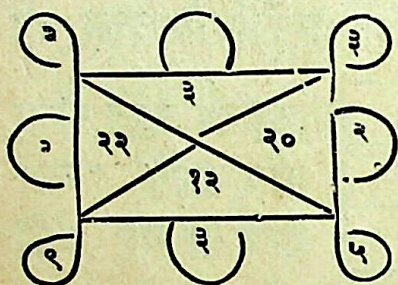
यंत्र २१.

५५९	१७	३६९
६५५	१३८१	४९३
७७२	१२७७	१५२१
८८१	९६६	१००१

यह यंत्र रविदिन लिखके गलेमें बाँधे तो ताप जाय.

यंत्र २२.

३०	१९	८९
७९	५९	३९
१९	९९	४९

यह यंत्र गुड़गुड़ीके वास्ते है पीपरके पत्तापर लिखिके दहने हाथमें बाँधे तो गुड़गुड़ी दूर होय.

यत्र २३.
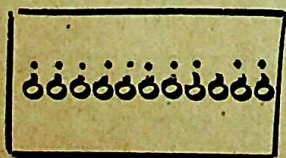
यह यंत्र कैसो संकट होय तो अष्टगंधसों भोजपत्र पर लिखिके गलेमें धूप देके बाँधे संकटसे छूटै सही.

०ं०ं०ं०ं०ं०ं०ं०ं०ं०ं०ं०ं

यंत्र २४.
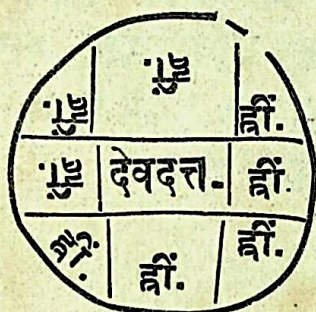
यह यंत्र नजरके वास्ते है. कागजपर अष्टगंधसे लिखकर गलेमें बाँधै तो नजंर दूर होय.

यंत्र २५.

यह यंत्र कागजपर लिखके नई रुईमें लपेटके चमेलीके तेलमें डुबावै जिस आदमीके चुरैल लगी होय उस आदमीको यंत्र जरायके धुएँका नास देवै, तो चुरैल भागिजाय.
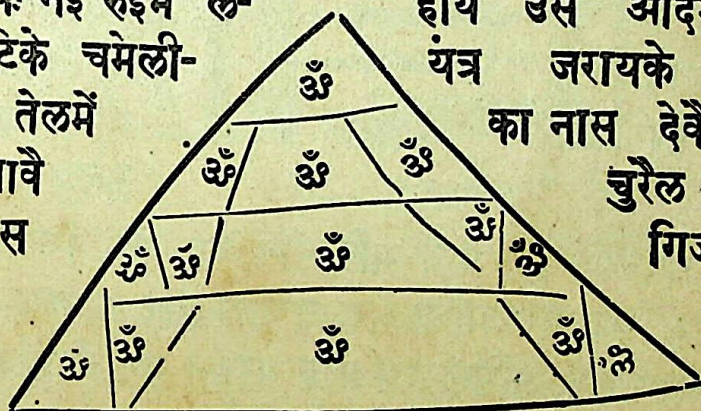
यंत्र २६.

चक्रव्यूह.

यह चक्रव्यूह कागजपर लिखके जिस स्त्रीके लड़का होनेका दिन पूरा भया होवै और वह स्त्री कष्टमें होय.

लडका होता न होय तो इस चक्रव्यूहको बनाकर दिखावै तो उस स्त्रीके तुर्त लडका होवै और कष्ट सब दूर होय और एक छटांक गायके दूधमें पावभर पानी मिलाके पियावै तो तुर्त लडका होय.

यंत्र २७.
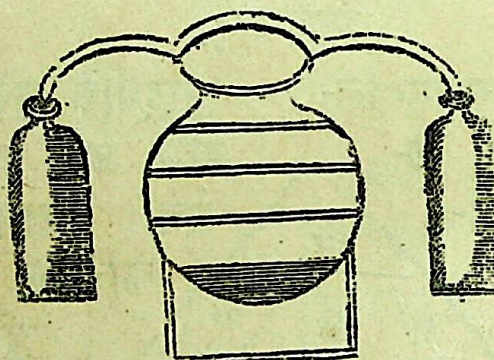
यह यंत्र डबल नलीका है इसमें बनानेकी दवाई लिखते हैं, गुलाब के फूल आधा सेर और केवडाके फूल पाव भरि, चमेलीके फूल पाव भरि, सौंफ एक सेर, चिरैता एक सेर. कुलंजन आधा सेर, बच पावभर, सनायकी पत्ती आधासेर, अमिलतास पाव भर इन सब चीजोंको मिलाकर घडामें डालै और डेढ मन पानी डालै, सेबेरे भट्टीपर चढ़ावै. मघरी आंचसों अर्क खींचै, बारह बजेतक समाप्त हो तब अर्क निकाल कर शीशीमें रक्खै, जिसको जुलाब देना हो उसको पाव २ दो दिन पिलावै तब जुलाब दे तौ शरीर निरोग होय और जुलाब बहुत अत्यु-

त्तम होय, जिसका कोठा शर्द होय उसको गर्म करै और जिसका गर्म होय उसको नर्म करै.

यंत्र २८.
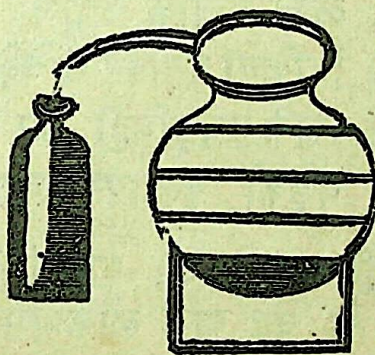
यह यंत्र एक नलीका है कि-सी तरहका अर्क खींचना हो तो इसी तरहसे खींचै धनियाँ पाव भरकासनीका बीज पावभर, पुदीना पाव भर, गुलाबके फूल पावभर, सौंफ पावभर, शक्कर एक सेर ये सब एक घड़ामें डालके शामको एक मन पानी ड़ालके रखदे, सबेरे अग्नि जरावै मधुरी आंच दे, अर्क निकलै सो शीशी रखदे ॥ गुणं—करेजेकी गर्मीको तर करता है, उल-टीको रोकता है, इन्द्रीको साफ कर देताहै, गर्म मिजा-जवालेको बहुत फायदा करता है, भूँख लगाता है, सब रोगोंको हरता है, जो किसी दवाईका अर्क खींचना होतो डबल नली या एक नलीसे खींच लेवे.

यंत्र २९.

इस यंत्रको विद्याधर कहते हैं, जो किसी धातुका
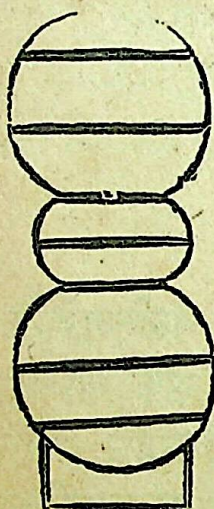
या कोई दवाईका पारा निकालना होय तो इसी यंत्रसे निकालै, सिंगरफ- रसकपूर और सेंदुर जिस धातुसे पारा निकलता है उससे निकालै सिंगरफ २तोला लेकर नीबीके पत्तामें खल करै, तब टिकिया बनाकर नीचेके घड़ाकी पेंदीमें रखके कपड़मिट्टी कर सुखायके उस घड़ेको चूल्हापर रखकर नीचे अग्नि जरावै और सिंगरफसे जो पारा निकलकर ऊपरके घडामें लगै तो वह पारा लोकप्रसिद्ध होय और आधाचावल पानके साथ खाय तो नामर्द मर्द होय.

यंत्र ३०.
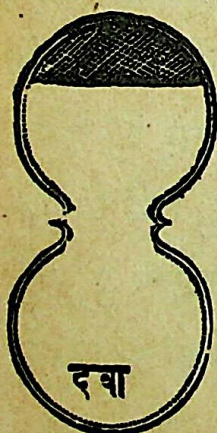
यह डमरू यंत्र है, जो किसी धातुका जौहर उड़ाना हो तो वह दवाई खल करके नीचेकोहण्डीमें रक्खे और अग्नि६ घण्टा लगावै जब जौहर उड़के ऊपरकी हण्डीमें लगै तो सब काममें बैपरै. अब इसके बनानेकी और एक विधि लिखते हैं, अँत्रामार गँधकको चूर्ण करके जौहर उड़ावै तो सब काममें बैपरे.

यंत्र ३१.

इसको स्वेदनयन्त्र कहते हैं. एक बड़ा घड़ा लेकर उसमें आधा घड़ा पानी डालके तब आधा सेर गंधापिरोजा लेकर गोदन दुद्धीके लुगदीमें रखकर कपड़ामें पोटरी बाँधिके रस्सीमें बांधकर घड़ामें लटकावे, और घड़ाके ऊपर एक छोटी हंडी रखकर कपड़मिट्टी करके तब अग्नि जरावे. ६ घण्टा आंच दे तो सब गंधापिरोजा घड़ाकी पेंदीमें चूचूकर गिरै सो गंधापिरोजा फिर इसी विधिमे चार दफे कपड़मिट्टी करके चुआवे तो सब काममें बेपरै, सुजाक जो कि पीब बहता हो सो सात दिनमें अच्छा होय, मिश्री ६ मासे, इलायची ६ मासे, गंधापिरोजा ६ मासे ये सब दवा खाय १६ दिन और गायका दूध आधासेर पीवै तो परमा, पथरी सब रोग दूरि होयँ और यह गंधापिरोजा सब रोगपर देय और इसी विधिसे गंधपिरोजाका सत निकाला जाता है.
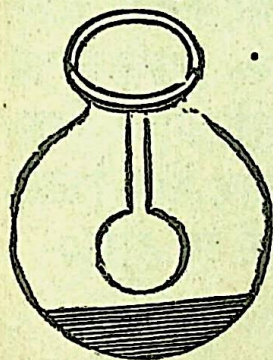
यंत्र ३२.

इस यन्त्रको वालुका यन्त्र कहते हैं. इस यन्त्रमें ऐसा

करे कि लोहेकी कराही लेकर उसमें वालू भरके वालूके बीचमें सीसी रखके मधुरीआंच दे, जितना रसका परिमाण होय तितना आँच दे कोई भी रस होय.
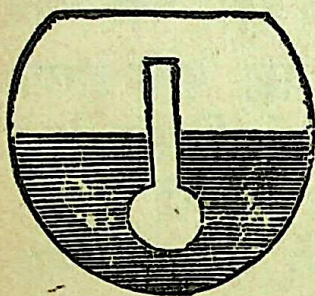
यंत्र ३३.

यह गौरीयन्त्र है कोई रस होय तो इसी यन्त्रमें सिद्ध कर लेय.
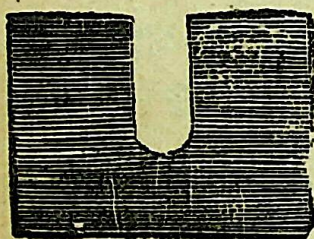
यंत्र ३४.

इसको चक्रयन्त्र कहते हैं, इस यन्त्रमें पारा सिद्ध होता है, बीचके घरमें पारा बाहरके घरमें उपरी इस विधिसे भट्ठी लगावे.

यंत्र ३५.

इस यंत्रको जलयंत्र कहते हैं. अब तेजाब उतरनेकी विधि लिखते हैं, फिटकरी पावभर, नौसादर पावभर, चौकिया सोहागा पावभर, कलमीसोरा पावभर, नीलाथोथा पावभर, आंवलासारगंधक पावभर सबको एकमें मिलायके खल करै तब नीचेकी हंडीकी पेंदीमें
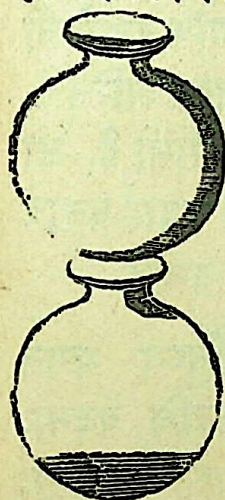
मिट्टी धरे और मिट्टीके ऊपर गिलास रक्खै और घड़ाके अंदर दवाई रक्खै और दूसरे घड़ामें पानी भरके दवावाले घड़ाके ऊपर रक्खै, मधुरी आंच दे, जब ऊपरके घड़ाका पानी गर्म होजाय तो सँभारके तेजाब निकालले, अब इसका गुण लिखते हैं, बरबट, वायगोला, तापतिल्ली, कछुई, जाकूट, पिलही, उदररोग सब दूर होयँ, खुराक ९ मासे, ६ तोल पानी डालके पीवै.

यंत्र ३६.

इस यंत्रको गजपुट बोलते हैं, एक गज लंबा, एक गज चौड़ा, एक गज गहिरा, इसके बीचमें दवाईका कपड़मिट रक्खे, उसके चारों तरफ बाना हुआ कंडा

रखकर अग्नि जरावै और इसी मंत्रसे कोई मंत्र होय अग्नि जरावै (मंत्र) खाक फूंके तो मंत्र स्यों ह्रीं क्रीं घीं गुरुका शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ऊं ऊं कर बीज मंत्र इति.
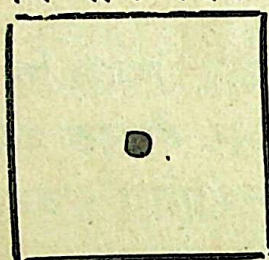
यन्त्र ३७.

यह शीशी मृगांक बनानेकी है, इसके चारों तरफ अग्नि है, बीचमें कांचकी सीसी है, जो मृगांकके सदृश दवाई बनावे तो इसी तरहसे बनावे.

इति श्रीमुन्शी भगवानप्रसाद शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यकरसराजमहोदधि वंदना, भूमिका, रोगविचार, नाड़ीपरीक्षा, शरीरकी चेष्टा, निरोग होनेका वर्णन, स्वप्न विचार, दूतपरीक्षा, असाध्यलक्षण, मलज्वर, आठोंज्वरका लक्षण, दवा, कफज्वर शीतज्वर कामज्वर रक्तज्वर लक्षण, उपाय, सर्वज्वर दूर होनेका लक्षण, वादी बिगड़का लक्षण, खून बिगड़का लक्षण, वात पित्त मिश्रित होनेका लक्षण, वातका लक्षण और कफ खाँसीका लक्षण, मन्दाग्नि और संग्रहणीका लक्षण, खूनी बवासीर और दाहका

लक्षण अठारह तरहके शर्बत बनानेकी विधि और गुण मृगींकी दवाई, परमाकी दवाई, बवासीरकी दवाई, बूटीका गुण और बांझनी, दरिद्रिनी स्त्रीका लक्षण गुंजा प्रकाशकी वत्तिम विधि और गुण. छब्बीस प्रकारके यंत्र और अंके खींचने और रससिद्ध करनेकी विधि नाम प्रथमखंड समाप्त॥ १ ॥

यह यंत्र शिरसे पाँव तक शरीरकी हड्डीका है.

१ सिंघियाविष शोधन.
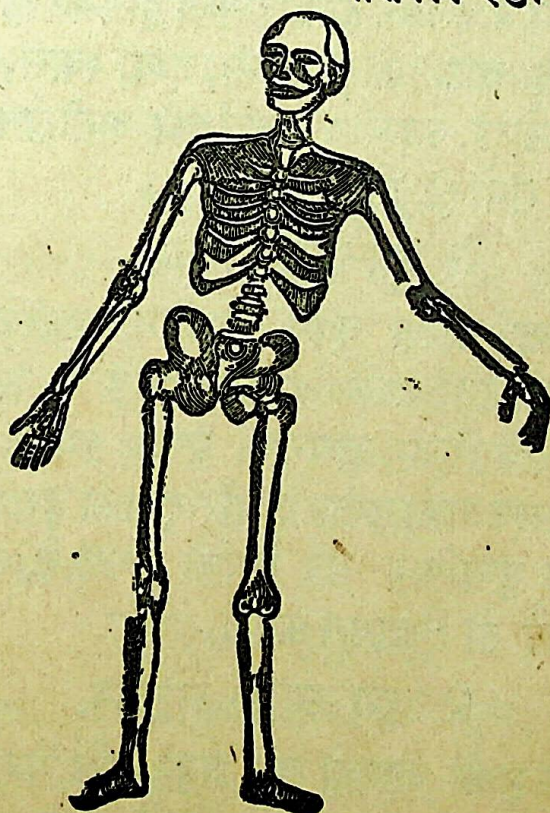
दो तोले सिंघिया विष लकर भैंसाके गोबरमें डारिके दो घंटे चुरावै, तब सिंघियाको निकाल कर सींक गोदे जोकि सींक उसमें धँसजाय तो उसको सफाकरके दूधमें चुरावै तो सब काममें बेपरै.

२ अथ विषका गुण.

रसायन है,बलकरै है, त्रिदोषको दूरि करै है, वात शीत, पित्त, कफ, कोढ़, खांसी, दमा, श्वास, प्लीहा यकृत्, कंठोदर, उदररोग इत्यादिको अनोपान मुवा फिक सब रोगोंको हरै.

३ कुचिला शोधन.

कुचिला गऊके मूत्रमें दशदिन डारिके रक्खै तब उसको निकालके छीलके टुकडे २ काटै फि दूधमें चुरावै शुद्ध होयगा (गुण) गर्म है, वातको हरता है, लकवाको हरता है,और दमाको दूर करता है अनोपान मुवाफिक सब रोगको हरता है, जो जड़ घीमें चुरावै तो निहायत फायदा देवैगा.

४ अथ धतूरा शोधन.

गऊके मूत्रमें धतूरको चार घड़ी रक्खै फिर निकाल कर धो डाले तब सब काममें बेपरै (गुण) गर्म है

अग्निको बढ़ाता और नसा करता है,वमनकारी है,ज्वर आदि सब रोगोंको दूर करता है.

५ जमालगोटा शोधन.

जमालगोटेको भैंसाके गोबरमें डारिके छः घंटे चुरावै, तब फिर उसकी छालको निकाल कर जीभी निकालके नींबूके रसमें दो दिन खल करै, तब सब काममें बेपरै (गुण) पित्त, कफको हरता है, और दस्त लाता है, उदर रोगको प्लीहा बीछूको सर्वविषको व सब रोगको दूर करता है.

६ भेलावाँ शोधन.

भेलावाँको पानीमें डालकर एक दिन चुरावै, फिर उसका टुकड़ा २ करके दूधमें चुरावै, फिर उसको निकालके एक तोला सोंठि और अजवाइन चार तोला डाल खूब खल करे तो सब काममें बैपरै (गुण) फोड़ा, खाज,खांसी, दमा इत्यादिक सब असाध्य रोग कोढ़रोगको हरै.

७ गुञ्जा शोधन.

गुंजाको कांजीमें चुरावै तीन घंटे (गुण) हल्की है शीतल है, खांसी, श्वास,कोढ़,खुजली, कफ, पित्त सब विकारको दूर करती है.

८ आक शोधन.

आकको खल करके शुद्ध हुआ, (गुण) वादी, कोढ़, खुजली, तापतिल्ली, गोला, बवासीर, यकृत, कंठादर, कृमिरोग सब रोगको हरै.

९ कलियारी शोधन.

कलियारीके टुकड़े २ करके एक दिन गोमूत्रमें भिगोनेसे शुद्ध हो,(गुण) दस्त लाता है,कुष्ठ, बवासीर, यकृत, कफोदर और कृमिरोगको दूर करता है.

१० कनेर शोधन.

कनेरके टुकडे २ करके गायके दूधमें डोलायंत्रसे चुरावै, शुद्ध हुआ (गुण) गर्म है, नेत्रको गुण करता है कोढ़ जरन खुजली सब रोगको दूर करता है.

विष सेवनकी विधि.

मिश्री, दूध, शहद, घृत, चावल,गेहूकी रोटी इतना सेवन करै, आचारपनसे रहै.

प्रमाण खानेका.

एक बजरीसे दो बजरी तक जैसा बल देखे तैसा रोगीको दे तो सब रोगोंको अनुपान मुवाफिक हरै.

अथ बछनागकी शांति.

हींग्वण वृक्षके रसमें मिश्री मिलाकर पिये तो विष शांति होय.

२ अथ धतूरके विषकी शांति.

बैंगनके बीजोंका रस पीनेसे धतूरका विष शांत होय. तथा मिश्री दूध पीनेसे शांत होय.

३ अथ भिलावेके विषकी शांति.

चौलाईका रस मक्खनमें मिलाकर जहाँ भिलावेकी सूजन होवे, उस जगह लगानेसे भिलावेका विष शांत होय.

४ अथ भांगके विषकी शांति.

सोंठिके चूर्णको गायके दहीके साथ सेवन करनेसे भांगका विष शांत होय.

५ अथ गुंजाके विषकी शांति.

चौलाईके रसमें मिश्री मिलाय पीनेसे और ऊपर दूध पीनेसे गुंजाका विष शांत होय.

६ अथ कनेरके विषकी शांति.

मिश्रीमें भैंसका दही मिलायके पीनेसे कनेरका विष शांत होय.

७ अथ थूहरके विषकी शांति.

शीतल जलमें मिश्री मिलाय पीनेसे थूहरका विष शांत होय.

८ अथ जयपालके विषकी शांति.

धनियाँ, मिश्री, दही तीनों मिलाय पीनेसे जयपालका विष शांत होय.

९ अथ अफीमके विषकी शांति.

बड़ी कटेरीके रसमें दूध मिलाय पीनेसे अफीमका विष शांत होय.

१० अथ शंखियाके विषकी शांति.

घी गर्म करि पीनेसे तथा दूध, मिश्री मिलाइके पीनेसे शंखियाका विष शांत होय.

जो बहुत विष खालिया होय तो जुलाब देवै उलटा करावै. इति विषकी शांति समाप्त.

अथ हरताल मारनविधि.

१ एक तोला हरताल, इन्द्रायणके एक फलमें रखके चार कपड़मिट्टी करके सुखाय डाले, फिर सवासेर बिनुवा कंडोंमें फूँक दे, इसी तरहसे इक्कीस इन्द्रायनमें फूँके तो हरताल पानी सोखन (गुण) कुष्ठरोग व अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करता है.

दूसरी विधि.

हरताल दो तोला लेके घीकुवारिके रसमें दो दिन खल करै, तब गोला बाँधिके सुखावै, फिर सनईके बिषयों की लुगदीमें रख कपड़मिट्टी करिके तीन सेर कंडोंमें फूँक दे (गुण) कोढ़को दूर करता है, इसका गुण वर्णने योग्य नहीं है, अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करता है.

अबरख मारनेकी दूसरी विधि.

अबरख लेकरके कूटै तब मूलीके रसमें १६ दिन रक्खै, फिर गुरमें खल करके फूंक दे, फिर मूलीके रसमें १६ दिन रक्खै, फिर हुरहुरके रसमें १६ दिन रक्खै, फिर कलमीसोरामें खल करै, फिर गुरमें १६ दिन खल करै तब कपड़मिट करिके फूँक दे, इसी तरह चार दफे फूँकै, तो सब रोग हरै अनोपान मुवाफिक.

शंखियामारन विधि.

शंखिया एक तोला लेकर मुरईकी राख आधा सेर, एक हंडी लेकर हंडीके अन्दर आधी राख रक्खै, तब शंखिया रक्खै और जो आधी राख है, उससे ढांक दे फिर हाथसे दबा दे, हंडीके ऊपर ढकना रखकर कपड़मिट करके चूल्हे पर रखके एक दिन चिराग-की टम सम आँच दे, तब शुद्ध होय, खुराक आधा चावल श्वास, कास, दमा, शीतज्वर, पित्तज्वर, अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै.

दूसरी विधि.

पापडखार चार तोले, शंखिया एक तोला लेकर मिट्टीकी एक ढकनी लेकर उसमें आधा पापडखार रखना, तब शंखिया रखना फिर दूसरे ढकनेसे ढांक देना, कपड़मिट करके सुखायके आधामन गोबरीमें फूँक दे, फिर रोगीको देख कर बल विचारके दे, आधा-

चावलसे एक चावल तक ये दवा सर्व प्रकारके रोग-
को दूर करती है, अनोपान मिश्री, दूध, घी.

अथ शिलाजीत शोधन.

त्रिफलाके रसमें एक दिन घोटै, फिर एकदिन दूध-
में घोटै तो शिलाजीत शुद्ध होय, खुराक ६ मासे,
आधासेर दूधके साथ जो मनुष्य एक महीना सेवै तो
शरीर पुष्ट होय, बल होय,वीर्य बढै अनोपान मुवाफिक
सब रोग हरै,शिलाजीतका गुण कुछ वर्णने योग्य नहीं.

अथ मैनशिल शोधन.

मैनशिल अगस्त्यके रसमें घोटै, अथवा अदरखके
रसमें घोटै, शुद्ध होय तो सब काममें बैपरै (गुण) कहु-
आ है,विषको हरै, श्वास, कास आदिसब रोगोंको हरै.

अथ रसकपूर मारनविधि.

एक तोला रसकपूर लेके बिजौरा नींबूके बीचमें
रखके मुलतानी मिट्टीसे कपड़मिट करके सुखायके
एक सेर बीना हुआ कंडा लेकर उसमें रखके फूँकि दे
पीछे रस निकालके ताँबामें डाले,तो पानी सोखन होय.

अथ खपरिया शोधन.

खपरिया लाल करिके सात बेर नींबूके रसमें बुझावै
तो शुद्ध होय और सब काममें आवै.

अथ नीलाथोथा शोधन.

सिर्का अथवा अचारमें दो तोले नीलाथोथाको

एक पहर घोंटै फिर टिकरी करिकै आगमें फूँक दे तो सब रोगोंको गुणकारी है. खाज, कोढ़ और सम्पूर्ण आंखिके रोगोंको बहुत फायदा करता है.

अथ मोती मूँगा मारन विधि.

मोती, मूँगा कपड़ामें बांधिके एक घड़ामें आधा घड़ा इन्द्रायणका रस डालके उस घड़ेमें लटकाइ देइ पीछे एक पहर चुरावै तो शुद्ध होय, तब गजपुटमें फूँकि दे तो भस्म होय, सब कामोंमें आवै (गुण) आँखोंके रोग, खांसी, परमा, सुजाक, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र इन सबको दूर करता है, ठंढा है, सब रोगोंको नाश करता है, मोती मूँगाकी भस्मका गुण अगाध है.

अथ शंख, कौड़ी मारन.

शंख कौड़ी आठ दफे आगमें लाल करिकै नींबूके रसमें बुझावै तो शुद्ध होय. सब रोगपर देय, (गुण) श्वास, खांसी, आँखोंको गुणकारी है.

अथ गुञ्जा शोधन.

गुंजा लेकर एक पहर दूधमें चुरावै तब शुद्ध होय, सब काममें बैपरै, (गुण) आँखोंके रोगको दूर करै और शिरके बालोंको बढ़ावै, अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करै.

अथ फिटकरी, सोहागा मारन.

फिटकरी, सोहागा नींबूके रसमें खल करके गोला

बनायके गजपुटमें आँच देय तो सब रोग हरै, इसका गुण वर्णने योग्य नहीं है.

अथ समुद्रफेन शोधन.

समुद्रका फेन कागजी नींबूके रसमें डेढ़ पहर घोटै तो शुद्ध होय तब सब काममें बेपरै, (गुण) शीतल है. नेत्ररोग तथा कानोंकी पीड़ाको दूर करता है, और कानका बहना निश्चय दूर करता है.

अथ तांबा मारन.

शुद्ध तांबा दो तोले लेकर बनगोभीकी एक सेर लुगदीमें रख दे,फिर दश तोले मुलतानी मिट्टीसे कपड़मिट करके सुखावै तब दो मन बिनुआं कंडोंमें रखके फूँकि दे तो भस्म होय, सब रोगोंको हरै, पानी शोषण है, खुराक आधा चावलसे एक चावल तक.

अथ तांबा मारनकी दूसरी विधि.

सागबीब एक जातकी बूटी है, तांबा उसके पत्ताकी लुगदीमें रखके फूँकि दे,तो सुवर्ण होय इसमें कुछ संशय नहीं, जो फिर फूँके तो भस्म होय,जो कोई खावे उसकी सूर्यकी ज्योतिके समान ज्योति होय,लोकप्रसिद्ध होय. सब रोग नाश हों, सोनारस सेवै, तो बहुत दिन जीवै इसका गुण कुछ वर्णने योग्य नहीं है.

तांबा मारनेकी तीसरी विधि.

काकजंघा एक बूटी है, फागुनके महीनेमें पैदा

होती है, उस बूटीकी लुगदीमें एक तोला तांबा रखके कपड़मिट कर सुखायके गजपुटमें फूँकदे, तो भस्म बहुत ही अच्छा होय, खानेसे लोकप्रसिद्ध होय.

तांबाकी भस्म खानेके गुण.

छंद–तांबेकी खाक बनायके एक रती भर पानमें कोइभि खावै । पुष्ट शरीर बने अति सुन्दर सांझ सबेरे जो दूधसों पावै ॥ तज खान व पान अहार तजै सब दूध रु भात जो भोजन कीजै । बल होय शरीर बनै निश्चय पर सात दिना यह साधन कीजै ॥

अथ रूपा मारन विधि.

तितली जो गेहूँ चनाके खेतमें होती है उसके रसमें रूपा भिगोयं रक्खे, फिर उसी तितलीकी आधा सेर लुगदीमें एक तोला रूपा रखके कपड़मिट करके गजपुटमें आंच देय तो भस्म होय, खुराक एक चावल, अनुपान मुवाफिक सब रोग हरे.

रूपा मारनेकी दूसरी विधि.

सिक्का रुपइया अग्निमें लाल करिकै मेहँदीके रसमें आठ दफे बुछावै, तब मेहँदीकी पत्ती आधा सेर ले लुगदी करिकै बीचमें सिक्का रुपइया रखके कपड़मिट करके सुखायके दो गजपुट आंच दे, तो भस्म होय, खुराक एक चावलसे डेढ़ चावलतक.

रूपरस खानेका गुण.

छंद–रस रूप विधान कहूँ नर एक रतीभर पानमें ताहि जो खावे। कफ अरु कास औ खांस हरै सब लागती भूख अरु काम जगावै॥ अति गर्म जो शरदकी हानि करै सब अन्नके रोगको तुरत नशावै। ताहिते जानिकरै यह साधन निष्ठ शरीरको पुष्ट करावै॥

अथ सोना मारनविधि.

कामदेव झमकोइया एक बूटी है उसकी लुगदीमें एक तोला शुद्ध सोना रख कपडमिट कर सुखायके तीन गजपुट आंच दे, तो भस्म होय, लोकप्रसिद्ध होय, खुराक आधा चावल, अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै.

अथ सोना मारन दूसरी विधि.

एक सेर कचनारके पत्तोंके बीचमें आधा तोला सोना रखके गोला बनाय कपड़मिट करिके सुखाके दो गजपुट आंच दे, तो बहुत उत्तम रस बनै.

गुण ॥ छन्द ॥

सोनेकी खाक बनायके सुन्दर चावल एक चिरोंजीमें खावै। पुष्ट शरीर बढै अति बीरज लागति भूख रु काम जगावै॥ श्वास औ कास कफोदर ओदर आदि जलंधर रोग नशावै। रोग हरै सबही तनुके अनोपान मुवाफिक जो कोइ पावै॥

अथ लोहा मारन विधि.

अच्छा स्वच्छ लोहा लेकर रेतै, तब अनारका रस एक सेर और चार तोला लोहाका रेत पहले एक बरतनमें रस डालदे, फिर इसमें रेत डाल दे पंद्रह दिन धूपमें रक्खे तब आधामन गोबरीमें फूँक दे तो बहुत उत्तम लोहासार रस बनै अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै.

अथ पोलाद मारनेकी दूसरी विधि.

अच्छा स्वच्छ पोलाद रेतायके धरै फिर ब्राह्मी एक बूटी है उस बूटीके पत्ताकी लुगदीमें रक्खै, पोलाद बीचमें रखिके गोला बनाय कपड़मिट कर सुखाय गजपुट आंच दे तो बैंगनी रंग रस बनै, सब कामको मातदिल है, आमवात, आंख और खांसी इन सब रोगोंको दूर करता है, अनोपान मुवाफिक सब रोगोंको हरण करता है.

अथ त्रिवंग मारन.

शुद्ध जस्ता एक तोला, शुद्ध राँगा एक तोला, शुद्ध सीसा एक तोला, लेकर तांबापर रखिके चूल्हपर रक्खै उसके नीचे अग्नि जरावै करछुलीसे चलाता जावै, और हरप्रियाका रस छोड़ता जावै तो आध घंटामें नौरंगीके बरन रस बनैगा अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै कैसो ज्वर नया पुराना होय तो एक चावल रस और दो मासे चिरैता,दो मासे पीपरी दोनों एकमें

मिलाके कूटिके कपड़छान करिके शहदके साथ सांझ सबेरे खाय तो सर्व प्रकारके रोग हरै इसमें कुछ सन्देह नहीं.

अथ वंगरसबनानेकी क्रिया.

शुद्ध राँगा चार तोले लेकर गलावै, नीचे अग्नि जलावे ऊपरसे अमलीके छाल व पीपरीके छाल दोनों-का चूर्ण करिकै छोड़ता जाय और राँगाको चलाता जाय तो चालीस मिनटमें भस्म होय बहुत उत्तम वंगरस बनै.

बंगरस खानेका गुण.

छंद—बंग सहाशिवको गुणदायक खाय नपंसक मर्द भये हैं। खातहि रोग हरै तनुके बल पुष्ट शरीर अतुल्य भये हैं। अनोपान मुवाफिक पान करै षट भाँति कि व्याधिन दूरि किये हैं। दिन सातमें काम सुधारनीके अत्यंत नपुंसक मर्द भये हैं.

अथ सीसा मारनविधि.

शुद्धसीसा लेकर तांबापर रख गलावै फिर केवड़ाके डंडासे चलाता जावै और घोटता जावै इसी हिकमतसे एक घंटामें भस्म होवै. फिर उस रसको घीकुवारके रसमें आठ पुट दे, फिर भंगराजकी आठ पुट दे फिर गोदनदुद्धीकी आठ पुट दे फिर गोला

बनाय कपड़मि टकरके गजपुट आंच दे तो बहुत अच्छा नागरस बनै लोक प्रसिद्ध होय अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै, खुराक एक रत्तीसे डेढ़रत्तीतक गर्ममिजाज-वालेको ठंढे अनोपानमें देवै इसी विधिसे सब रोगहरै.

अथ सिंगरिफ मारनविधि.

सिंगरिफ चार तोले लेकर नींबूके पत्तामें खल करके टीकरी बनायके गौरी यंत्रसे आंच दे जो पारा ऊपरकी हंडीमें उड़के लगे तो सब काममें बैपरै और सब रोग हरै.

अथ गंधक शोधन.

गंधकको घीमें गलावै दूधमें बुझावै इस तरह चार दफे गलावै बुझावै और दो दफ भंगराजके रसमें बुझावै तो शुद्ध होय सब काममें बैपरै (गुण) बीस प्रकारके परमाको दूर करै और खांसी, दमा वगैरह सब रोगों-को हरै और छःमहीने गंधक सेवनसे उसकी दृष्टी गिद्धके समान होय, फिर उसके मैलसे तांबेका सोना बनै इसमें कुछ संशय नहीं है, क्यों कर कि गंधक सब धातुको जलाता है.

अथ परा मारन विधि.

पारा लेकर सीसीमें डालके उसीमें मकोईका रस डालके एक दिन झकझोरै, तब निकालके गूलरके दुधमें खल करै, तब फिर हींगका मूसा बनाइके उसी

पाराको मूसामें रखकर मुलतानी मिट्टीके साथ कपड़-मिट करके सुखावे तब गजपुटमें फूंक दे और शीतल होय तब खानेको देय एक रत्ती भर पानमें खावे तो नामर्दको मर्द करै और कोढ़को शिरसे पैर तक निरोग करै और आचारपनसों रहै तो अजर अमर होय.

पुनि दूसरी विधि.

शुद्ध पारा लेवे और एक माटीकी परई अग्निमें लाल कर निकालके बाहर रक्खे फिर काले धतूरका रस निकालके परईमें डाल अग्निपर चढ़ावै-पीछे पारा डालै तब रस जरै और पारा भस्म होय सब रोगोंको हित है अनोपान बदलता जाय तो सब रोग हरै और खट्टा,मीठा,तीता ये सब चीज त्याग करै.

जस्ता मारन विधि.

शुद्ध जस्ता लेकर तांबापर गलावै और बथुईका रस छोड़ता जाय कलछुलीसे चलाता जाय, सवा-घंटामें भस्म होय सब काममें बेपरै (गुण) कड़ू है, हलका है, शीतल है, कफ और खाज दूर करता है अनोपान मुवाफिक सब रोग हरता है.

कीट मारन विधि.

पुरानी कीट आधा सेर लेके त्रिफलाके रसमें सात दफै लाल करिके बुझावै और नींबूके रसमें सात दफै

बुझाकर आंवलासारगंधकमें खल करके गोला बनायके गजपुटमें फूंक देवै, तो बहुत उत्तम रस बनै (गुण) पांडुरोग, प्लीहा, आमवात, उदररोग इत्यादिक सब रोगोंका हरै है.

मृगांक रस बनानेकी विधि.

पारा एक तोला, रांगा एक तोला, आंवलासार-गन्धक एक तोला, नौसादर एक तोला ये सब शुद्ध ले पहिले पारा और आंवलासारगन्धक, दोनोंको खल करै, पीछे आठ टोप रेड़ीका तेल खलमें डारि दे तब रांगा और नौसादर गलायके डारै, फिर दोदिन खल करै, पीछे एक अग्नि शीसी कांचकी ले मुलतानी मिट्टीकी सात कपड़मिट कर अच्छी तरहसे सुखावै फिर शीसीमें दवाई रखके कोइयाकी मट्टीमें शीसी रक्खै, मुख शीसीका खुला रक्खै अग्नि जगवै एक लोहेकी सींकसे पन्द्रह २ मिनटमें शीसीमें हिलावै पहिले काला धुआं निकलै, पीछे हरा निकलै, फिर पीला निकलै, फिर लाल निकलै, तब अग्नि आहिस्तेसे बुझादे, शीतल भयेपर सँभारिकै रस निकालिले, सोने-के वरन रस होय, सोनेके भाव रसका मोल होय, इसका गुण कुछ वर्णन योग्य नहीं है, जिस रोग पर देय सो रोग हरै, और जो नर सेवै अजर अमर होय.

अथ सब रसका उतार.

मिश्री, घृत, दूध खिलावे तो शांति होय.

अथ शीत पित्तके लक्षण.

शीतल पवनके अधिक लग जानेसे कफ और वायु अतिदुष्ट होकर पित्तके संग मिलकर रुधिरमें प्रविष्ट होजाते हैं, वा बाहर त्वचामें फैल जाते हैं. उसे शीतपित्त अर्थात् पित्ती उछलना कहते हैं, शरीरमें सूजन और चकोटा पर जाते हैं, और खाज होती है, कोप करिके खजुली सहित बहुतसे लाल २ चकत्ते शरीर भरमें पड़ जाते हैं.

शीत पित्तकी दवा.

गुड़, अजवाइन मिलाय १४ दिन खानेसे शीतपित्त नाश होय, अथवा सोधा पारा८भाग, कुचुला १०भाग, गन्धक सोधा १२ भाग, सुंठी १ भाग, मिर्च १ भाग, पीपल १ भाग, त्रिफला ३ भाग, भिलावां १भाग, चीता १ भाग, नागरमोथा १ भाग, बच १ भाग, रेणुके बीज १ भाग, असगन्ध १ भाग, मीठा तेलिया १ भाग, कूट १ भाग, पीपलामूल १ भाग, नागकेशर १ भाग, गुड़ २४ भाग इन्होंकी बेर समान गोली बनाय खानेसे शीतपित्त नाश होय.

अमृतादि काढ़ा.

गिलोय, हल्दी, नींब, धनियाँ, धमासा इन्होंका अलग अलग काढ़ा बनाय पीनेसे शीतपित्त नाश होय, और पहिले शीतपित्तरोगीको सात रोज मुन्जिस पिलावै तब दवा करै,

अथ अम्लपित्तका लक्षण.

अन्न पचै नहीं कडुई, खट्टी डकारें आवैं, शरीर भारी रहै, हिया और कंठमें दाह होय, भोजनमें अरुचि हो, ये लक्षण अम्लपित्तके जानो.

अम्लपित्तकी दवा.

गिलोय, चीता, नींब, कडूपरवर इन्होंका काढ़ा बनाय शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त नाश होय.

मधु पीपली योग.

पीपलका चूर्ण करि शहदमें मिलाय चाटनेसे अम्लपित्त दूर होय.

पुनः अम्लपित्तकी दवा.

चिरायता, नींब, त्रिफला, कडूपरवर. बाँसा, गिलोय. पित्तपापड़ा, भाँगरा इन्होंका काढ़ा बनाय शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त नाश होय.

काढ़ा.

कटैली, गिलोय, वांसा इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसें श्वास, कास, ज्वर, छर्दि अम्लपित्त ये नाश होयँ

अथ लक्ष्मीविलास तेल.

इलाची, चंदन, रासना, लाख, कपूर कंकोल, नागरमोथा, बलिया, दालचीनी, दारुहल्दी, पिपली, अगर तगर, जटामासी, कूट ये सब दवा सम भाग ले, और सब दवासे तिगुनी राल ले पीछे इन सबोंका डमरूयंत्रसे तेल निकालि ले, इस तेलका शरीरमें मालिश करनेसे शिरसे पाँवतकके रोग हरै, और इस तेलके मालिश करनेसे राजाओंसे मुलाकात होती है.

हरताररस बनानेको फकीरकी बूटी.

स्नान करिके मंत्र जपके अच्छे दिन असगन्धको उखाड़ि लावै, उसकी लुगदीमें हरतार तबकी रखके मुलतानी मिट्टीसे कपड़मिटकरके सुखावे, फिर पाँचसेर बितुवा कण्डोंमें फूँक देय, एक आँचमें भस्म सफेद होय, इस रसके खानेसे सर्वकुष्ठ जायँ लोकप्रसिद्ध होय और त्यागी भक्त मनुष्य फूँकै.

शंखिया मारन विधि फकीरकी बताई हुई.

काला शंखिया५ तोले लेके दो सेर आकके दूधमें

खल कर सुखावै फिर कपरमिट करके ९ सेर बिनुवा कण्डोंमें फूंकिदे तो सफेद भस्म होय और शरीरभरके रोगोंको हरै. खुराक आधा रत्ती, पथ्य घी दूध मिश्री.

अथ मूत्रकृच्छ्रका लक्षण.

जांघ, पेट, लिंगमें पीड़ा होय और थोरा २ बार बार मूत्र उतरे तो वातसे जानना और यदि पीला, लाल और गरम मूत्र कष्टसे उतरे और बहुत पीड़ा से उतरे तो पित्तका जानना और यदि पेडू और लिंग दोनों भारी हों और दोनोंमें सूजन हो, मूत्रमें झाग आवै, मूत्र कष्टसे उतरै तो कफका जानो. कफमें बमन हित है, पित्तका होय तौ जुलाब दे और बातका होय तो बस्तिकर्म हित है.

काढ़ा.

गिलोय, सुंठि, आवला, असगन्ध, गोखुरू इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्रको नाशै.

कुशकासादि काढ़ा.

कुश, कास, डाभ, शर, इष इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्रको नाशै.

मूत्रकृच्छ्रकी दूसरी दवा.

ककडीके बीज, मुलहटी, दारुहरदी इन्होंके चूर्णको

चावलके धोवनके साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै (अथवा) आँवलेका रस, दारुहरदी, शहद मिलाय पीनेसे नाश होय.

दुग्ध योग.

दूधमें गुड़ मिलाय थोरा गर्म करि पीनेसे सब प्रकारका मूत्रकृच्छ्र दूर होय.

यवाखार योग.

९ मासे मिश्री मिलाय यवाखार पीनेसे मूकृच्छ्र नाश होय. संशय नहीं.

गोखुरूका काढा बनाय यवाखार मिलाय खानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र दूर होय.

कुडाकी छालको गौके दूधमें पीसि पीनेसे भयंकर मूत्रकृच्छ्र नाश होय. अथवा ताकमें यवाखार मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश होय, अथवा सनायकी पत्ती ककड़ीके बीज मिलाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै.

अथ चार प्रकारका मुञ्जिस.

उनाव विलायती ९ नग, संवरा ९ मासे, चिरायता ६मासे, गाजुबाँका पत्ता ९ मासे, सौंफकी जड़ ९मासे, मकोय सूखी ४ मासे, कासनीकी जड़ ९ मासे यह सब दवा मिलायके पावभर पानीमें शाम

को भिगोय दे. सबेरे चुरावै जब आधा रह जाय तो छानिके पिये इसी विधिसे सात रोज पिये पीछे जुलाब ले तो निरोग होय.

दूसरा मुन्‌जिस.

गाजुबांकी पत्ती ६ मासे, काली दाख ९ नग, गुलाबके फूल सूखे ९ मासे, मुलहटी पत्ती ६ मासे, सौंफकी जड ९ मासे, सनायकी पत्ती ३ मासे, अंजीरका छिलका ९ मासे, गुलकन्द २ तोले सब दवा तीन पाव पानीमें शामको भिगोयके सबेरे चुरावै जब आधा शेष रहै तो छानिके पिये तो शरीरभरके रोगोंको नाशै. ९ दिन पीनेके पीछे जुलाब दे.

तीसरा मुन्‌जिस.

कच्ची अथवा गीली सौंफ १ तोला, मकोय सूखी १ तोला, मुनक्का काला १९ नग, खतमीका बीज १ तोला तुख्म खब्बाजी १ तोला, गुलकन्द २ तोला मिलाय पानीमें शामको भिगोवै सबेरे चुरावै जब आधा सेर रहै तो छानके पिये, शरीरकी नस नसको फायदा करै.

चौथा मुन्‌जिस.

सनाय ६ मासे, गुलाबके फूल ६ मासे, लसोढ़ा सूखा ६ मासे, मुलहटी ६ मासे, कालादाना ६ मासे,

गाजबां ६ मासे, बनफशा ६ मासे, मुनक्का ७ नग, उन्नाब विलायती ९ नग, मिश्री २ तोला सब दवा एकमें मिलाय शामको भिगोय सबेरे एक सेर पानीमें चुरावे जब आधासेर रहै तौ छानिके पीनेसे शरीरभरके रोगोंको नाशै.

इति श्रीमुन्शी भगवान्‌प्रसाद शिष्य भक्त भगवान्‌दास विरचित वैद्यक रसराज, महोदधि नव विष-नव उपविष शोधन, खानेके गुण, सातो धातु और सातो उपधातु मारन, खानेके गुण, मूत्रकृच्छ्रके लक्षण, खानेकी दवा, अच्छी २ मुन्नजिस, शीत पित्तके लक्षण और खानेकी दवा, अम्ल पित्तका लक्षण और खानेकी दवा, लक्ष्मी विलासतेल, हरतारमारन, शंखियामारन नाम दूसरा खण्ड समाप्त ।

अथ तीसरा खंड.

(उपदंश) फिरंगवायु-गरमीका वर्णन.

वेश्या स्त्री तथा रजस्वला तथा चंडालिनी स्त्रीके पास जानेसे गर्मी पैदा होती है तथा गर्मीवाला मनुष्य जिस जगह पेशाब करे उस जगहपर पेशाब करनेसे भी गरमी पैदा होती है और वात पित्त और कफके कोपसे फिरंग वायुरोग तीन रोजमें पैदा होता है.

अथ गर्मीका भेद.

गर्मीवाले मनुष्यको चाहिये कि छिपावे नहीं, इलाज बहुत जल्दी करै. बहुत मनुष्य शरमके सबबसे किसीसे कहते नहीं मूर्ख लोगोंकी दवा करते हैं दवा लगै तो अच्छा है, नहीं तो कोपकरके तमाम शरीरपर फैलजाती हैं. पीली पीली फुन्सी पैदा होती हैं और ज्यों ज्यों दिन बीतता है त्यों त्यों अधिक दुःख होता है, इन्द्रीपर घाव, शरीरपर कोढ़के समान चट्टा फैल जाते हैं और पेडूमें बद निकलती है, कुछ दिनमें शाना पकड़ लेता है, चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रहती, असाध्य होजाता है, जीवनाश होजाता है इससे गर्मीवाले मनुष्यको चाहिये कि, शरम नहीं करै अच्छे उस्ताद या हकीमके पास जाके इलाज करै, जो हकीम बोले वही खावै, पथ्यसे रहै और कोई बुरी चीज न खाय न जीभकी चालाकी करै, तो दश दिनमें अच्छा होय और गर्मीकी निशानी तो तीन पुश्त तक रहती है.

अथ उपदंशका लक्षण.

ज्वर होय, भूख नहीं लगै, मुख काला पड़-जाय, शरीरकी द्युति बदलजाय, झाड़ा, पेशा-बमें कड़क होय. ये लक्षण उदंशके हैं.

अथ दवा देनेकी विधि.

उपदंशवाले मनुष्यको जुलाब देना, पीछे इन्द्रिय जुलाब देना और फिर घाव, बदशाना इत्यादिका इलाज करै.

अथ गर्मीका पहिला इलाज.

मकोईकी पत्ती, सनायकी पत्ती, सौंफ, मुनक्का, गुलाबके फूल, अमिलताश ये सब दवाई ले आधासेर पानीमें चुरावे जब पानी आधा रह जाय तब छानके गर्मीवाले मनुष्यको दे, इसी तरहसे तीन दिन दवे पीछे दूसरी दवा करे.

दूसरा इलाज.

शुद्ध जमालगोटा एक तोला, आंवला चार तोले इन दोनोंको कूटकर कपड़छान करके एक दिन नींबूके रसमें खल करे पीछे मिर्च बराबर गोली बाँधै तब ठंढ़े पनीके साथ एक गोली साँझ और एक सबेरे खानेको दे तो पन्द्रह दिनमें गर्मी दूर होय.

तीसरा इलाज.

शुद्ध शंखिया, अकरकरा, सफेद खैर, भृंगराज और सफेद सुपारी ये सब चीज छः २ मासे ले कपड़छान करके पानीमें खल करै फिर बाजराके समान गोली बाँधै, एक गोली साम और एक सबेरे पानीके

साथ खानेको दे तो गर्मी दूर होय. आठ दिनमें असाध्य रोग भी दूर करै.

अथ तेल बनानेकी विधि.

मिरचा हरा पाव भरि तिल्लीके आधे सेर तेलमें चुरावै जब मिरचा जरि जाय तब तेल मालिश करै तो गर्मी दूर होय.

अथ कड़क पेशाबकी दवा.

शुद्ध राल पावभर, मिश्री पावभर एकमें मिलायके कपड़छान करके एक तोला खानेको दे तो जितना पानी पीवै तितना पेशाब होय और दवा दिन भरमें तीन दफे करै तो कड़क पेशाब छूटै.

अथ इन्द्री जुलाबकी दवा.

गुलारमनी एक जातकी मिट्टी है उसको ९ मासे लेवे और ९ मासे कलमीसोरा दोनोंको एकमें मिलायके तीन सेर पानीमें मिलावै, पीछे रोगीको पीनेको दे तो जितना पानी पीवै तितना ही पेशाब बहुत खुलाशा होय.

शंखियाकी गोली गर्मीपर.

शुद्ध शंखिया एक तोला और पापरीखैर दो तोले एकसौ बँगलापानमें दो दिन खल करै तब बजरीके समान गोली बाँधकर एक गोली शामको और एक

सबेरे पानीके साथ खानेको देवै तो उपदंश दूर होय, पथ्य दूध भात और खट्टा,मीठा,तीता वैगरह त्याग करै.

पुनः दवा.

मदारकी लकड़ी जलाई हुई दो तोले, मिश्री दो तोले, दोनोंको मिलाकर छःमासे शाम व सबेरे खाय तो गर्मी आठ रोजमें दूर होय.

इन्द्रीका मलहम.

काली मेल दो तोले दश मासे, मेंहदीका बीज सात मासे, रूमीमस्तगी सात मासे, सुरंजन सात मासे, निसोत साढ़ सत्रह मासे, रोगन गुल तीन तोले, रोगन जितून पांच तोले, नीबूकी पत्ती एक तोले, बकरीकी चर्बी ग्यारह तोले मिलाकर मलहम तयार करै तब सब शरीर पर मालिश करै जिधर जिधर चट्टा हों उधर उधर करै तो बहुत जल्दी चट्टा, फुन्सी, घाव इत्यादिक दूर होयँ.

अथ इन्द्रीकी दवा.

काली मेल एक तोला, कबेला दो तोले, सफेदा दो तोले, प्युली दवा ६ मासे, मसका घी धोया हुआ छः तोले मिलाइके घावपर लगावै तो बहुत जल्दी घाव अच्छा होय, असाध्य हुआ आदमी अच्छा होय.

अथ टाँकी लेप.

मुर्दा संग १ पैसा भरि, राल एक पैसा भरि और घी चार तोले मिलायके मलहम तय्यार कर घावपर लगावे तो तुर्त टाँकी चट्टा अच्छा होय.

फिर लेप.

त्रिफला जलाया हुआ मधुमें मिलायके घावपर लेप करै तो बहुत दिनकी गर्मी अच्छी होय,घाव भर-पूर होजाय, घावकी जगह पहिचानमें नहीं आवै.

अथ उपदंशकी हुक्का पीनेकी दवाई.

शिंगरफ, माजूफल,मदारकी जड़ और भृंगराज ये सब चीजें एक एक तोला लेकर एकमें खल करैं तब नवमासे चिलममें रखके खैरकी लकड़ीके अंगार धर पीवै तो सब तरहकी गर्मी दूर होय इसके बराबर दूसरी दवा नहीं है-

अथ गर्मीका हुक्का पीना.

इन्द्रायणकी पत्ती इन्द्रायणकी जड़, सोरा, भृंग-राज ये सब मिलाके चिलममें रखके पीवै तो गरमी जाय.

अथ आककी गोली.

आककी जड़ एक तोला पाँच मासे, मिर्च ४ तोले दोनों एकमें खल करके छोटी मटरके बराबर गुड़में

गोली बाँधै और शाम सबेरे एक एक गोली खाय तो अच्छा होय.

अथ अरुशकी गोली.

अरुशकी जड़ दो तोले, मिर्च दो तोले मिलाके खल करके चना बराबर गोली बाँधकर शाम सबेरे एक २ गोली खाय तो बहुत जल्दी अच्छा होय.

अथ हुक्का पीना.

खुरासानी अजवायन ढाई मासे, शिंगरफ पांच मासे, नीलाथोथा दो रत्ती, अकरकरा पांच मासे, आककी जड़ दश मासे ये सब दवाई कूट कर बेरकी लकड़ीकी आगसे चिलमपर रखके पीवें तो बहुत जल्दी अच्छा होय फिरंगवायु जाय.

तथा.

कसौंजीकी जड़ व पत्ती एक तोला पाँच मासे, मिर्च ग्यारह मासे दोनोंको भांगके समान घोटि पीवे तो बहुत जल्दी अच्छा होय उपदंश जाय.

तथा.

शिंगरफ,अकरकरा,नींबका गोंद, माजूफल,सोहागा ये सब चीज एक एक तोला मिलाके चिलम पर रखके ऊपरसे अंगार रखके पीवें तो सब तरहकी गर्मी जाय इसमें संशय नहीं.

अथ घावको लेपन

जराया हुआ नीलाथोथा छःमासे और मोम एक तोला, घी दो तोला एकमें मिलाय गरम कर घावपर लेप करै तो उपदंश चट्टा फुन्सी सब दूर हों.

पुनः दूसरा लेप.

कड़ू तेल पाव भर, मोम पांच टंक, कवेला बारह टंक, सिंदूर दो टंक, शोरा दो टंक, मुरदाशंख दो टंक सब बारीक पीस घीमें मिलाके मलहम तैयार करै फिर जहाँ जख्म भया होय वहाँ लगावे तो बहुत जल्दी अच्छा होय.

अथ मलहम बनानेकी विधि.

सफेद राल छःमासे, रसकपूर छःमासे, गुलाबका तेल दो मासे सब एकमें मिलाके ११० दफे पानीसे धोवे तब घावपर लगावे तो सब प्रकारका जख्म दूर होय.

मलहम बनानेकी दूसरी विधि.

नेनू एक तोला लेकर एकसों दफे पानीमें धोवे फिर जख्म पर लगावे तो घाव फौरन् अच्छा होय.

अथ बदका लेप.

नागफनीका एक पट्टा लेकर उसको फाड़के आंबाहरदीका चूर्ण भरै फिर कपड़मिट करके अग्निमें भूँजिले तब बदपर बांधे तो बद तीन दिनमें

अच्छी होय (पुनः बदका लेप) तीसी कूटिके गर्म करिके बदपर बांधे तो बहुत जल्दी बैठ जाय, (पुनः लेप) आंबाहरदी, तीसी, ईसबगोल, घीकुवारिका गोंद सब दवा एकमें मिलाकर पीसके गर्म करके बदके ऊपर बांधे तो बहुत जल्द बद अच्छी होय. (पुनःलेप) आंबाहरदी, घरकारंडस, चूना, गुड सब बराबर पीस लेप करै तो बद पकै फिर फूटिकै बहुत जल्दी अच्छी होय (पुनःलेप) रेंडीके बीज, हर्र, रेंडीका तेल, सिरका सब एकमें मिलाके गरम करके बदके ऊपर बांधै तो जो थोडे दिनकी बद हुई होय तो बैठ जाय जो ज्यादह दिनकी होय तो पक फूटके बहुत जल्दी अच्छी होय, इसमें संशय नहीं (पुनःबदपकानेका लेप) नीलाथोथा ६ मासे, आंबाहरदी एक तोला, राल एक तोला, गूगल ६ मासे, गुड एक तोला सब एकमें पीस गरम कर बदपर बांधै तो बहुत जल्दी फूट जाय. (पुनःलेप) मेथी, हरदी, रेंडीका तेल, मिलाकरके बदपर बांधे तो बद बहुतजल्दी अच्छी होय (पुनः) मदारके पत्ता रेंडीका तेल लगाके बदपर गरम करके बांधै तो अच्छी होय फिर धतूरके पत्तासे सेंक दे तो बहुतही गुण करै.

अथ साना गठियेका इलाज.

उसवाका माजूम, गर्मीके चट्टा, फोड़ा, गठिया, म-

लीज खूनको दूर करता है. और नया खून पैदा करता है (दवा) उसबा मगरबी सात तोले, सनायकी पत्ती अढ़ाई तोले,सौंफ अढ़ाई तोले,विसपंज दो तोले. लाल चंदनका चूर्ण एक तोला,मिश्री सात तोले, शहद सात तोले, पहिले उसबाको एक सेर पानीमें चुरावे जब आधा पानी रहजाय तब मिश्री शहद डारिके चासनी करै पीछे कपड़छान करके चासनीमें मिलाके बरतनमें रक्खे. खुराक ६ मासेसे एक तोला तक. यह माजूम बहुत गुणकारी है.

दूसरी खानेकी दवा.

रेंडीकी एक दानाकी छाल निकालके एक दिन एक दाना, दूसरे दिन दो दाना. इसी तरहसे दररोज एक दाना बढ़ाताजाय जब सात दिन होयँ तो एक दाना कमती करता जाय. खाते खाते एक दाना अन्तमें रहजाय तब सब तरहका जोड़ा साना और गठिया दूर होय.

मालिशका तेल.

अलसीका तेल, तिल्लीका तेल, करू तेल ये सब तेल आधा आधा पाव लेकर और धतूरेके पत्ता, जड़ व फल फूल इनको कूटकर तेलमें चुरावै जब

दवाई जल जाय और तेल मात्र रहिजाय तब मालिश करै तो शरीरभरेका जोड़ा साना सब दूर होय.

तंबाकूका तेल.

तंबाकू आध सेर लेकर शामको डेढ सेर पानीमें भिगोय दे सबेरे पानी छानि एक सेर तिल्लीका तेल डालके मधुरी आँचसे चुरावै. जब पानी जलजाय तेल मात्र रह जाय तब मालिश करै तो गठिया जोड़ा साना वगैरह दूर होयँ.

२ तंबाकूका तेल

मालकाँगनी २ तोले, कायफल एक तोला, बकाइन १ तोला, सोंठि एक तोला, कतीरा १तोला, जायफल १ तोला,अकरकरा एक तोला, इलायची १तोला, लौंग १ तोला, हल्दी १ तोला, समुद्रखार १ तोला, कुचिला १ तोला, बदाम एक तोला, गरी १ तोला करंज १तोला. समौर १ तोला, कुलंजन एक तोला, काला धतूर १तोला,मंदार १ तोला,सहिंजन १ तोला, गोम १ तोला, मकोय १ तोला, भृंगराज १ तोला, कडूतेल १ सेर,तिल्लीका तेल १ सेर,रेंडीका तेल आधा सेर पहिले यह सब दवा आठ सेर पानीमें चुरावै जब आधा पानी रहजाय तो छान कर तेल डालिके मधुरी आँचसे चुरावे जब सब पानी जलजाय तेल मतत्र रह

जाय तब मालिश करै, तो जोड़ा गँठिया साना दूर होयँ, गरमीके वातरोगको बहुत फायदा करता है,

अथ काढ़ा.

सौंफ, कासनीके बीज, मकाया, हंसराज, सौंफकी जड़, कासनीकी जड़, मुलहठी, बबूलके फूल सब मिलाकर पानी डालके काढ़ा करिके पीवे, तो जोड़ा साना गँठिया दूर होयँ, तथा पोस्ताके ढोढ़का काढ़ा गुण करता है.

गँठियाको चूर्ण.

सुरंजन दो तोले, सनाय २ तोले, हर्र एक तोला, निसोत सपेद दश मासे, बादाम दश मासे, मेहदीकी पत्ती सात मासे, केसरि चार मासे और सबके बराबर मिश्री मिलाकर कपड़छान करके दो तोले नित सबेरे फाँके तों जोड़ा सानाको बहुत फायदा करता है.

अथ गोली गँठियापर.

एलवा दो तोला ग्यारह मासे, काबिली हर्र एक तोला दश मासे, शुद्ध निसोत सात मासे, सुरंजन सात मासे, शुद्ध गूगल सात मासे, सोंठ, चीता, राई, सेंधा- नोन, इन्द्रायणका गुज्झा, मजीठ एक २ तोला आठ२ मासे. अजवाइन, पीपल, कली मिरच, पौने दो

दो मासे, मिश्री चार मासे, सब कूट कपड़छान करिके पानीमें गोली बनाकर तादाद गोलीकी दश मासे. सबेरे एक गोली खाय तो दो दस्त आवैं गँठिया,जोड़ा,खाना. गरमीके सब रोग दूर होयँ.

उपदंशका लेप.

कनेरकी जड़ पीसकर लेप करै तो असाध्य गर्मी दूर होय.

इति श्रीमुन्शी भगवान्प्रसाद शिष्य भगवानदास विरचित रस० उपदंश फिरंगवायु पांच प्रकारकी गर्मी क्वाथ हुक्का तलादिविधि यत्नवर्णनं नाम तीसरा खंड समाप्त ॥ ३ ॥

चौथा खंड.

जवारीस हिन्दी.

कलेजेकी गर्मीको तर करता है, कब्जियतको दूर करता है,भूखको लगाता है(दवा)लौंग सात मासे,वालछड़ साढ़े तीन मासे, अगर खाम साढ़े तरह मासे, मिश्री तीन पाव, सवा छटाँक गुलाबका अर्क, आधा सेर पहिले गुलाबका अर्क और मिश्री दोनोंकी चासनी करे तब दवा कूटके कपड़छान करके चासनीमें मिलावै खुराक नौ मासे सबेरे.

जवारीस सहरान

कलेजेके दर्दको दूर करता है, पेट फूला होय तो उसको फायदा करता है, जिसको बहुत कड़क पेशाब होय उसको बहुत फायदा करता है (दवा) लौंग, दारचीनी, बालछड़, जायफल, दोनों इलायची, रूमी मस्तंगी, हुब बेलसा, सक मुनियां केसर ये सब दवा सोलह २ मासे ले, निसोत दो तोले चार मासे सब दवाके बराबर मिश्री लेना, शहद और मिश्री इन दोनोंकी चासनी करिलेय फिर दवा कपड़छान करके चासनीमें मिलाय देय, खुराक एक तोले सबेरे खावै.

अथ जवारीस तीसरी.

जवारीस जुंलाब—पेटके गलीजको साफ करता है. (दवा) निसोत दो तोले ग्यारहमासे, सोंठि सत्रह मासे, मिश्री चार तोले चार मासे मिश्रीके चासनी करिकै दवा कूटके चासनीमें मिलाके तैय्यार करले खुराक एक तोला सबेरे खावै.

अथ जवारीस दूसरी

हिंदुस्तानी.

शरीरकी गाँठि गांठिको, पेट, शिरके दर्दको दूर करताहै (दवा) सक मुनिया दो तोले ग्यारह मासे, छोटी और बडी इलायची, दारचीनी, सोंठि,

तज, नागकेसर, लोंग, कालीमिरच सब दवा साडे सात २ मासे लेना. मिश्री २७ तोले ग्यारह मासे, आधा सेर मधु, मधु और मिश्रीकी चासनी करिकै दवा कूटके चासनीमें मिलाके जवारीस तय्यार कर लेय खुराक एक तोला सबेरेके वक्त खावे.

अथ जवारीस जारीनोस.

बालछड, इलायची,सळी, खाँदारचीनी,कुलिंजन, लौंग,नागरमोथा, सोंठि, कालीमिरच,पीपरि,कूट,दारियाई, अगर, कच्चा अस्साहून, मूलीके बीज, चिरैता, रूमीमस्तंगी सब दवा एक एक तोले ले नागकेसर छःमासे,मिश्री दश तोले, शहद आंधा सेर,मिश्री और शहदकी चासनी करिके सब दवा कूट कपड़छान करिके चासनीमें मिलाके तय्यार कर लेवै खुराक नौ मासे सबेरे शाम खावै तो तमाम शरीरको ताकत देताहै शरदीको, कबजियतको, शिर कमरके दर्दको दूर करता है, सुस्तीको नाश करता है, मस्ती लाता है, बलगम,बवासीर, सेहुआं,दाद,चट्टा,खुजली इन सबको दूर करता है,कालेबालोंको सफेद नहीं होने देता है.

बरश बनानेकी विधि.

सपेदमिर्च, अजवायन, खुरासानी पांच तोले ले केसर एक तोले साढे पांच मासे, वालछड तीन मासे

फरफिऊन तीन मासे, सब दवा कूट करिके कपड छानकर मधुमें मिलायके बरतनमें रख दे. यवमें छः महीनेतक गाड़ रक्खे पीछे निकाल कर तीन मासे सबेरे खाय तो सब रोग हरै.

बरश बनाने की दूसरी विधि.

काली मिर्च चार तोले, सफेद मिर्च चार तोले, खुरासानीअजवाइन चार तोले, उस्तु खुद्दुश एक तोला, पीली हर्र दो तोले, अफीम दो तोले, केसर एक तोला, फरफीऊन छः मासे, जटामासी छः मासे, अकरकरा छः मासे, सब एकमें मिलाके कूट कपड़छान करिके मधुके चासनी करिके दवाई मिलाके बरश तय्यार करै खुराक तीन मासे सबेरे खाय तो एक महीनेमें सब रोग हरै.

अथ आनन्द दाता गोली.

जिसको पाँवसे शिरतक साना पकडे होय, चलने फिरनेकी शक्ति न होय उसकी (दवा) एलवा साढ चार मासे, निसोत सवा पांच मासे, कालादाना पौने दो मासे, गोरोचन पौने दो मासे. इन्द्रायनके फलका मगज छः रत्ती सवा दो चावल, अजमोदाके रसमें चना बराबर गोली बनावै इस गोलीका गुण कुछ वर्णन योग्य नहीं. खुराक एक गोली शामको एक सबेरे,

अथ आनन्दभैरव रस.

शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध शंखिया विष. काली मिरच, पीपरि, शुद्धचौकिया सोहागा, सब बराबरि ले कपड़ छान करिके दो दिन निम्बूके रसमें खल करै तब आनंदभैरव रस तय्यार होवै, खुराक आधा चावलसे एक चावलतक रोगीका बल देखके देवै. सब रोगोंको दूर करताहै. इसका गुण बहुत है लिखने योग्य नहीं.

अजीर्णकंटक रस.

शुद्ध शंखिया, शुद्ध चौकिया सोहागा, सेंधा निमक सब बराबर लेकर कूट कपड़छान करिके अदरखका रस पाव भरि, दही पाव भरि, निम्बूका रस एकसेर इन सब रसोंमें मिलाके खल करै तब दो रत्तीके बराबर गोली बाँधे. खुराक एक गोली शामको और एक सबेरे खाय तो वात रोग,अजीर्ण,पेटका फूलना दूर होय और सब प्रकारके उदर रोग दूर होयँ.भूख बहुत लगै यह दवा अमृतके तुल्य है.

त्रिफलादि क्रिया.

त्रिफला एक सेर, मुलहटी एक सेर, दारचीनी एक सेर, महुआके फूल एक सेर, सब दवा कूट कपड़छान करिके दवाके बराबर मधु और मधुके बराबर घीमें मिलाके तीन दिन पीछे सोते समय खाय तो शरीर

पुष्ट हो और आँख, कान, नाक, मुँह, छाती, उदर रोग इत्यादि सब रोग दूर होयँ, बुद्धि बहुत होय, कितनी ही मेहनत करै तोभी बल घटै नहीं. बहुत दिन जीवै और अजर, अमर होय, कुछ दिन सेवे तो आँखोंके रोगको बहुत फायदा करता है.

राज मृगांक क्रिया.

मिरच छः मासे, घी छः मासे, तुलसीके पत्ते छः मासे एकमें मिलाके जो कोई कुछ दिन सेवै तो इस क्रियाके बराबर कोई दवा नहीं. यह दवा गरीब अमीर सबके वास्तें है. वात रोगको बहुत गुण करता है.

हरैं खानेकी विधि.

ज्येष्ठ आषाढ़में हरैं गुड़से खाय, सावन भादोंमें सेंधानमकसे खाय, कुवाँर कार्तिकमें मिश्रीसे खाय, अगहन पूसमें सोंठिसे खाय, माघ फाल्गुनमें पीपरिसे खाय, चैत वैशाखमें मधुसे खाय, (हरैं खानेका गुण) जेठमें खाय खाँसी जाय, आषाढ़में खाय पेट साफ होय. सावनमें खाय तो आंखोंकी ज्योति बढ़े, भादोंमें खाय कूवत होय, कुवाँरमें खाय बाल काले होयँ, कातिकमें खाय सब रोग हरै, अगहनमें खाय तो मर्द होय, पूसमें खाय पुष्ट होय, माघमें खाय बुद्धि बढ़ै, फाल्गुनमें खाय तो बहुत देखैं, चैतमें खाय तो अक्ल बढ़ै

वैशाखमें खाय भूली बात याद हो, इसी विधिसे बारहों महीना खाय तो शरीरमें रोग नहीं व्यापै निरोग रहे.

काबुली हर्रोंका मुरब्बा.

एक सौ हर्रें लेकर पानीमें डाल दे और थोड़ी सी अच्छी माटी लेकर इसी पानीमें डाल दे. ३ दिन पीछे चुरावै तब साफ करके मधुमें बारह दिन रक्खै, फिर दूसरी मधु लेकर दोनों मधुकी चासनी करके उसीमें हर्रें डाल दे और फिर ये दवा डालै तज, लौंग, सोंठि, बडी इलायची, जायफल, रूमी मस्तगी ये सब दवाई एक २ तोले दश २ मासे, कस्तूरी दो मासे, केसरि चारि मासे ले सब दवा मिलाके चालीस दिन पीछे खानेको देय खुराक एक तोले तमाम शरीरको ताकत देता है, दिवानगी दूर करता है, मस्ती लाता है, संग्रहणी, वात, शिर वादी ये सब रोगोंको दूर करता है, आंखोंकी ज्योति बढता है, शियतको दूर करताहै.

अथ आंवराका मुरब्बा.

अच्छे आँवरा एक सेर लेके एक दिन एक रात पानीमें भिगो दे फिर फिटकरीके पानीमें एक दिन भिगावै तब चूनाके पानीमें एक दिन भिगो पीछे चूनाके पानीसे अँवरा धो डाले तब आधा सेर मधु और

एक सेर मिश्री इन दोनोंकी चासनी करले और चासनीमें आँवरा डाल दे फिर दवा केवड़ाका अर्क एक तोला, गुलाबका अर्क एक तोला, कस्तूरी एक तोला, अगर एक तोला सब कूट कपड़छान करके चासनीमें मिला पन्द्रह दिन रक्खै पीछे खानेको देवै खुराक एक तोला. हड़के मुरब्बासे आँवराके मुरब्बेका गुण ज्यादा है सब रोगोंपर दे.

अथ गाजरका मुरब्बा.

अच्छा गाजर चार सेर लेकर उसका छाल छोल कर दूर करै, फिर छोटे२ कतरा कर एक दिन पानीमें भिगोदे तब पानीसे निकाल दो सेर मधुमें चुरावे फिर दो सेर मधु लेवे दोनों मधुकी चासनी करै,उस चासनीमें गाजर छोड़ देवै, फिर सोठि, बालछड़, मिरच, बड़ी इलायची, रूमीमस्तंगी, पीपरि, कंफरके बीज यह सब दवा एक २ तोला ले कपड़छान करके मुरब्बामें मिलाय देवे. आठ दिन पीछे खुराक डेढ़ तोलादे मनीको बढ़ाता है,छाती व कमरके दर्दको दूर करता है, मन प्रसन्न करता है;कलेजेकी गर्मीको शान्त करता है, सब रोगोंको फायदा करता है.

अथ बचका मुरब्बा.

अच्छी बच दो सेर लेके पानीमें एक रात एक दिन

भिगोवै फिर दूसरे दिन डेढ़ सेर मधुकी चासनी करके बच डाल चुरावे आठ दिन पीछे खाने-को देवै खुराक नौ मासे. लकवाको गुण करता है, पेट और छातीको ताकत देता है, सुस्ती दूर करता है, जो एक महीना खावै तो सब रोग दूर होवैं शरीर निरोग रहै मुरब्बा खाय तो खट्टा मीठा नहीं खावे स्त्रीसे बचा रहै.

अथ बेलका मुरब्बा.

अच्छा बेलका चार सेर मगज ले थोड़ा घीं डाल पानीमें चुरावे तब मिश्री एक सेर, मधु दो सेर, मधु और मिश्रीकी चासनी करै फिर छड़ीला तीन मासे, वालछड़ पांच मासे, नागरमोथा चार मासे, जहर, मोहरा खताई दो मासे. जौहर कपूर दो मासे, इलायची तीन मासे सब दवा कूट कपड़छान करके चासनी-में मिला देवै चालीस दिन पीछें खानेको देवै खुराक एक तोला. संग्रहणीको दूर करता है, पेटके मुरोंको फायदा करता है, आंव और खूनी बवासीरको दूर करता है. आँखों व कलेजेकी गर्मीको दूर करता है. प्यास बुझाता है. यह मुरब्बा सब रोगोंको फायदा करता है.

अथ जुलाब लेनेकी विधि.

जिस रोगीको जुलाब देना हो उसको पहले नरम २ भोजन करावे. जैसे दूध, मिश्री और अच्छा भोजन करावैं, जिसमें सब रोग दोष प्रगट होवैं. तब जुलाब देवै.जुलाब लेनेसे बुद्धि निर्मल होती है.इन्द्रियां प्रबल होती हैं. शरीरकी सुस्ती दूर होती है. और आंखकी ज्योति बहुत बढ़ती है. वात, पित्त,कफके, लोहूके, बिगड़ेको दूर करता है. खराब खूनको दूर करता है, नया खून पैदा करता है, सब रोगोंको दूर करता है.

जुलाब पहिला.

काला दाना थोड़ा भूनकर सनायकी पत्ती एक तोला. काली हर्र एक तोला लेकर खलमें खल करे तब चना बराबर गोली बनावे, एक गोली गर्म पानीके साथ खाय तो बहुत उत्तम जुलाब होय पथ्य-खिचड़ी, घी,स्नान नहीं करे और न सोवे.

जुलाब दूसरा.

शुद्ध जमालगोटा, कालादाना, गरी ये दवा एक २ तोला ले कूट कपड़छान करके अदरखके रसमें गोली बांधे, चना बराबर एक गोली गर्म पानीके साथ खाय तो बहुत उत्तम जुलाब होय पथ्य खिचड़ी घी.

जुलाब तीसरा.

शुद्ध जमालगोटा तीन मासा. सोंठि चार मासा, कतीरा गोंद तीन मासा एकमें मिलायके कूट कपड़छान करके खल करै, पीछे चना बराबर गोली बाँधे. एक गोली गरम पानीके साथ दे. ऊपरसे सौंफका पानी पीनेका देवै तो बहुत ही अच्छा जुलाब होय.

जुलाब चौथा इच्छाभेदी.

सोंठि, मिरच, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध सोहागा सब दवा छःमासे ले और शुद्ध जमालगोटा डेढ़ तोला लेकर पीछे एकमें सब दवा खल करै पीछे दो रत्तीकी गोली बांधै, एक गोली एक तोला मिश्रीके साथ खाय ऊपर जितनी अँजुरी गरम पानी पीवै उतना ही जुलाब होय इसका पथ्य चावल और ताक है.

जुलाब पाँचवाँ.

सनायकी पत्ती पच्चीस भरि, काला दाना पच्चीस भरि, गुड पच्चीस भरि, सोंठि पच्चीस भरि, शुद्ध जमालगोटा पच्चीस भरि, सब दवा एकमें मिलायके खल करै पश्चात् बड़ी मटरके बरावर गोली बाँधै, एक गोली चार मासे मिश्रीके साथ खाय, ऊपरसे गरम पानी पीवै तो जुलाब होय, पथ्य खिचडी, घी.

जुलाब छठवाँ.

सनायकी पत्ती, गुलाबके फूल, मुनक्का, काला-दाना, अमलतासका मगज, सौंफ, काला नमक सब दवा एकमें खलकर जंगली बेरके बराबर गोली बांधै एक गोली गरम पानीके साथ खाय तो तीन जुलाब बहुत उत्तम होयँ पथ्य मूँगकी खिचडी.

अथ शिररोगकी दवा.

कसरि, मिश्री, घी तीनों बराबर दूधमें घिसके नास लेय तो शिररोग, अधकपारी (आधाशीशी), सूर्यवती, मुँहकी पीड़ा ये सब रोग दूर होयँ.

अथ शिरकी दूसरी दवा.

अदरखका रस, पीपरि, सेंधानमक, गुड़ ये सब दवा एकमें घिसके पानीके साथ नास लेय तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

अथ शिरका लेप.

चौराई दो तोला, सोंठ एक तोला, मिरच छः मासे सब दवा एकमें पीस लेप करै तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

शिररोगका दूसरा लेप.

रेंडीकी जड़, सोंठ, कूट सब दवा एकमें पीसके शिरपर लेप करै तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

शिररोगपर खानेकी दवा.

त्रिफला,मिश्री, घी एकमें मिलाके एक तोला खाय तो शिररोग दूर होय, इति शिर रोगकी दवा समाप्त।

१ अथ कर्णरोगका इलाज.

जो कानकी पीडा बहुत होती होवै तो मूलीका रस पाव भर, मंदारके पत्तोंका रस पाव भर और पाव भर कडू तेल इन सब दवाइयोंको एकमें चुरावै और जब दवा जलजाय केवल तेल मात्र रह-जाय तब थोड़ाथोड़ा कानमें डालै तो कानकी पीड़ा और खाज दूर होय.

२ तथा.

कानके पीडा होने पर थोडासा समुद्रफेन कानमें डालै और फिर नींबूका रस डालै तो कानकी पीडा व शूल तुर्त हरै.

३ तथा.

सेहुँडके पत्ता और मन्दारके पत्ता दोनोंका रस निकालके गर्म कर कानमें छोडै तो कानकी सब पीडा दूर होय.

४ तथा.

सेंधा नमक,अदरखका रस, शहद, कडू तेल मिला कर गर्म कर कानमें छोडै तो कान अच्छे होयँ.

५ तथा.

जो कानमें पीब बहता होय और थोड़ा २ शब्द सुन पड़ै तो सफेद दूबका रस ८ तोले, मूलीका रस ६ तोले, सेंधानमक १ तोला और तिल्लीका तेल पावभर इसमें सब दवाई डालके चुरावै जब दवा जल जाय तेलमात्र रह जाय तब कानमें डालै तो कानके सब रोग दूर होयँ.

१ अथ आंखोंका इलाज.

अगर आँखोंमें लाली छाई होय और पीडा करती होयँ तो आँवला, हर्र, बहेडा यह तीनों दवा एकमें मिलायके पानीमें भिगोय दे पश्चात् चार घडी पीछे पानीमेंसे निकालकर आंखोंमें डाले तो आंखोंके सब रोग दूर होयँ.

२ तथा.

हड़ छोटी दो मासे, बहेडा दो मासे, आँवला दो मासे, मिरच एक मासा, दालचीनी दो मासे, पीपर एक मासा सेंधा व सांभरनमक एक एक मासा सब दवा एकमें मिलाकर खल करै पीछे कपड़छान करके नींबीके पत्तोंके रसमें एक दिन खरल करै फिर एक दिन काली मकोयके रसमें खल करके सुखायके गोली बांधिके सुखावै पीछे जुदे २ अनोपानसे आंखोंके सब

रोग हरे, ब्राह्मणी होय तो गायके मूत्रमें घिस सात रोज आंजे तौ सब रोग दूर होयँ, और फूली होय तो शहदमें घिस आंजे तो पन्द्रह दिनमें फूली अच्छी होय और नाखूनके वास्ते अदरखके रसमें घिसि आंजै तो अठारह दिनमें दुःख दूर होय, और जो कमती दीखता होय तो बासी पानीमें घिसिके आंजै तो बाईस दिनमें अच्छी होयँ.

३ तथा.

मैनशिल, जीग, पीपरि, धमासा, मिश्री, सफेद नींबोल, सांपकी केचुल ये सब दवा बराबर लेकर कूट कपड़छन्न करके करेलीके रसकी तीन पुट दे पीछे भृंगराजके रसमें तीन पुट दे फिर खूब खल करके घुँघुची प्रमाण गोली बांध छायामें सुखावे, जो कोई नींबूके रसमें गोली घिसि एक आंखिमें आँजै तो एक अंगका ज्वर जाय और दोनों आँखोंमें आँजै तो शरीर भरेका ज्वर जाय और जो गूगलकी एक गोली-का धूप देय तो भूत, प्रत, डाकिनी, शाकिनी लगी होयँ तो सब छूटि जायँ.

४ तथा.

शुद्ध खपरिया, सेंधानोन, शुद्ध नीलाथोथा, शुद्ध सोहागा, सोंठि, मिरच, पीपरि, यह सब चीजें एकमें

मिलाके नींबूके रसमें चार पहर घोटे तब गोली बनाय छायामें सुखायके शहदमें आँजे तो सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ और फुनसी, फोड़ा, मांसका गलना, घूँघा, मोतियाबिंद आदि सब रोग दूर होय.

५ तथा.

जराया हुआ भेलावाँ एक, फिटकरी दो चना भर, अफीम एक चना भर, छः नींबूके रसमें खल करके छायामें सुखाय गोली बनाकर नींबूके रसमें घिसिके आंजै तो फूली, फेफरा, आंखोंसे पानी बहना ये सब दुःख दूरि होयँ.

६ तथा.

जेठी मधु, गेरू, सेंधानमक, दारुहल्दी, रसौत सब दवा बराबर लेके पानीमें एक दिन घोटै, पीछे मटर बराबर गोली बाँधै पश्चात् पानीके साथ घिसके पलक पर लेप करै तो सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ.

१ अथ नाकरोगकी दवा.

जो बहुत छींकें आती होयँ तो धनियांकी पत्ती सूंघै अथवा चंदन सूंघना गुण करता है.

२ नाकरोगकी खानेकी दवा.

सोंठि पपीर इलायची तीन २ मासा ले गुड़ सात

तोला एकमें मिलाके चार मासे खाय तो नाकके सब रोग दूर होयँ.

३ नाकरोगकी तीसरी दवा.

भृंगराजका रस पाव भर, तिल्लीका तेल पाव भर, सेंधानमक दो तोला सब एकमें मिलाके चुरावै जब पानी जर जाय तेल मात्र रहि जाय तब नास लेवै तो जो नाकमें चइली (पपरी) पड़ती होयँ वह न पड और पीनस इत्यादि सम्पूर्ण नाकके रोग हरै.

अथ जीभरोगका इलाज.

जो जीभपर छोटे २ फोडे निकल आवैं और जीभ लाल लालहो जाय तो जानो यह रोग कलेजेकी गर्मीसे होता है (दवा) शीतलचीनी, वंशलोचन, रूमीमस्तगी, गुजराती इलायची, गुरुचको सत; पीपरि ,मिश्री ये सब दवा छः छः मासे ले कूट कपड़छान करके एक तोला माखनके साथ छः मासा दवा खाय तो जीभके सब रोग दूर होयँ.

अथ दांतरोगकी प्रथम दवा.

फिटकरी, हर्र, खट्टे अनारका छिलका, सेंधानमक सब दवा एकमें मिलाके कूट कपड़छान करके मंजन करै तो सब प्रकारकी दांतकी पीडा दूर होय; यदि दांत हिलते होयँ तो वज्र समान होयँ.

दाँतकी दूसरी दवा.

बालछड़ एक मासे, अकरकरा छः मासे. सेंधा नमक छः मासे, तूतियाकी भस्म एक मासा, सुपारी जराई हुई छः मासे, तुलसीकी पाती एक तोला, रूमी-मस्तगी एक तोला, कस्तूरी एक मासा, नागरमोथा एक मासा, जराई हुई तमाखू एक तोला, जराया हुआ बादाम एक तोला, काली मिर्च छः मासा ये सब दवा कूट कपड़छान करके मंजन करै, तौ दांतके सब रोग पीड़ा इत्यादिक दूर होयँ.

तथा:-

जराई हुई सुपारी एक तोला, पीली हर्रकी छाल एक तोला, इन्द्रायनका मग़ज एक तोला, गुलाबके फूल एक तोला, गुलनार तीन मासा ये सब दवा कूट कपड़छान करके मंजन करै, तो दांतके सब रोग दूर होयँ. दांतकी पीड़ा तथा दाँतोंका हिलना, दांतमें कीड़ा पड़जाना इत्यादिक ये सब रोग दूर होयँ.

तथा.

खट्टे अनारके छिलके दो तोला ग्यारह मासे, शुद्ध फिटकरी दो तोला चार मासा, अकरकरा सात मासा, गुलाबके फूल सात मासा, माजूफल सात मासा

ये सब दवा कूट कपड़छान करके मंजन करै.तो दांत-की पीड़ा, कीड़ोंका पड़ना तथा हिलना मिटै और दांत मजबूत होयँ. कभी न हिलें, दांतके सब रोग दूर होयँ.

तथा.

काले दाँतोंको सफेद करता है, पीली हरडोंका छिलका दो तोला ग्यारह मासा, कालीमिर्च चौदह मासा, अनारका चूरण दश मासा, तेजपात सात मासा, माजूफल जलाया हुआ दो तोला चार मासा सब दवा कूट पकड़छान कर मंजन करै, तौ मुँह दांत पीड़ा इत्यादिक सब दूर होयँ.

अथ श्वास रोगका वर्णन.

जिन वस्तुओंके खानेसे हिचकी होती है, उनहीं पदार्थोंके खानेसे श्वास पैदा होता है, वह श्वास ५ प्रकारका है-महाश्वास १, ऊर्द्ध श्वास २, छिन्न श्वास ३, तमक श्वास ४, क्षुद्र श्वास ५.

अथ श्वास रोगकी पहिचान.

हिया कनपटी दूखै, शूल होय, अफरा होय, मल मूत्र नहीं उतरै और न मुखमें रसका स्वाद आवै तब जानिये श्वासरोग होगा । इस रोगकी शांतिके वास्ते ३ चांद्रायणव्रत कर ब्राह्मणोंको भोजन जिमावै और विष्णुसहस्र नामका पाठ कराय ब्राह्मणोंकी भ-

क्तिसे पूजा करै और सोना दान दे, तो श्वास शांति होय पीछे दवा करै.

अथ श्वासका लक्षण.

जब मनुष्य श्वाससे दुखी होय,तब मस्तबैलकी नाईं लम्बे २ श्वास निरंतर लेय, संज्ञा और ज्ञान नष्ट होजाय, नेत्र तरतराट करै और श्वास लेते मुँह कट व फट जाय, बोला नहीं जावै, गरीबसा होजाय और जिसका स्वर बहुतही दूर सुनाई देय, तो वैद्यको चाहिये कि इस श्वासवाले रोगीको असाध्य जान दवा न करै (पुनः) सर्व शरीरमें पीड़ा होय और पांचों पवनोंसे पीड़ित मनुष्य ठंढी २ श्वास लेवै अथवा दुःखित हो श्वास नहीं ले. अफारा हो शरीरका वर्ण और हो जाय तो असाध्य जानो.

अथ खांसी श्वासकी दवा.

बंग १ टंक, पीपल २ टंक, हरड़की बकली ३ टंक बहेड़ेका बक्कल ४ टंक, रूस की पाती ५ टंक, भारंगी ६ टंक इन सबको कूट कपड़छान कर बबूलके क्वाथ में २ पुट दे पीछे शहद में २ पुट दे खरल कर झरबेरके बराबर गोली बाँधै १ गोली खाय तो श्वास, खांसी, क्षयी सब दूर होयँ.

शीतोपलादि चूर्ण.

मिश्री १६ तोले, वंशलोचन ८ तोले, पीपर ४ तोले, इलायची २ तोले; दालचीनी १ तोले इनका चूर्ण करके घृत शहद युत खावे तो कास, श्वास, क्षयी व हस्त पाद अंग की दाह, मन्दाग्नि, जीभका जकड़ना, पशुली शूलकी पीड़ा, अरुचि, ज्वर, ऊर्द्धगत रक्त विकार, पित्त इन सब रोगोंको नाशै शरीरकी रक्षा करै.

अथ खाँसी दमा श्वासकी दवा.

अकरकरा १ तोला, लटजीरा १ तोला, हींग १ तोला, पीपल १ तोला, चनाकी दाल भूँजी १ तोला, अफीम ६ मासे, लौंग ६ मासे सब दवा थोड़ी कूट ले फिर एक दिन मदारके दूधमें भिगोय रक्खै पीछे सेहुड़के गोजेका मगज निकालके उसमें दवा भरके मुँह बंद कर सात सेर कण्डोंमें फूंक देय जलने न पावै फिर निकाल खरल करि चना बराबर गोली बाँधि खाय तो सब तरह का दमा, खाँसी, श्वास, क्षयी दूर होय.

अथ हुचकीकी दवा.

आँवलाके रसमें पिपर्ला, शहद मिलाय खानेसे हुचकी श्वास जावै।

अथ श्वासरोगनाशक शुंठ्यादि चूर्ण.

कचूर, कमलकंद, गिलोय, दालचीनी, नागरमोथा, पुष्करमूल, तुलसी, भूमिआँवला, इलायची, पीपल, कालाअगर, सुंठि, भीमसेनी कपूर ये सब दवा समान ले चूर्ण बनाय दुगुनी खांड़ मिलाय खानेसे हिचकी श्वासको हरै.

अथ भारंगी गुड़ श्वास पर.

भारंगी १०० तोले, दशमूल १०० तोले, हड़ बड़ी १०० तोले ले १२०० तोले पानीमें दवा डाल चुरावै जब ३०० तोला शेष रहै तो कपडासे छान-के ४०० तोले गुड़ मिलाय फिर चुरावै, जब अवलेह होय जाय तब उतारिके ये दवा डाले, शहद २४ तोले, सोंठ ४ तोले, मिर्च ४ तोले, पीपल ४ तोले, दालचीनी ४ तोले, इलायची ४ तोले, तमालपत्र ४ तोले, यवा-खार २ तोले इनका चूर्ण कर मिलायके २ तोले खानेसे ५ प्रकारके श्वास, ५ प्रकारकी खांसी, बवासीर, अरुचि, गुल्म, अतीसार, क्षयीको हरै और स्वर, वर्ण अग्निको बढावै. यह भारंगीगुड़ संसारमें विख्यात है.

श्वास खांसी नाशक वसन्तराज रस।

त्रिकुटा, त्रिफला, लोहारस, कुटकी हर्र, अफीम, धतूरे के बीज, शुद्ध गुजराती इलायची, चिरायता, कपूर,

लौंग, जायफल इन सबको बूकि कपड़छान कर महिं-
जनेके रसमें ४ पहर घोटै यह वसन्तराज रस है.
पाँच प्रकारके श्वास व पाँच प्रकारकी खांसीको नाश
करै और स्वरभंगको दूर करै. इसका गुण बहुत है
(पुनः) शुद्ध पारा ६ मासे, गन्धक ६ मासे, शुद्ध
मैनशिल ६ मासे, मिर्च ६ मासे, पीपल ६ मासे
सब कूट कपड़छान करिके पानीमें गोली बनाय
खानेसे सब प्रकारके श्वास, खांसी नाश होयँ.

अथ दमा व खांसीका इलाज.

सेहुँड़के पत्तोंका रस, धतूरके पत्तोंका रस, मदारके
पत्तोंका रस ले प्रथम सेहुँड़ व मदारके पत्तोंको अग्निपर
गरम करिके रस निकालै, सबका रस पाव पाव भर
लेवै, फिर अरूसके पत्ता डेढ़पाव, एक सेर दूधमें
चुरावै, जब तीनभाग जलजाय एक भाग रहै तब
छान लेवै फिर सब रस इकट्ठा करिके चुरावै जब रस
गाढ़ा होजाय तब, पीपल, लौंग, सोहागा, छोटी इला-
यची, अफीम, सोंठ ये सब दवा एक तोला ले कूट कपड़-
छान करिके रसमें मिलाके चना बराबर गोली बाँधे
खुराक एक गोली शामको और एक सबेरे खाय तो
खोकला, खांसी, दमा इत्यादि सब रोग दूर होयँ.

तथा.

मिर्च, पीपल, सोंठ. इलायची चार २ तोला, गुड़ आठ तोला ले सबका एकमें चूर्ण बनायके सबेरे एक तोला खाय तो सब तरहका दमा, खांसी, खोकला, श्वास फूलना दूर होय.

तथा.

शंखकी खाक छः मासे, पानके बीड़ामें खाय तो खांसी दूर होय. मदार व धतूरके पत्ता एक २ सौ, काला नमक पावभर लेकर एक हंडीमें रखके फूंक देवै भस्म होनेपर अदरखके रसके साथ खाय तो खाँसी, दमा और खोकला इत्यादिक रोग दूर होयँ.

तथा.

शुद्ध शंखिया एक तोले, शुद्ध चौकिया सोहागा एक तोला, दोनोंको एकमें मिलाकर अदरखके रसमें एकदिन खरल करै फिर बजरीके समान गोली बांधकर दूधके साथ एक शाम और एक सबेरे खाय तो खाँसी, दमा, इत्यादि रोग दूर होयँ.

तथा.

शुद्ध कुचला सवा तोले, मन्दार और अरूसेके पत्ता एक २ सौ, साँभर नोन अढ़ाई तोला, पीपल अढ़ाई तोला, पीपरामूल अढ़ाई तोला, सोंठ सवादो

तोला,अजवाइन दो तोला, काली जीरी सवादो तोला ये सब दवा एक हंडीमें भरके गजपुटआँच दे जब भस्म होय तो चाररत्ती पानके साथ खाय तो श्वास, खाँसी, दमा इत्यादिक सब रोग दूर होयँ.

अथ उदररोगका वर्णन.

उदररोग ८ प्रकारका है सो लिखते हैं,मंदाग्निवालेके निश्चय होय और अजीर्णसे खराब वस्तुके खानेसे वात पित्त कफके कोपसे उदररोग उत्पन्न होता है सो अलग अलग लिखते हैं-वातका १, पित्तका २,कफका ३, सन्निपातका ४, प्लीहाका ५, मलबंधका ६. चोट लगनेका ७, जलोदर ८, ऐसे आठ प्रकारके हैं अब अलग २ लक्षण सुनो.

अथ वातोदर लक्षण. १

जिस पुरुषके हाथ पैर नाभिमें सूजन होय, कुक्षि पशुली कटि पीठी संधिमें पीड़ा होय और रूखा खांसे, शरीर भारी रहै, मल उतरै नहीं, शरीरकी खाल नख नेत्र काले पड़ जावैं, पेटमें पीड़ा और अफरा हो, पेट बोलाकरै ये लक्षण वातोदरके हैं.

अथ पित्तोदर लक्षण २.

ज्वर मूर्च्छा दाह तृषा होवै, मुख कडुवा हो, शिर घूमै, अतीसार हो, शरीरकी खाल पीली हरी होय

और पसीना आवै, डकार खराब आवै ये सब रोग होयँ तो पित्तोदरका लक्षण जानो.

अथ कफोदरका लक्षण ३.

जिसके शरीरमें पीड़ा होय और बहुत सोवै, शरीरमें सूजन हो, सब शरीर भारी रहै, हिया दूखे, भोजनमें अरुचि हो, देरमें पचै, शरीर ठंढा रहै, पेट बोला करै ये सब लक्षण कफोदरके हैं.

अथ सन्निपातोदरलक्षण ४.

खराब जिनसोंके खानेसे उदर में नानाप्रकारके रोग पैदा होते हैं. मूर्च्छा, मोह, पांडु, शोष, तृषा हो तो सन्निपातोदरका लक्षण जानो.

अथ प्लीहोदरका लक्षण ५.

गरम वस्तुके खाने पीनेसे दुष्ट रुधिरसे कफके जोरसे प्लीहाको बढ़ावै है, पीछे बढ़ा प्लीहा बाईं पसुलीमें रोग और तिल्लीको उत्पन्न करै हैं; इस रोगमें मनुष्य पीड़ित होयके बहुत दुःख पाता है। मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, कफ, पित्त उपजै, बल जाता रहै, शरीर पांडुवर्ण होजाय ये लक्षण प्लीहोदरके जानो.

अथ मलबंधसे यकृतोदर लक्षण.

दहिनी पासुके नीचे और नाभिके ऊपर मांसका पिंडसरीखा बिकार उपजै तिसे यकृत रोग

कहते हैं, इस रोगको यकृत् गोलाका लक्षण जानो.

अथ छतोदरका लक्षण.

जो मनुष्य कच्चा अन्न खाय और बाल कंकड रेत धूलसे मिले हों, मलका संचय हो, कष्टसे थोरा मल उतरै, हृदय नाभि बढ़ जावै तिसको बद्धगुदोदर तथा छतोदर भी कहते हैं.

अथ जलोदरका लक्षण.

घृतको खाय, बस्ति कर्म कराय, जुलाब ले, वमन करके शीतल जलको पीवैं, इससे जलकी बहने वाली नसें दूषित हो स्नेह करिके लिपी जलोदरको उत्पन्न करै हैं और उस शीतल जलसे उत्पन्न हुआ जलोदर नाभिके पास गोल और चीकना होय, पानी भरी मसकके समान बहुत बढ़ै तब मनुष्य उससे बहुत दुःखी हो और उसका शरीर कांपै और पेट बारंबार बोलै ये लक्षण जलोदरके हैं, असाध्य जलोदररोगीको त्याग करै, और इस रोगवाले रोगीकी सँभारिकै दवा करै काहेसे कि इस रोगीका जीना कठिन है और रोगीको खराब चीजके खानेसे बचाये रहै. तीन महीनाके बाद थोरा अन्न दूधके साथ देय तो ६ महीना तथा एक वर्षमें जलोदर दूर होय.

अथ वातोदरकी दवा.

पीपल, सेंधानमक पीस एकमें मिलाय तक्रके साथ खाय तो वातोदर जाय.

पुनः दूसरी दवा, कुष्ठादि चूर्ण.

कूट, जयपाल, जवाखार, सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधालोन, मणियारीनमक, कालानमक, वच, जीरा, अजवायन, हींग, साजीखार, चीता, चाव इन्होंका चूर्ण करके गरम पानीके संग खानेसे वातोदर नाश होय.

अथ पित्तोदरकी दवा.

इस रोगमें बलवान पहिले दूधमें निसोतका कल्क और अरंडीका तेल मिलायके पिये तो पित्तोदर दूर होय.

दूसरी दवा.

निसोत व त्रिफलाका काढ़ा कर घृत डारि पीनेसे पित्तोदर नाश होय

अथ कफोदरकी दवा.

सोंठि, मिर्च, पीपल, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा बनाय गोमूत्र और अरंडीका तेल मिलायके पीनेसे कफोदर दूर होय.

पुनः दूसरी दवा.

लोहचूर्ण, अरंडीका तेल दूधमें कुछ दिन पीनेसे कफोदर नाश होय.

अथ सन्निपातकी दवा.

हर्र निर्गुंडीका गोमूत्रमें कल्क बनाय खानेसे संपूर्ण उदररोग, तिल्ली, बवासीर, कृमि, गुल्मको नाश करै.

पुनः दूसरी दवा.

नागरादि तैल ६४ तोले, सोंठि ६४ तोले, त्रिफला ६४ तोले, घृत २५६ तोले, सबको एकमें मिलाय २ तोला दहाके संग खानेसे संपूर्ण उदररोग, कफोदर, कफगोला, वायुगोला नाश होयँ.

अथ प्लीहोदरकी दवा.

स्नेह (स्निग्ध) जुलाब तिल्लीमें हित है और बायें हाथकी कोहनीके अभ्यंतरवर्ती जो नाड़ा है तिसमें फस्त खोलानेसे यकृत रोग नाश होय और उस नसको अग्निसे दाग दे तो प्लीहा दूर होय, पीपलीमें शहद, तक्र मिलाय पीनेसे भी प्लीहा नाश होय, हुरहुरका पंचांग ८ तोला ले मिर्च ८ तोले मिलाय खल करके ६ मासेकी गोली बनाय शाम सबेरे खानेसे प्लीहा नाश होय और शुद्ध बच्छनाग चौकिया

सोहागामें खल करके पहिले दिन दो सरसोंसे बीस सर-सों तक देइ रोगीका बल देखिके और आधासेर दूध-के साथ सेवै तो सब उदररोग नाश होयँ, जैसे सिंह हाथीको मारै तैसे यह दवा उदररोगको मारती है.

अथ जलोदरकी दवा.

जलोदरमें बारंबार जुलाब दे जिससे मलविकार दूर होय अथवा काबुली हर्रोंका चूर सेंधानमक गोमूत्रमें पीनेसे जलोदर नाश होय, अथवा पीपलका चूर्ण थूहरके दूधमें भिगोय खानेसे जलोदर नाश होय, अथवा 'आनन्दभैरवरस' दूधके साथ कुछ दिन सेवनेसे जलोदर नाश होय, अथवा नीलाथोथा, गन्धक, पिप्पली हर्र सब बराबर ले कूट कपड़छान करि थूहरके दूधमें ९ दिन खल कर फिर अमिलतासके काढ़ामें ९ दिन खल करि १ मासा नित्य गरम पानीके संग खाय तो जलादर तथा सम्पूर्ण उदरके रोग जायँ. पथ्य अधिक चावल ही खाय. इमलीका शर्बत पिये, ऊपरसे पानका बीरा खाय तो बहुत फायदा होय.

जलंधरवाले रोगीकी तस्वीर देखना इसी तरहसे पेट सूजता है. इस रोगीको बहुत सँभारना चाहिये. खट्टा, मिट्ठा और तीतासे बचना चाहिये और जलदीही दवा करै नहीं तो असाध्य हो जाता है सो पीछे बहुत दुःख देता है, सो दवा अच्छी २ लिखी है, दो दवा और लिखते

हैं. शुद्ध शंखिया १ तोला, रेवलचीनी ९ मासे, जदावर खटाई ९ मासे, अकरकरा ९ मासे, सफेद कत्था २ तोले सब दवा कूट कपड़छान करके अदरखके १ सेर भर रसमें खल कर मूँग बराबर गोली बाँधे. एक गोली खानेको दे तो रोग दूर होय (पुनः दवा) पीपल, मिरच, सोंठि, पांचोनोन, सोहागा, सज्जी सब दवा बराबर ले और दवाके बराबर जमालगोटा ले प्रथम दवाको कूटि कपड़छान करिके दात्वणीके रसमें ३ पुट दे फिर बिजौराके रसमें ३ पुट दे खरलकर छायामें सुखायके फिर आधा रत्ती रस खानेको दे तो उदररोग, प्लीहा, गोला, जलधर इत्यादि सब रोग हरे परन्तु ब्राह्मणको बुलाय प्रायश्चित्त पूजा पाठ जप करावै पीछे भोजन दान दे तो रोग शांति हो और सोनेका कलश व कुबेरकी मूर्ति बनाय पूजा करै तो पूर्व जन्मका पाप नाश होय रोगी जीव.

अथ उदररोगका इलाज

वाईका फिसाद और कच्चा भोजन करनेसे उदरमें पीड़ा होती है (दवा) पानी गर्म कर नोन मिलाय पिलावै तथा उलटी करावै और जबतक भूख न लगे तबतक भोजन न देवै जब शरीर और पेट हलका हो जाय तब खानेको देवै तो सब दुःख दूर होय पीड़ा शांति होय.

अथ उदरका दूसरा इलाज.

सनायकी पत्ती, हड़, बहेडा, आँवला, कालानमक

सब बराबर लेकर कूट कपड़छान करके नींबूके रसमें गोली बाँध एक गोली शाम और एक सबेरे खाय तो पेटकी पीड़ा, वात, पित्त, कफ,संग्रहणी, आँवका परना, इत्यादि रोगोंको दूर करै. और आठ दिन सेवन करनेसे मनुष्य निरोग होजाता है. भूख बहुत लगती है और मन प्रसन्न होजाता है.

तथा.

सोंठिकी कतरी उदर व कलेजेकी पीड़ा तथा शर्दीको दूर करती है, अन्नको पचाती है. यदि अदरखके रसमें खिलावे तो दस्त बन्द होयँ. कब्जियत दूर होय.

दस्त बन्द करनेकी दवा.

हींग, जहरमोहरा खताई, मिरची, अफीम ये सब दवा बराबर ले खलमें खल करै फिर चना बराबर गोली बाँधै एक गोली नींबूके रसके साथ खाय तो संग्रहणी वातको शांति करै, सब प्रकारके उदररोग दूर होयँ.

तथा.

अफीम साढ़े तीन मासा, अकरकरा सात मासा, झाऊके फूल चौदह मासा, सामक चौदह मासा, हुबुलास चौदह मासा, लेके बबूरके गोंदके रसमें दो मासाके बराबर गोली बाँधै एक गोली खाय तो दस्त एक घंटामें बन्द होय.

तथा.

पीपर एक तोला, हड़ एक तोला, पाँचो नमक एक एक तोला यह सब दवा जम्हीरी नींबूके रसमें खल कर दो मासाके बराबर गोली बाँधै एक गोली खाय तो दस्त बन्द होय. अजीर्ण दूर होय, वायु शूल जलंधरादि रोगोंको बहुत गुणदायक है, वाईको पचाता है, भूंखको लगाता है.

अथ पाचककी गोली.

मन्दारके मुँह मुँदे फूल चार तोला, काली मिर्च चार तोला, कालानमक चार तोला, ये सब दवा एकमें मिलाके खल कर बेरके बराबर गोली बाँधै एक गोली शामको और एक सबेरे खाय तो शूल वायगोला इत्यादिक रोग दूर होयँ.

अथ संग्रहणीकी गोली.

शुद्ध सोहागा, शुद्ध सिंगरफ ये दोनों दो दो मासे अफीम चार मासे ले खल करके मिर्च बराबर गोली बाँधै, जो रातको दस्त बहुत होता होय. तो शहदके साथ एक गोली खिलावै और जो दिनको दस्त होता होय तो एक एक गोली नींबूके रसके साथ खिलावै तो सब तरहकी संग्रहणी वायु दूर होय. दस्तको रोके.

संग्रहणीकी दूसरी गोली.

कफके दस्तको बन्द करै, पाचक है, काली मिर्च

सोंठि, पीपर. लौंग, अकरकरा सब दवा साढ़े तीन २ मासे, अफीम सात मासे ले अदरखके रसमें चना बराबर गोली बांधै फिर एक गोली सांझ और एक सबेरे खानेको दे तो कफ दस्तसे उत्पन्न सब रोगोंको दूर करै.

अजीर्णका चूर्ण.

हड़, पीपरि, सोंचरनमक, वच, हींगबराबर२ले कपड़छान करिके दो टंक पानीके साथ खाय तो अजीर्णजाय.

अजीर्णका दूसरा चूर्ण.

हींग एक टंक, बच २ टंक, बिड़नमक ३ टंक, सोंठि ४ टंक, जीरा ५ टंक, हड़ ६ टंक, पोहकर मूल ७ टक, कूट ८ टंक ये सब दवा कपड़छान करिकै सात मासे गर्म पानीके साथ खाय तो अजीर्ण और मूर्च्छा, वायगोला इत्यादिक दूर होयँ.

अजीर्णका चूर्ण. (अग्निमुख)

हींग. बच, पीपरि, सोंठि, अजवाइन, चित्रक, कूट सब दवा बराबरि ले कपड़छान करिके छः मासे गर्म पानीके साथ खाय तो चारप्रकारका अजीर्ण, प्लीहा, कोढ़. खाज, खांसी, गोला, शूल, मन्दाग्नि जायँ.

कृमि रोगका चूर्ण.

वायविडंग, सेंधानमक, जवाखार, कसीला, हर्रे सब बराबर ले कपड़छान करिकै गायकी छाँछमें दो टंक खाय तो कृमिरोग दूर होय.

पांडु रोगका इलाज.

त्रिकुटा, तज, बरकी गुठुली, मिर्च, सोनामाखी ये सब दवा बराबरि ले कूट कपड़छान करिके शहदमें ४ टककी गोली बाँधै एक गोली सबेरे छाँछके साथ खाय तो पांडुरोग तथा उदररोग दूर होय.

वातका तीसरा चूर्ण.

त्रिफला, नागरमोथा, अतीस, कोरैयाकी छाल, सेंधानमक, हींग ये सब दवा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके छः मासे गरम पानीके साथ खाय तो वातातीसार और पेटकी पीड़ा दूर होय.

अथ अतीसारकी दवा.

पीपलामूल, गजपीपर, पीपर, बेलगिरी, सोंठि, राल, शिलाजीत, चित्रक ये सब दवा बराबर ले कूट कपड़छान कर दो टंक खाय तो आमातीसार व वातातीसार इत्यादिक दूर होयँ.

पित्तातीसारकी दवा.

इन्द्रयव, बेलगिरी, अतीस और धौके फूल, रसौत, सोंठि, मुलहठी यह सब दवा पीसकर छानके चूर्ण बनावै जो यह चूर्ण ४ मासे साठीके चावलके साथ खाय तो उदरके सब रोग दूर होयँ.

अथ कफातीसारकी दवा.

कालानोन, सेंधानोन, हींग, हर्रै, बच, अतीस ये सब

दवा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके २ टंक गर्म पानीके साथ खाय तो सब तरहका उदररोग दूर हो.

अथ चौहारम चूर्ण.

सिहोरके पत्ता एक पैसा भर, बबूरके पत्ता एक पैसा भर, आंवलाके पत्ता एक पैसा भर, तुलसीके दल दो पैसा भर, सबके पत्ता सुखा लेवे फिर जवाखार एक पैसा भर, सज्जीखार एक पैसाभर और पांचोंनोन एक २ पैसा भर, पीपर डेढ़ पैसा भर, मिर्च डेढ पैसा भर, नागरमोथा डेढ़ पैसा भर, ये सब दवा कूट कपड़छान करके छः मासे चूर्ण पानीके साथ खाय तो हड़ज्वरी, वाय, पेटका फूलना, शूल दूर होय, भूख लगै सब प्रकारका उदररोग दूर होय.

अथ सुनबहरीकी दवा.

गुड़ पुराना एक सेर, नींबीके पत्ता एक सेर, नींबीके फूल एक सेर, नींबीकी छाल एक सेर ये सब दवा एक घड़ामें भरके आधामन पानी डारके पन्द्रह दिनके पीछे खानेको दे खुराक एक तोला.खुरासानी अजवाइन के साथ और तिरसठदिन खाय तो सुनबहरी दूर होय.

अथ सुनबहरीका लेप.

काष्टक एक रत्ती ले पानीमें घोरि लेप करै तो सुनबहरी जाय.

अथ नामर्द अर्थात् वाजीकर्णका वर्णन.

वाजीकर्ण इसको कहते हैं जो पुरुष देखनेमें मोटा और पुष्ट होय पर नामर्द होय, नामर्द सात प्रकारके होते हैं उनकी उत्पत्ति लक्षण लिखते हैं.

(१) लौंडेबाजी तथा हथरस करना, कडुई वस्तु और अधिक खटाई खाना, गर्म, नोन खाना इन सब चीजोंको अधिक खानेसे आदमी नामर्द होजाते हैं. शोक और क्रोधके करनेसे भी बीर्यका नाश होता है. स्त्री धन पुत्र आदिके नाश होनेसे भी नपुंसक होते हैं. इन्द्रीमें नख लगनेसे तथा वात पित्त कफके कोपसे इन्द्रीकी नसें सूख जाती हैं वह पुरुष नपुंसक होजाता है,यदि इसका दिलचला और स्त्रीके पास गया तो काम नहीं होता और बुद्धि नष्ट होजाती है. बल जाता रहता है तब दशों इन्द्रियोंमें रोग पदा होता है इसलिये इसके वास्ते बहुत अच्छी अजमाई हुई दवाई लिखते हैं.

अथ नामर्दकी दवा, सेंक.

हाथी और मछलीके दाँतका चूर्ण चार२तोले,लवग ८ मासे, जायफल दो नग, जंगली प्याज एक नग ये सब दवा कूट कपड़ छान करके दो पोटरी बनावै तब भेड़का दूध १० तोले लेकर एक हंडीमें भरै और उसको परईसे ढांक मट्टीसे ताय आग पर रक्खे. परईके बीचमें एक छोटा छेद करै

तब जो वाफ परईके छेदसे निकले उसपर वह पांटरी रक्खे, जब पांटरी गर्म होय तो १ घंटा जघा और पेडूतक चार दिन सेंके ऊपरसे बंगलापान गर्म करके इन्द्री पर बाँधै और पानीसे नहाना त्याग करे.

सेंकके पीछे लेप.

सफेद कनेरकी जड़, जायफल, अफीम, इलायची गुजराती, सेमरके छिलका ये सब दवा छः२मासे लेकर कूटकर कपड़छान करके तिल्लीके १ तोला तेलमें मिलाय गर्म कर तीन दिन इन्द्रीपर लेप करै तो उसकी इन्द्रीमें जरूर जोर होगा पर परहेज ऐसा करना कि जिस तरह मुर्गी अपने अंडेको४०दिन प्रमाण सेवती है.

लेपके ऊपर खानेकी दवा.

नामर्द होनेसे आदमीकी धातु फट जाती है, सुजाक होजाता है, पीब बहने लगता है (दवा) मुसरी स्याह,असगंधनगौरी,गुलधवा,चना भूँजा हुआ,वैदरा सोंठि, उटंगनके बीज, गाजरके बीज, पोस्ताके फल, तालमखाना ये सब दवा एक २ तोला ले और सब दवाके बराबर मिश्री मिलायके एक तोला सबेरे खाय ऊपरसे आधा सेर दूध पीवै.

इसके खानेके पीछे दूसरी दवा खानेकी.

चिलगोजाके बीज, खसखस, सफेद स्याह मुसरी, कुलंजन, लवंग फुलवाली, सालममिश्री, जावित्री,

मोगली तालमखाना, छोटा बीजबन्ध, ब्रह्मदंडी, दालचीनी ये सब दवा चार चार तोले ले और काकंज ९ मासे ये सब दवा कूट कड़छान करके आधा सेर मधुमें मिलाय दो मासे शाम और दो मासे सबेरे खाय और परहेजसे रहे तो नामर्दी, नपुंसकी जाती रहे और अतुल बल होवे.

सेंक दूसरा.

बीरबहूटी, केंचुआ सूखा, असगंध नगौरी, जरबचोप, आंबाहलदा, भूँजा चना ये सब दवा छः २ मासे ले कूट कपड़छान करके गुलरोगन डारके खल कर दो पोटरी बनावे फिर चूल्हे पर तवा रख मधुरी आँचसे १ घंटा सेंके चार दिन तक सेंके ऊपरसे बँगला पान गर्म करके बाँधै. नहाय नहीं.

सेंकके ऊपर लेप.

अकरकरा दक्षिणी, बीरबहूटी दो २ मासे और लवंग २० नग, बकराका गोश्त १० तोले ये सब दवा खल करके इन्द्रीकी मोटाई प्रमाने एक लकड़ी लेवे उसमें दवा लगावै जितनीबड़ी इन्द्री हो उतनी लकड़ी तक दवा लगावै और उस लकड़ीको आगपर सेंकै जब थोड़ा कड़ी होजाय तो लकड़ी परसे ज्योंका त्यों निकाल कर या आध आध फारके निकाल कर वैसे ही दवाई इन्द्रीपर चिपका देवे और पानीका परहेज रक्खे

घीकुवारि योग लेपके ऊपर.

घीकुवारिका गोझा, गेहूँका आटा, कपासके बीज, शक्कर, घी ये सब दवा एक २ सेर लेकर दवा कूटै फिर शक्करकी चासनी कर उपरोक्त दवा घीमें जुदी २ भूँज उसी चासनीमें छोड़ दे पीछे ये दवा और मिलावै. गोखुरू ९ तोले, पिस्ता ७ तोले, सफेद खोपड़ा ७ तोले, चिलगोजा ७ तोले, ये सब कूटके मिलायके योग तय्यार करै तब पाँच तोले सबेरे खाय और पीछे आधा सेर दूध पीवै परहेज खट्टा मीठा बचावै.

अथ नामर्दीके दूर करनेका तेल.

शेरकी चरबी, मालकांगनी, अकरकरा, बीरबहूटी, सोंठि, जावित्री, जहर, कुचिला, दालचीनी, लोहवान कौड़िया, लवंग, वच्छनाग, हरताल तबकी, जायफल, जमालगोटा, पारा, हाथीका दाँत, गंधक, अँवरासार, भटकटैया, घूँघची सफेद, केचुआ, सफेद कनेरकी जड़, खुरासानी अजवायन, पियाजका बीज, इसबन्द, शंखिया सफेद, रेंड़ीका बीज, कालीजीरी ये सब दवा चार २ तोले और पाँच मुर्गीके अंडाकी सफेदी मिलायके अग्नि कांच सीसीमें भरके पाताल यँत्र से

तेल निकाल लेय और ६ मासे प्रमाण ४० दिन इन्द्री पर लेप करै. पानीसे न नहाय तो नामर्दी और नपुंसकी दूर होय और स्त्रीभोगकी शक्ति होवे.

यह पाताल यंत्र है.
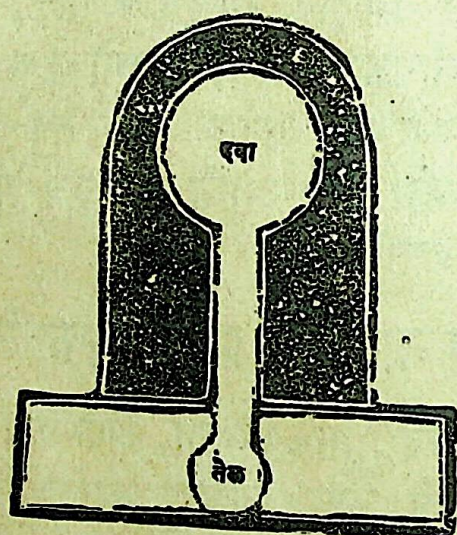
इस यंत्रसे तेल निकाला जाता है.

१ अथ इन्द्रियका लेप.

लोहवान अच्छा १० टंक लेकर करौंदाके रसमें खल करै फिर चार तोले घीमें खलकर गोला बनाकर पातालयंत्रसे तेल निकालकर पहले इन्द्रियको हरदी

मले फिर तेलसे मलै, तब गरम गरम पानका पत्ता बाँधै, तो पन्द्रह दिनमें नामर्द मर्द होय.

२ लेप.

समुद्रफेन, देवदारु, हरदी, मुलहठी, शहद, सब बराबर ले गदहाके पेशाबमें घिस लेप करै, तो इन्द्रिय निश्चय बड़ी होय.

इन्द्रियका सेंक.

नगौरीअसगंध, केचुवा, बीरबहुटी, आंबाहल्दी, भूँजाचना सब बराबर लेकर गुलाबका तेल मिलाय पोटरी बनाकर सेंके, तो सब दुःख दूर होय.

१ दवा नामर्दकी.

गोखरू तीन टंक, स्याहतिल तीन टंक, दोनोंको कूट कपड़छान करके एकसेर दूधमें मिलाकर चुरावै, जब खोवा होजावै तब खाय। इसी विधिसे इक्कीस तथा बयालीस दिन खाय, तो नामर्द मर्द होय.

२ दवा दूसरी.

अकरकरा एक टंक, केसर दो टंक, जायफल तीन टंक, लौंग तीन टंक, सिंगरिफ छः टंक, अफीम दो टंक ये सब चीजें एकमें मिलाय बराबर खरल करके मधुमें चना बराबर गोली बाँधै शामको एक गोली खाय और ऊपरसे एक सेर औटाया हुआ दूध पावै तो बंधेज होय.

बंधेजकी गोली.

केसर, लौंग, जावित्री, जायफल, खपरिया, अजमोदा, माजूफल, समुद्र शोष, मोटकी जड़, मस्तंगी, कुलंजन, अफीम, सिंगरिफ, बत्सनाग, कस्तूरी, कपूर, सब वस्तु बराबर लेकर कूट छान मधुमें गोली बाँधकर मटर सम छोटी गोली बनावै और एक गोली शामको खाय ऊपरसे एकसेर औटा दूध पीवै तो बंधेज होय.

१ नामर्दकी दवाई.

सफेद घुँघुची, खिरनीके बीज, लौंग सब पाव पाव भर लेकर कूटकर सीसीमें भरके पातालीयंत्रसे इसका तेल निकालके एक सींक निकालके पानमें खाय । ऊपर एक छटांक घी खाय और दो सींक खाय, तो दो छटांक घी खाय, तो नामर्द मर्द होय.

२ तथा.

तालमखाना ४ तोले और नगद बावची ४ तोले, इसबगोल ४ तोले और इमलीका चीया ४ तोले, बीजबंध ४ तोले, कौंचबीज ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले बबूलका गोंद ४ तोले ये सब चीजें एकमें मिलायके कूट कपड़छान करके घी ३६ तोले लेकर गुड़ पुराना अच्छा ३६ तोले लेकर एकमें मिलायके तीन दिन पीछे खाय परहेजसे रहै, तो २१ दिनमें पुष्ट होय मर्द होय.

छोहारा पाककी विधि.

छोहारा १० टंक, पिस्ता ४ टंक, जटामासी (बालछड़) २५ टंक, केबाँचके बीज २५ टंक, तेजपत्र २५ टंक, नागकेसर २५ टंक, बदाम ४ टंक, जायफल २५ टंक, दालचीनी २५ टंक, केसर २५ टंक, चब २५ टंक, सोंठ २५ टंक, कमलगट्टा २५ टंक, चिरौंजी २५ टंक. जावित्री २५ टंक, ये सब दवा ले कपड़छान करके तब २ सेर दूधका खोवा करके खोवामें अढ़ाई सेर मिश्री और १६ तोले घी डालके तब सब दवा उसमें डालके अच्छी तरहसे मिलाकर अबरख रस, लोहारस, बंगरस ये रस एक एक तोले लेकर येभी उसी दवामें मिलावै और लड्डू बाँधके खाय तो पुष्ट होय. सौ स्त्रीसे भोग करै, बल न घटै.

सोंठपाक विधि.

सोंठ पाँच सेर लेकर चूर्ण करके गायका घी ५ सेर डालके भूँजिले फिर २५ सेर दूध औटावै। जब आधा रहजाय, तो चूर्ण डालके मिलावे जायफल ८ टंक, जावित्री ८ टंक, लौंग ८ टंक, त्रिफला २० टंक. जीरा दोनों १६ टंक, मिर्च ८ टंक, इलायची ८ टंक, नागरमोथा ८ टंक, भीमसेनी कफूर ४ मासे, छोहारा २० टंक, विदारीकंद ८ टंक, सतावरी ८ टंक, लसोढ़ा

८ टंक, केसर ८ टंक, दालचीनी ८ टंक, सालम मिश्री ८ टंक, मस्तंगी ८ टंक, वंशलोचन ८ टंक, नारियलकी गिरी ८ टंक, बदामकी गिरी ८ टंक, चिलगोजे ८ टंक, पाषाणभेद ८ टंक ये सब दवा पीसकर मावामें मिलाके अबरखरस, बंगरस, सोनारस, चांदीरस, एक एक तोले डालके मिलाकर तीन तोले रोज सबेरे शामको खाय तो सुन्दररूप होय। शरीर शोभायमान होय और शरीरभरका रोग दूर होय, बल अतुल्य होय वीर्य चढै.

असगंध पाक विधि.

असगंध ४० तोले, सोंठ २० तोले, पीपर १० तोले, मिर्च ४ तोले, दालचीनी ४ तोले, इलायची ४ तोले, तमालपत्र ४ तोले, लौंग ४ तोले. ये सब दवा कूट कपड़छान करके दूध २०० तोले चुरावै। जब आधा दूध रहजाय तो मधु १०० तोले, मिश्री १२० तोले, गायका घी ५० तोले, ले चूर्णमें मिलायके अच्छी तरहसे रक्खै और पीपरी, जीरा, गिलोय, लौंग, तगर, जायफल, बाला, काला चन्दन, खिर्नी, कमलगट्टा, धनियां, धौकाफूल, वंशलोचन, आमला, कैथ, सोंठ, कपूर, असगंध, चीता, सतावरी ये सब दवा छः छः मासे लेकर कपड़छान कर मावामें मिलावै और पाक तय्यार करे. सोनारस, चांदीरस, अबरख रस. तांबारस, हरतालरस, सब

मिलायके खुराक दो तोले या तीन तोले खाय और एक महीना सेवन करै, तो खाँसी, श्वास, दमा, बीस परमा, अस्सी शूल, चौरासी वायु सब रोग हरै। शरीर फूलके समान होय और बल अतुल्य होय. पुष्ट होय. इसका गुण वर्णन करने योग्य नहीं है.

पुष्टाईका पाक.

बड़ा गोखरू, छोटा गोखरू, चिरैया कन्द, कामराज, मुस्ला सफेद, मुसली स्याह, सेमरका मुसरा, तालमखाना, घुलमखाना, नागौरीअसगंध, बीजबंध, गुरुचका सत, सफेद तुदरी, बड़ी इलायची, मिर्च, दालचीनी, कवचबीज दो २ तोले ले फिर दवा सफेद बहिमन, लालबहिमन, मस्तगी, शकाकुल मिश्री, सालममिश्री, उटंगन, सुरियाली तावाखीर, तजबल, इमलीका बीज वंसलोचन, गुजराती इलायची, बेनउरका बीज, विही दाना, सब एक एक तोले ले बबूल गोंद पाव भर, गरी एक टंक, बदाम एक टंक, पिस्ता एक टंक, छोहारा एक टंक, किसमिस एक टंक, घी अढ़ाई पाव, मिश्री अढ़ाई सेरकी चासनी कर और सब दवा कपड़छान करके उनको घीमें भूंजि ले और चासनीमें मिलाके लड्डू बाँधे एक एक लड्डू खानेको दे और खट्टा मीठा तीता वर्जित रक्खै, परहेजसे रहै तो शरीर पुष्ट हो। शरीरका रोग सब दूर हो। गुण इसका बहुत है.

आंवला पाककी विधि.

अच्छा आँवला दो सेर सुखायके चूर्ण करै और फिर दो सेर आंवलाका रस निकालके चूर्णमें सुखायके तब एक सेर मधु, एक सेर घी और एक सेर मिश्री मिलायके,दो तोले रोज खाय तो सब रोग हरै । पुष्टाई होय. बल अतुल्य होय, सुवर्णके सरीखा शरीर होय.

नामर्दकी दवाई.

पारा शुद्ध १० मासे, चाँदीवरक ११ मासे लेकर भृंगराजके रसमें दो पहर खरल करै । तब एक तीतल लआवै,एकदिन भूखा रक्खै,दूसरे दिन दवामें एक तोला गेहूंकी मैदा डालके तीतलको खिलावै । तब दिन दो पीछे तीतलको मारडाले। कलिया बनायके सिका-रका मसाला डालके और घीमें तलै। मधुरी आँचसे चुरावै जब लाल हो जाय,तो एक बरतनमें रख दे और गेहूँकी रोटीके साथ खाय; तो तीन दिनमें नामर्द मर्द होय. और सब रोग हरै.

१ बीसपरमेकी दवाई.

अच्छी उरदी दश सेर लेके बीस सेर दूधमें सुखाय-के झुरावै कि फिर पीसके मैदा बनायके पावभर मैदा आधा पावघीमें भूँजै फिर एकसेर दूधमें हलुवा बनाकर मिश्री चारि तोले, इलायची छः मासे, लौंग छःमासे,

बंगरस एक रत्ती ये सब दवा डालके एक महीना खाय ता बीस परमा और सब रोग हरै.

२ तथा.

आंबाहलदी ४ तोले, आंवला ४ तोले. मिश्री ४ तोले, ये सब दवा कूट कपड़छान करके छःमासे खाय तो सब परमारोग दूर होय.

३ अथ सफेदपरमाकी दवाई

फिटकरीका रस ६ मासे,एक पके केलेमें बीस दिन खाय तो असाध्य परमा दूर होय.

४ अथ लाल परमाकी दवाई.

जसवंती और ककही दोनोंकी पाती आधे सेर पानीमें मलकर तीन तोले मिश्री डालके पीवै; ता लाल परमारोग दूर होय.

५ अथ पीले परमाकी दवाई.

इसबगोल पाव भर सामको भिगोकर सबेरे एक निंबू निचोड़ै एक तोले छःमासे मिश्री डालके पीवै, तो ग्यारह दिनमें परमा दूर होय.

६ अथ मूत्रियापरमाकी दवाई.

सांठीकी जड़,सतावरी, गोखरू,खरेटी,तालमखाना असगंध सब दश दश टंक ले मिश्री और सांठीके

चावलका चूर्ण दश दश टंक और गायके घीके साथ ६ मासे दवाई खाय, तो मूत्रपरमा दूर होय.

७ परमाकी दवाई नोनिया क्षारकी.

हरैं १० टंक, बहेडा १० टंक, आंवला १० टंक, आँबा हरदी १४ टंक, माजूफल १० टंक, मंजिष्ठ १० टंक ये सब दवा पीस छानकर ४ टंक शहदमें रोज खाय, तो नोनियां क्षार परमा दूर होय.

८ घृत परमाकी दवाई.

ग्वार पीस छानकर सात पुट गोभीके रसका देकर चूर्ण करै । जितना ग्वारका चूर्ण होय उतनी मिश्री डालके ९ टंक रोज खाय । पानीके साथ २१ दिन खाय तो घृतपरमा दूर होय.

९ बीस परमाकी दवाई.

लौंग, चित्रक, कूट, सफेद चदंन, नागरमोथा, खस, छोटी इलायची, अगर काला, वंशलोचन, असगंध, सतावरी, गोखरू, जायफल, गिलोय, निसोत, तगर, नागकेसर कमलगट्टा, इन सब दवाओंके बराबर मिश्री मिलाकर तीन टंक सबेरे खाय, तो बीसपरमा दूर होय.

१० बीस परमाकी चंद्रप्रभाकी गोली.

लोहासार तीनटंक, जायफल, लौंग, जावित्री, छोटी इलायचा, अकरकरा, दालचीनी, त्रिकूट, केसर, चीता

असगंध, नागौरी, सतावरि, गोखरू, यह सब दवा दो२ तोले ले और मिश्री ९० तोले लेकर सब दवा एकमें खल करके दो टंककी गोली बाँधकर एक गोली सामको और एक गोली सबेरे खाय तो बीस परमा दूर होयँ.

अथ गंधक योग.

शुद्धगंधक १ तोला गुड़के साथ खाय, ऊपरसे दूध पीवे, तो बीस परमा अठारह दिनमें दूर होयँ.

अथ शिलाजित योग.

शिलाजित मिश्री दूधके साथ खाय तो सब परमा २१ दिनमें दूर होयँ.

अथ अबरख योग.

अबरख रस, त्रिफला, हलदी एकमें मिलाय शहदके साथ खाय, तो १९ दिनमें सब परमा जायँ.

सल्यपाक.

दूधमें संभलकी छाल सोलह तोले मन्दी आगसे चुरावे इसके पीछे ६४ तोले गुड़ मिलाकर दाल चीनी, इलायची, तालपत्र, नागकेसर, लौंग, जायफल, नागरमोथा, वंशलोचन, धनियाँ, सोंठ, पीपल, मिर्च, असगंध, हरैं, लोहा भस्म सब दो दो तोले लेकर कूट कपड़छान करिके उस दवामें डालके पाक तयार करके एक तोला रोजीना खाय तो बीस परमा जायँ, वात-

दोष, हित्र, सिररोग इत्यादि रोगोंको दूर करता है.

अथ बवासीरका लक्षण.

वात पित्त कफके कोपसे तीनोंके मिलनेपर एक खूँनी एक बादी यानी मांसवाली होती है और एक सहज अर्थात् जन्मके साथ ही उत्पन्न होती है. ये छे प्रकारकी बवासीर होती हैं. तीनों दोष त्वचा मांस वा मेदाको दूषित करके गुदा आदि स्थानोंमें मांसके अंकुर उत्पन्न करते हैं. बस उन्हीं मांसके अंकुरोंको बवासीर कहते हैं सो गुदहीमें नहीं वरन कभी कभी नाक नेत्र लिंग वा तोंदीमें भी मांसके अंकुर वा मस्से होजाते हैं ।

अथ बादी बवासीरका लक्षण.

जो हात, पैर, गुदा, मुख, वृषण, इतनी जगह शूल हो, पसलीमें शूल हो, खाजु पीड़ा बहुत होय, गुदा भारी बहुत हो तो बवासीर रोग असाध्य है.

अथ खूनी बवासीरका लक्षण.

तृषा, अरुचि, गुदामें शूल, रुधिर चलै, देह दुर्बल हो, अतिसार होय, खाजु बहुत होय, गुदाके बीच मस्सा होयँ, ये लक्षण खूनीके हैं.

अथ बवासीरका इलाज.

कलमी सोरा निसोत दोनों एकमें मिलायके

चना बराबर गोली बनावै। एक सबेरे एक सामको खाय तो सब बवासीरका रोग जाय। जो बादी होय तो फोशपर यह गोली घिसके लगावै तो खूनी वादी दोनों बवासीर दूर होयँ.

२ बवासीरका इलाज.

अच्छी सुर्ती, अच्छा चूना, अच्छा गुड़ मिलायके अग्निपर दवा रखके बादी बवासीरको धूवाँ दे तो दूर हो-

अथ खूनी बवासीरका इलाज.

नागकेसर मिश्री मिलायके बराबर दोनों मक्खन घीके साथ छः मासे साम छे मासे सबेर खाय तो दूर हो.

दवा दूसरी.

माखनके साथ काले तिल सबेरे एक तोले खाय तो बवासीर दूर होय.

अथ बवासीरका इलाज.

सूरनका भरता बनाकर दहीके साथ रोज खाय, तो रक्त बवासीर दूर होय.

अथ बवासीरकी गोली.

लहसुन, सज्जी, हींग, नीबोलीकी गिरी, बराबरले पाँच पाँच टंक, गुड़ २० टंक, सब दवा एकमें मिलायके तीन

टंककी गोली बाँधकर एक सबेरे एक सामको खाय तो छःप्रकारकी बवासीर दूर होयँ.

२ बवासीरकी गोली.

संखिया६मासे, अँवरासार गन्धक एक तोला, हरताल १ तोला, हर्रै १ तोला यह सब दवा एकमें मिलायके परईमें रखकर दूसरे परईसे ढाँपके कपड़मिट करके सुखायके चूल्हापर रखकर पन्द्रह मिनट आँच दे तब उतारकर दो तोले घी तावा पर रखकर दो पहर तक दवा डालके घोटै,फिर बाजरेकी बराबर गोली बाँध कर एक गोली नींबूके रसमें बवासीरके मसापर लगावै,तो बवासीरकी जड़ टूटै ६ प्रकारका बवासीर दूर होय।इस दवाके समान दूसरी दवा नहीं और इस दवासे जड़ टूटती है तथा भगन्दर दूर होता है.

अथ भगन्दररोगका वर्णन.

गुदासे दो अंगुलकी दूरपर बगलमें एक छोटासा फोड़ा होता है। वह पीड़ा बहुत करताहै। इसके फूटजानेसे भगन्दर हो जाता है । वह भगन्दर पाँच सकारका होता है.

अथ भगन्दरका लक्षण.

कसैली व रूखी वस्तुओंके खानेसे वायु अति कुपित होकर गुदाके निकट एक छोटीसी फुड़िया कर-

ता है उसकी अपेक्षा करनेसे वह पकती और दारुण पीड़ा करती है. फूटनेपर उसमेंसे लाल फेना बहने लगता है और फिर बहुत घाव होजाते हैं।

अथ भगन्दररोगनाशक लेप.

हलदी, आकका दूध, सेंधानोन, चीता, शरपुंखी मजीठ, कूड़ा इन सब दवाओंको तेलमें सिद्ध कर भगन्दर पर लगावे तो शीघ्र अच्छा होवे.

पुनः लेप.

कूट, निसोत, तिल, जमालगोटेकी जड़, पीपल, सेंधानोन, शहद, हल्दी, त्रिफला, तूतिया मिलाय लेप करनेसे वह भगन्दरको नाशता है.

भगन्दर नाशक खानेकी दवा.

हर्र, बहेड़ा आँवला, पीपल, शुद्ध गूगुल ले कूट कपड़ छानकर २ टंक खानेसे भगन्दर रोग जाय.

पुनः दवा.

नागकेसर, पोस्ताकी गिरी दोनों दो दो टंक ले काढ़ा कर पीवै, तो भगन्दरको शीघ्र नाशै.

अथ आमवातके लक्षण.

अंग टूटै, अरुचि होय, तृषा लगै, शरीर भारी हो,

आलस्य आवै, ज्वर हो, अन्न पकै नहीं, अंगोंमें सूजन हो तो आमवात जानिये.

अथ मिश्रित आमवातके लक्षण.

कोपको प्राप्त हुआ आमवात सब रोगोंमें कष्ट-साध्य होता है. अब उसका दोष लिखते हैं. हाथ, पैर, शिर, गाँठ, त्रिकस्थान और जाँघोंकी संधियों (जोड़ों) में प्राप्त होकर बिच्छूके डंकके समान पीड़ा करै और किसी किसी स्थानमें सूजन हो, अग्नि मंद होजावे, उत्साह जाता रहै, अरुचि हो, शरीर भारी रहै, मुखका स्वाद जाता रहै, मूत्र बहुत उतरै, कुक्षिमें कठिन शूल हो, नींद नहीं आवे व वमन हो, तृषा अधिक लगै, भ्रम और मूर्च्छा हो, मल उतरै नहीं, शरीर जड़ होजाय, आंतैं बोला करैं, अफारा हो और वातव्याधिके कहे हुए और भी उपद्रव हों तथा जिसमें पित्त अधिक हो ऐसे आमवातमें दाह और पीलापन हो और वाताधिक आमवातमें शूल हो; कफाधिकमें जड़ता हो, शरीर भारी रहै, खरज चलै ये लक्षण जानो.

अथ आमवातकी दवा.

रास्ना, देवदारु, अमलतास, सोंठि, मिर्च, पीपल, अरंडकी जड़, सांठी, गिलोय इन के काढ़में सोंठका कल्क मिलाय पीनेसे आमवात जावै.

दूसरा काढ़ा.

रास्ना, गिलोय. सुंठि, अरंडकी जड, दारुहलदी इनका काढ़ा बनाय एरंडका तेल मिलाय पीनेसे आमवात जावै.

अथ अजमोदादि चूर्ण.

अजमोद, बायविड़ंग, सेंधानोन, देवदारु, चीता, पीपल, पीपलामूल, सौंफ, मिर्च ये सब दवा दश दश मासे, छोटी हर्र ४ तोले, सुंठि ८ तोले, भिदारा ८ तोले यह सब दवा एकमें मिलाय कूट चूर्ण कर गरम पानीके संग लेनेसे सूजा हुआ तथा पीड़ा सहित सब तरहका आमवात दूर होय । गुड़में गोली बाँधिके खाय तो सब शरीरकी पीड़ा और सूजन दूर होय.

अरंडीका योग.

अरंडीके बीजोंका तुष दूर करके दूधमें खीर बनाय खानेसे आमवात दूर होय.

पुनः हरीतकी योग.

हर्रोंके चूर्णमें अरंडीका तेल मिलाय पीनेसे सब तर का आमवात नाश होय.

पुनः आमवातका इलाज.

त्रिफला, नागरमोथा, कूट, बायविडंग यह सब दवा बराबर ले कूटके चूर्ण कर गिलोयके रसमें एकरटंक-

की गोली बाँधकर एक सबेरे और एक शामको खाय तो कमलबाय आमवात दूर होय.

अथ प्लीहा रोगका इलाज.

शुद्ध सिंगिया, शुद्ध सोहागा दोनों अदरखके रसमें खरल करके बजरीके एक दानाके बराबर खाय तो प्लीहा, वायुगोलादि उदरके सब रोग दूर होयँ.

अथ सर्व उदररोगनाशक चूर्ण.

हर्र, बहेड़ा, आँवला, मिर्च, पीपर, सोंठ, दोनों जीरे, पाँचों नमक, जवाखार, झाऊके पत्ते, फिटकरी, अजवाइन, चिरायता, लौंग ये सब दवा बराबर ले कपड़छान करके नींबूके रसकी एक पुट देकर इनका छः मासे चूर्ण खाय, तो सब उदर रोग दूर होयँ.

तथा.

हींग, पीपलामूल, धनियाँ, चीत, वच, बड़ा कचूर, अमिलतास, पाँचों नमक, सोंठ, मिर्च, पीपल, सज्जीखार, जवाखार, अनारकी छाल, जीरा, तुलसी सब बराबर ले कपड़छान करके ६ मासे रोज खाय तो सब प्रकारके उदर रोग दूर होयँ.

अथ स्त्रीरोगका इलाज.

स्त्रीको जो खून गिरता होय, तो जीराशंख शुद्ध लेकर उसमें मिश्री मिलाके छः मासे खिलावे तो खून बंद होय.

वातके प्रदर रोगकी दवा.

सोंचरनोन. जीरा सफेद, जेठीमधु, कमलगट्टा इन सबका चूर्ण कर शहदके साथ खाय, तो प्रदररोग शान्तहो और पित्तको गुण करता है.

सब प्रकारके प्रदररोगका इलाज.

मुलहठी आढ़ाई टंक, चौराईकी जड़का रस दो टंक दोनोंको शहदमें मिलायके पीवै, तो सब प्रकारका प्रदर रोग दूर होय.

१ स्त्रीधर्म होनेका इलाज.

काले तिल, सोंठ, पीपल, मिर्च, भारंगी, गुड़ सब दवा बराबर ले काढ़ा बनाय बीस रोज तक पीवै, तो सब रोग दूर होयँ, धर्म होय, पुत्र निश्चय होय.

२ तथा.

बिजौरा नींबूके बीज पीसकर जिस गऊके बछवा पैदा हुआ होय, उसके दूधके साथ पीवै, तो निसन्देह पुत्र होय.

३ तथा.

नागकेसर, बछवावाली गायके दूधके साथ पीवै, तो बाँझिनीके पुत्र होय.

वेश्यास्त्रीको गर्भ न रहनेका इलाज.

पीपल, वायविडंग, सोहागा बराबर पीसकर ऋतुके समय स्त्री ९ दिन जलसे पीवै, तो कभी गर्भ न रहै.

२ गर्भ न रहनेका इलाज.

पलाशके बीज जरायके उसकी राख और हींग दोनों मिलाय दूधमें पीवै, तो गर्भ न रहै.

१ गर्भिणी स्त्रीका यत्न.

मुलहठी, लाल चंदन, खश, गौरीशर, कमलगट्टे-की जड़, मिश्री ये दवा बराबर लेकर काढ़ा बनाकर पीवै, तो गर्भिणी स्त्रीका ज्वर दूर होय.

२ तथा.

धनियेके कल्कमें मिश्री डालके और पुराने चावलका धोवन मिलायके पीवै, तो उलटी और ज्वर दूर होय.

३ तथा.

कुशकी जड़, कांसकी जड़, दूबकी जड़, तीनोंका काढ़ा बना कर पीवै, तो मूत्र उतरै प्रसूत होय.

गर्भिणी स्त्रीका लक्षण.

गर्भिणी स्त्री सात महीनाके बाद दस्तावर वस्तु नहीं खावै और डरकी बातों, तथा भयंकर शब्दसे बची रहै। पर दो महीनाके व्यतीत होते ही, पुरुषको त्याग करना चाहिये और अधिक खाना नहीं खावैं, खराब

चीजसे बची रहै, अजीर्णसे डरती रहै। गर्भिनी स्त्रीको गाली न देवै न मारै और न किसी बातका त्रास देवै जो देवने गहना व कपड़ा घरमें दिया होय, उनको देना और जिस देवताका दर्शन चाहै, सो कराना, मनुष्यको चाहिये कि जिस चीजपर गर्भिनीका चित्त चलै वही जहाँ तक बनपड़ै देवे।

जो लड़का जल्दी न होवे उसकी दवाई.

गायका दूध आधा पाव और पानी पावभर मिलायके स्त्रीको पिलावै, तो तुरंत लड़का पैदा होवे कष्ट न होवै तथा चक्रव्यूह कागजपर बनाकर दिखाना चाहिये और कोई चीज सुगंधित सोवरमें न जानी चाहिये.

बालककी दवाई.

जो बालकको कोई रोग हो तो खानेकी दवाई एक-मासासे ज्यादा न देवै।जब बालक चार बरससे ऊपर हो तब दवाई बढ़ाना चाहिये। बालकको घी मिश्री शहद मिलाकर पिलावै तो जो कोई रोग हो दूर हो। जो बालक चूंची न पीवै और बारंबार रोवै, तो यह दवा दे। सेंधानमक, घी, मिश्री एकमें मिलाकर बालकको देवै, तो रोग शांत होवै,अथवा पीपल, अतीस,ककड़ा-सिंगी, नागरमोथा यह सब सम भागले कपड़छानकर

मधुके साथ बालकके खानेको देवै तो शरदी, ज्वर, अतीसार, खाँसी सब दूर हों और वंशलोचन शहदके साथ बालकको दे, तो खाँसी दूर होय अथवा मुलहटी, वंशलोचन, धानकी खील, रसवत एकमें मिलाय कूटके कपड़छान करके खिलावै, तो सब ज्वर दूर होय, और जो दवाई मर्दके हरएक रोगपर दीजाती हैं. वही बालकको देवै (बालकके पलईका लेप) नारियलकी जटा, आंबाहलदी, दोनोंजीरे ये सब पदार्थ समभाग ले कूट कपड़छान करके घी और पानी डालके चुरावे। फिर पतला लेप करै, तुर्त अच्छा होवे ।

इति श्री मुन्शी भगवानप्रसाद शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यक रसराजमहोदधिमध्ये जवारीस, हिन्दी गोली. आनन्दभैरव रस, अजीर्णकंटक रस, त्रिफलादि क्रिया, राजमृगांक क्रिया, बारहों महीना हर्र खानेकी विधि, सब तरहका मुरब्बा बनाना, जुलाबकी बिधि, शिर और कान, आँख, दाँत, नाक, व खाँसी, दमा, श्वाँस. उदररोग, संग्रहणी, अजीर्ण, कृमरोग, पांडुरोग, वातातिसार, सुनबहरी, नामर्दपना, परमा, बवासीर, भगंदर, आमवात, स्त्रीरोग बालकरोगादि नाशके अनेक प्रकारकी हिक्मत व इलाज वर्णन नाम चौथा खंड समाप्त ॥

अथ पाण्डुरोगका वर्णन.

प्रथम पाण्डुरोग पाँच प्रकारका उपजै है।जैसे वातका,पित्तका, कफका, सन्निपातका, मिट्टीखानेका, खेद करने, खटाई खाने, दिनके शयन, तीखी वस्तु खाने या ये सब वस्तु घनी खाने और वात पित्त कफके कोपसे मनुष्यका लोहू बिगड़के शरीरकी त्वचाको पीली कर देता है, शरीरमें पीड़ा और सूजन होजाता है.

वातपाण्डुका लक्षण.

जिसकी त्वचा, मूत्र, नेत्र रूखे तथा काले वा लाल होयँ और शरीरमें कम्प हो, अफारा हो, भ्रमादिक हो, ये लक्षण हों, तो वातका पाण्डुरोग जानो।

पित्तपाण्डुका लक्षण.

जिसका मल मूत्र नेत्र पीले हों,शरीरमें दाह हो, तृषा ज्वर हो और मल पतला हो, शरीर पीला हो ये लक्षण पाण्डुरोगके जानो.

कफपाण्डुका लक्षण.

मुखसे थूक निकले, शरीरमें सूजन हो, तन्द्रा हो, आलस्य आवै, शरीर भारी हो, त्वचा, नेत्र,मूत्र सफेद रंगका होय तो कफका पाण्डुरोग जानो.

अथ सन्निपातपाण्डुका लक्षण.

ज्वर हो, अरुचि हो, हिया दूखै, छर्दि (कय) होवे,

प्यास होवे, इन्द्रियोंका बल जाता रहै ऐसे त्रिदोषके पांडु रोगीको त्यागना वैद्योंको योग्य है.

अथ मिट्टीखानेसे उपजे पाण्डुका लक्षण.

वातादिक अलग अलग कोप करते हैं जैसे कसैली मिट्टीके खानेसे वायु कोप करता है। खारीके खानेसे पित्त, सफेद मिट्टी खानेसे कफ कुपित होता है। फिर वह खाई हुई मिट्टी पेटमें जैसीकी तैसी रहती है और कोप करके सारे शरीरकी इन्द्रियोंको क्लेश देती है। पेटमें कृमि पड़ जाते हैं। वात पित्त कफके कोपसे पाण्डुरोग बढ़े है, यही लक्षण पाडुका जानो.

अथ वातपांडुकी दवा.

शुद्ध मंडूर २०० तोले, लोहेके टुकड़े तिल सरीखे २०० तोला, पुराना गुड़ २९२ तोले, जलवेत ८ तोले, चीता ८ तोले, पीपल १६ तोले, बायविड़ंग १६ तोले, हड़ ६४ तोले, बहेड़ा ६४ तोले, आमला ६४ तोले, पानी १०२४ तोले इनको बर्त्तनमें डाल १५ दिन तक अन्नके कोठामें धरै। पीछे रोगीका बल देख विचारिके देय. तो पांडुको नाशै और कृमि, बवासीर, कुष्ठ, कास, श्वास, व कफके रोगोंको नाशै व पाँचो प्रकारके पांरोडुगको हरै.

अथ पित्तपांडुकी दवा.

आँवलेका रस १०२४ तोले मन्द मन्द अग्निसे चुरावै, फिर ये दवा डाले पिपली ६४ तोले, मुलहटी ८ तोले, मुनक्का ६४ तोले, सुंठी ८ तोले, वंशलोचन ८ तोले, खाँड़ २०० तोले, शहद६४तोले सब मिलाय खानेसे पांडुरोगको एसे नाशै जैसे हाथीको शेर नाशै.

अथ कफपांडुकी दवा.

दशमूल, सोंठ इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे पाडुको नाशै, ज्वर,अतिसार, सूजन, संग्रहणी, कास, अरुचि, कंठके रोगोंको किन्तु सब रोगोंको दूर करै.

पुनः मंडूर लवण.

लोहेकी कीटको अग्निमें लाल करके गोमूत्रमें बीसबार बुझावै फिर सेंधानोन मिलाय खल करै पीछे बहेड़ेके रसमें पाँच दिन घोटै तत्पश्चात् रोगीका बल देखकर तक्रके साथ खानेको दे, पांडुरोग दूर होय.

अथ सन्निपातपांडुकी दवा.

हड़ १ भाग,बहेड़ा १ भाग, आमला १ भाग, सोंठ १ भाग, मिर्च १ भाग, पीपल १ भाग, चीता १ भाग, बायविड़ग १ भाग, शिलाजीत ५ भाग, चाँदीकी भस्म ५ भाग, मंडूर ५ भाग. लोहकी भस्म ८ भाग,

सोनामाखी ८ भाग इनको कूट चूर्ण कर शहद मिलाय लोहके बर्त्तनमें डाल दे पीछे १ तोला रोज खावै, अग्निका बल देखिकै और परहेजसे रहे तो पांडु रोग, विष, कास, श्वास, क्षयी, राजयक्ष्मा, विषमज्वर, पेटके रोग, प्रमेह, सूजन, अरुचि, मृगीरोग इत्यादि शरीरके सारे रोगोंको नाशै.

पुनः पाडुकी दवा.

सोंठ, मिर्च, पीपली, हड़, बहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, वायविडंग, चीता ये सब दवा समभाग ले और लोहचूर्ण ८ भागले इनको कूट चूर्ण कर घृत शहदमें मिलाय खानेसे असाध्य पांडुरोगको नाशै, और सब शरीरके सारे रोग दूर होयँ.

पांडुनाशक अमृतहरीतकी.

सतावर २८ तोले, भृंगराज २८ तोले, सोंठ २८ तोले, कुरंटक २८ तोले, इनका चूर्ण कर ४४८ तोले पानीमें चुरावै। जब २८तोले रहै तब कपड़ामें छान पीछे हड़ १४४० तोले, दूध १२० तोले मिलाय पकावै पीछे हड़ोंको चीरिके बीज निकाल दूर करे फिर पारा गन्धकका रस बनाय पीछे गिलोयका चूर्ण २८ तोले शहदमें मिलाय गोली १४६० नग बाँधे

पीछे एक एक गोली एक एक हड़में भर सूतसे बांध शहदमें डाल बर्तनमें रक्खे फिर एक गोली राज खाय, तो पांडुरोग नाश होय और सम्पूर्ण रोगोंको हरै शरीरकी रक्षा करै इस दवाका गुण लिखने योग्य नहीं.

गजकर्णकी दवाई.

फिटकरी, मुर्दाशंख, मैनशिल, माजूफल, पलाशपापड़ी ये सब दवा समभाग ले कूट कपड़छान कर नींबूके रसमें खरल करके गजकर्ण पर लगावैतो अच्छा होय.

२ तथा.

सफेद चन्दनका चूर्ण एक तोला, आँवलासार गंधक एक तोला, जलाया हुआ नीलाथोथा आधा तोला, मैनशिल आधा तोला, कलमी सोरा आधा तोला, चौकिया सोहागा एक तोला बनारसी राई आठ तोले, सब कपड़छान करके नींबूके रसमें एक दिन खरल करे तो दाद, खुजली, गजकर्ण इत्यादि रोग दूर होयँ.

फोड़ी फोरा नाशक मलहम.

संगजराव दो तोले, सिंदूर दो तोले, मुर्दाशंख चार तोले, रक्तबोल चार तोले, गूगल दो तोले, सब कूटके तिलका तेल दो तोले, घी चार तोले सब एकमें मिलाकर अंगारपर रखके मलहम तय्यार करले, सब जखमोंको दूर करै.

२ मलहम.

राल दो तोले, कपूर दो तोले, नीलाथोथाकी भस्म एक तोला, मोम दो तोले, सेंदुर एक तोला, केवला एक तोला, सफेदा एक तोला सब कपड़छान करके घीमें मिलाकर मलहम तय्यार करै. इससे असाध्य भी जख्म अच्छा होवे और सब तरहके फोड़ फुन्सी अच्छे होवें.

सब दर्दपर लेप.

आंबा हलदी दो तोला, पियाज दो तोला, शहद दो तोला, चूना एक तोला, गुड़ एक तोला, सीका चूरण दो तोला, सब दवा एकमें मिलाकर गर्मकरके जहाँ दर्द होय तहाँ लगावै और ऊपरसे रुई लिपटावै, सब दर्द दूर होय.

पेटकी पीड़ाका लेप.

दोनों जीरे, बबूना, आंबाहलदी, रेंडीका तेल ये सब मिलाकर गेहूँकी रोटी बनायके उसपर दवाई लगाके गर्म करके दर्दपर लगावै तो अच्छा होय.

असाध्य रोगियोंकी छातीपर. कफ रहनका लेप.

बनारसी राई, आंबाहलदी, महुएके फूल सब बराबर ले कर चुराय छाती पर लेप करै.

खाँसी दमा नाशकवटी.

बदामका तेल नवमासे, मधु तीन तोला, तीसीकी आठ तोला ये सब मिलाकर खावै खुराक छःमासे.

तेल बनानेकी विधि.

मंदार, धतूर, थूहर, सेहुंड, मेहँदी, अडूसेकी पत्ती, एरंडकी जड़, मेवड़ीकी पत्ती, सहिंजन सबका रस पाव पावभर, सोंठि, पीपल, रसवत, अजमोदा, कुलिंजन, कलियारी, सोआ, पीपलामूल, चिरायता सब दो दो तोले ले, मेथी बारह तोले, लहसुन बीस तोले इन सब दवाइयोंको तीनसेर पानीमें जोश दे जब आधा पानी रहै तो उपरोक्त रस डालके तिलका तेल आधासेर, कडूतेल १सेर, रेंड़ीका तेल आधासेर सब अर्क डालके मधुरी आँचसे चुरावे जब पानी जल जाय, तब बीस भेलावां छोड़े जब भेलावां भी जल जाय, तब तेल ठंढाकर सीसीमें रख दे, वात, जोड़ा, साना, गठिया इत्यादि सब तरहका दर्द मालिश करनेसे जाय.

अथ जीवनारायण तेल.

दश सेर तिलका तेल, दश सेर कडुवा तेल, दशसेर बकरीका दूध, दश सेर गायका दूध, शतावरीका रस दशसेर, हड़, आँवला, गिलोय, बेलका मगज, दोनों गोखरू, भटकटइआ, जीवंती, मुलहठी, दोनों अरंड, महामुंडी, मुंडी, जायफल, निसवत, इंद्रायन, चिरायता, नीम, बकाइन, मैनफल, सम्भालू, वरियारी, रासना, सहिंजन, गदापुरैना, मेडुकी, गुलसकरी. फफई, गंधपसारन, असगंध, कटसरैया, कुश, करंज, खैर, चन्दन, वच, विजैसार. रेंड, वरुना, दोनों इलाइची, बच बड़ी.

कुटकी, दोनों सिरसा, चिचिरी, रूस, हैंस, जामुन, कचनार, कैथा, किरवारा, दूधिया, विधारा, दरिमा, निर्गुंडी, जसापुरैया, पुष्करमूल, तज, पीपल, गजहर्ण, गूलार, नागफणी, घीकुवारी, चम्बेली, खस, वेरी, कुलथी, केवाँच, मन्दार, गुर्च, सेहुड, केतकी, कलियारी, पलास, चितावारि, बड़, पाकरि, टेकारि, मुसली, हंसपदी, थूहर, धतूर, दात्यून, असगंध ये सब दोदो तोले लेसब चीजमें दो मन पानी छोड़कर चुरावे जब एकमन पानी रहजाय, तब दूध तेल डालके सब एकमें चुरावे, जब तेल मात्र रहजाय, तब सीसीमें उठायके रक्खे. इस तेलके मालिश से शरीरके सर्व रोग दूर होयँ.इसका गुण अपार है वर्णन करने योग्य नहीं है.

१ अंडकोषसूजेका इलाज.

वायविड़ंग, कुन्दर, पुरानी ईंट, तीन तीन तोले लेकर कपड़छान करके चार मासे घीके साथ खाय जो पहले उलटी हो तो अंड़ अपनी जगहपर चला जाय.

२ इलाज.

दूध और रेंडीका तेल मिलाके कुछ दिन पिये तो असाध्य अंडकोष दूर होय, अथवा पलाश व जमीकन्दका चूर्ण करके इक्कीसदिन खाय तो अंडकोष दूर होय, अथवा आँबाहलदी, रेंड़ीकी जड़, व फल व तेल मेथी चारों दवा बराबर लेकर गर्म करके लेप करे तो अंडकोष अच्छा होय.

३ इलाज-लेप.

टेसूके फूल, आंबाहलर्दी, खुरासानी, अजवाइन तीनों बराबर ले पीसे फिर गर्मकर लेप करै, तो अंडकोष जाय. अथवा असगन्ध, जसवंतीकी पत्ती, रेंडीका मगज तीनों कूट करके गर्मकर लेप करै तो अंडकोष जाय अब एक तंत्र लिखते हैं जिससे अंडकोष दूर होय.

अथ अंडकोषनाशक तंत्रकी विधि.

जिस मनुष्यका अंड बाईं ओरका फूला होय तो दहिनी ओरकी गुट्टीके चार अंगुल नीचे एक रस्सी बाँधै, इक्कीस रोजके भीतर पैरमें गुट्टीके नीचे एक नस निकलैगी, उस नसको अग्निमुखीके तलसे दागै। दूसरे दिन वह नस सूज आवेगी, तब उसपर थोड़ा घी लगा य दे। फिर वहाँसे पानी निकलना आपही आप शुरू होगा तब उस नसपर खोपड़ा जरायकेलगावे, तो अच्छी होय, असाध्य रोग या बीस वर्षसे ऊपरका हो, तोभी अच्छा होय। पर प्रथम चार मासे बूकके खानेको देवै.

अथ साँपके काटेकी दवाई.

सफेद मिर्च, सफेद मंदारकी भस्म, नीलाथोथा ये तीनों बराबर खरल करके मासे मासे भरकी गोली बाँधै फिर पानीके साथ एकगोली खानेको देवै तो जहर दूर होय.

सांपकाटेकानास.

कच्चा नीलाथोथा, आककी जड़ दोनों बराबर लेकर

चूर्ण करके नाकमें छःछः मासे भरै. फिर एक फूकनी लेकर फूँके, तो तुर्त छाँट होय, आध घंटेमें वह आदमी अच्छा होय, अथवा जमालगोटा शुद्ध मटर बराबर खिलावे, तो जहर दूर होय, अथवा कसौंजोंकी जड़ पीसकर पिलावे और कसौंजीके बीज घिसके आंखोंमें लगावे व पियाज खिलावे तो जहर दूर होय. अथवा एक चूहा मारके उसका पेट फाड़ जहाँ साँपने काटा होय वहां रखदे तो जहर दूर होय.

बिच्छूके काटनेकी दवाई.

अधझड़ाका रस जहाँ बिच्छू डंक मारे वहाँ घिस कर लगाव। फिर उसकी अढ़ाई पत्ती गुड़में मिलायके खाय, तो जहर दूर होय अथवा नौसादर, कलीका चूना, सोहागा एकमें मलके सूँघै, तो जहर दूर होय अथवा इन्द्रायनकी जड़, जायफल, हरताल तीनोंको घिसके लगावे तो जहर दूर होय.

अथ बावले कुत्तके काटनेकी दवाई.

दोनों जीरा, कालामिर्च पीसके एक महीने तक पिलावै, तो सब जहर दूर होय अथवा पियाज कूटके शहदके साथ लेप करे, तो जहर दूर होय जो अंगपर बड़े बड़े चकत्ते, कोढके समान पड़जावै, तो आँबलासार गंधक छःमासे, जमालगोटा छःमासे, नीलाथोथा छः मासे तीनोंको बूकके लोनी घीमें डालके ताँबके बर्तनमें एकसे एक दफे पानीसे धोवें फिर सबशरीरमें लेप

करके १ प्रहर अग्निमें तापै आंख कान अर्थात् गलेके ऊपर न लगावै और तापनेसे शरीरमें बजरीसे दाने सब जगह पड़जायँ तो दूसरे दिन गोबरसे धो डालै निरोग्य होय.

अथ नोकरससाना असाध्यरोगकी दवा.

साम्भुरोमी सात मासे, जीरा करमनी सात मासे, सफेद मिर्च सात मासे. छोटी पीपल सात मासे, बैरका मगज सात मासे, दालचीनी मोटी साढ़ेतीन मासे, सोंठ चौदह मासे, फरफीऊन चौदहमासे, रुमीमस्तंगी पौनेदो तोले, सुरंजन जंगली जिसको सिंघारा भी कहते हैं, पांच तोले इन सबका चूरण कर साम्भुके रसमें गोली बांधे सात मासे जीराके अर्कके साथ खाना बहुत गुणकारकहै.

१ महजूम सांदेकी.

सुरंजन तीनतोले, सनायके पत्ते १७ मासे, तगर सात मासे, सोंठ७ मासे, जीरा करमनी ७ मासे, पीपरी ७ मासे सब दवा कूट कपड़छान करके दवाके बराबर मधु लेके एकमें मिला महजूम तय्यार करै खुराक नौ मासे गर्म पानीके साथ खाय तो सबप्रकारका दर्द दूर होय.

२ महजूम.

केसर, अकरकरा, अजवाइन, खुरासानी, फरफिऊन. कुलिंजन, इलायची बडी, पीपरी, यह सब दवा ले कपड़छानकरके मधुमें मिलाय महजूम तय्यार करै खुराक६ मासे. वीर्यको बढ़ाता, सुस्ती को दूरकरता और शरीरको मजबूत करताहै, तथा सब तरहके रोगोंको दूर करता है.

बंधेजकी दवा.

अफीम, मिश्री, जायफल, लौंग, कस्तूरी, केसर, कालीमिच, सोंठ, तज यह सब दवा कूट कपड़छान कर तथा मधुमें खल कर पौने दो मासेकी गोली बाँधै खुराक एक गोली शाम और एक सबेरै खाय तो पन्द्रह दिनके पीछे शरीर पुष्ट होय बंधेज भी निश्चय होवे.

गर्मी-उपदंश तीन दिनमें आरोग्य करनेकी दवा.

भृंगराज छः तोले, मिर्चा दो तोले मिलाके खरलमें एक दिन पीसता रहै फिर जंगली बेरकी बराबर गोली बांधै. एक गोली सांझ और एक गोली सबेरे खाय तो सब प्रकारकी फिरंगवायु तथा उपदंश गर्मी दूर होय.

तिजारीकी दवा.

नीमकी अढ़ाई पत्ती गुडके साथ खाय तो ताप, नाहरू, तिजारी, दाह दूर होय.

सर्व रोगनाशक दवा.

सोंठ, सोहागा, सिंगरिफ, सेंधानमक, वायविड़ंग, हलदी, मिर्च, हींग, चित्रक, चीता, जमालगोटा ये सब दवा समभाग ले कूट कपड़छान कर दो रत्तीके बराबर गोली बाँध एक शाम और एक सबेरे ठंढे पानीके साथ खाय, तो कफ, खाँसी, और चौरासी प्रकारकी बायु पन्द्रह दिनमें जाय तथा सब रोग दूर होयँ।

हूकका इलाज.

चनेका खार एक मटर बराबर और चार चने भर गुड़ले एकमें मिलायके शामको खाय,सबेरे चंगा होय.

सब प्रकारका ज्वरनाशक चूर्ण.

नीमकी जड़, फल,फूल,पत्ती तथा छाल बारह टंक, सोंठ नौ टंक, मिर्च तीन टंक, पीपरी तीन टंक, त्रिफला (हड़ बहेड़ा आमला) नौ टंक,सोचर नमक तीन टंक, अजवाइन तीन टंक, जवाखार तीन टंक, ये सब दवा कूट कपड़छान कर दो टंक गरम पानीके साथ खाय तो शीतज्वर,नित्यज्वर,दाहज्वर, एकान्तरा, बेला, तिजारी,चौथियाज्वर इत्यादि सब प्रकारके ज्वर नाश हों.

तिजारीज्वरनाशक काढ़ा.

छड़, नागरमोथा, केसर, कुटकी, पटोलपत्र ये सब दवा बराबर ले काढ़ा बनायकर पीवै तो ज्वर जाय.

चौथियाज्वरका काढ़ा.

अरूसकी जड़,आँवला,सोंठ,देवदारु ये सब दवा सम भाग ले काढ़ा बनायकर पीवै,तो चौथियाज्वर दूर होय.

२ तथा.

लालचंदन, सोंठ, चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, गिलोय,आंवला सब बराबर लेकर काढ़ा करके पीवे,तो चौथियाज्वर दूर होय.

रोग दोष दूर होनेका उपाय.

आक अरंडी फूल मँगावे । पुनि तापर सेंदूर लगावे ॥ गूगुल धूप देय अति चायन । मंत्रराज यह करिकै गायन ॥ ॐ श्रीं ह्रीं फट्स्वाहा ॥ रोगीके शिरसे उतार कर बाँये कोनेमें गाड़े,तो संपूर्ण रोगोंके दोष मिटजावें.

घावके झारनेका मंत्र.

राम मारै पेढुकी, लछिमन ओंढ़ घाव.
फूलै औ न पाके दरै सूखि जाव ॥

अथ मंत्र वेरवा घिनहीं जहरबात थन इलगोहियाका इलाज.

चौ०—लंका के दानव पलंकाके पूत अंजनीके पूत नरक हवा झारै अंजनीके पूत बेरवा झारै अंजनीके पूत घिनही झारै अंजनीके पूत जहरबात झारै अंजनी के पूत थनइल झारै अंजनीके पूत गोहिया झारै नाचत आवै नाचत जाय खेलत खात पखंडे जाय पिंडकी सामननी हंक डकनी आलीम सालीम दुख रचाहा हो जाय राम लछिमन तीनो भाय बेरवाके पानमें खाय राम लछिमन तीनों भाय धृक चं नरक हवाझारै धृक-चं जहर बात झारै धृक चं थनइल झारै धृक चं गोहिया झारै हमरे झारे लेइ झुरि जाय.

कानका मंत्र.

आसमीन न गोट वन्हीं कर्म हीन न जायते दोहाई

महावीरकी जो रहै कान पीरकी अंजनीपुत्र कुमारी बायें पुत्र महाबलको मारि ब्रह्मचारि हनुमंताई नमो नमो दोहाई महावीरकी जो रहै पीर मुंडकी.

प्रेतका मंत्र.

त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः।
गता हि त्वामजानन्तो देवि त्रिशूलधारिणी ॥
साकला होम करै भूत दूर हो.

सनाय खानेकी विधि.

शहदके साथ सनाय जो कोई खावै
बल होय अतुल्य जो नव मासा पावै.
सक्करके साथ सनाय जो खावै
छातीको दर्द और सुस्ती मिटावै.
गुलकंदके साथ सनाय जो खावै
शर्दी सब दूर हो खाना बहुत खावै.
मिश्रीके साथ सनाय जो खावै
तमाम बदनमें ताकत दिखावै.
गायके घीके साथ सनाय जो खावै
कोई दर्द नहीं सदा खुश होवै.
दहीके साथ सनाय जो खावै
जहर खाया होवै सभी दूर होवै.
चोपचीनीके साथ सनाय जो चालिस दिन खावै
आंखोंकी रोशनी सदा बढ़ावै.
आधा तोला सनाय पानीसे जो खावै

हमेशा तन्दुरुस्त रहै रोग कभी ना पावै.
गायके दूधके साथ सनाय जो खावै
नया खून पैदा करै गलीजको नशावै.
बकरीके दूधके साथ सनाय जो खावै
तीस दिनोंमें अतिसुख पावै.
हरिनीके दूधके साथ सनाय जो खावै
नामर्द मर्द होवै बल अतुल्य पावै.
अगर ऊंटके दूधके साथ सनाय जो खावै
खुशी रहै हमेशा कलेश ना पावै.
छाहाराके साथ सनाय जो खावै
मुँह दाँतकी दुर्गंध तुरत हटावै.
अनारके शरबतके साथ सनाय जो खावै
छातीके रोग दूर और उदर साफ पावै.
अगर भंगराके रसके साथ सनाय जो खावै
जवानी रहै बालपर सफेदी न आवै.
इमलीके रसके साथ सनाय जो खावै
छातीका कफ और कब्जियत नशावै.
अदरखके रसके साथ सनाय जो खावै
जीर्णज्वर सन्निपातको मिटावै.
गर्म पानीके साथ सनाय जो खावै
कान शिर और नाकका दर्द तुरत हटावै.
ककरीके बीजके रसके साथ सनाय जो खावै

इन्द्रीकी पथरीको तुरत हटावै.
इसका गुण बहुत कहाँतक वर्णन कर बतावै
जो सेवै तो रोग कभी नहिं पावै.
चेला नादान भगवान दास कहावै
फारसीको उल्थाकर हिन्दी बनावै.

अथ पारेका सिद्ध गुटका.

पारा दो तोले, संखिया सिक चार तोले, नमक दो तोले, जामुनका सिरका तीन सेर यह सब लेकर पहिले तवापर आधा नमक रक्खै फिर पारा रक्खै पीछे पारेको नमकसे ढाँप देवै और तवेके नीचे अग्नि जलावै. ऊपरसे सिरका छोड़ करछुलीसे चलाता जावै सिरका छोड़ता जावै. जबतक मसका न होवै तबतक अग्नि जलाता रहे, और सिरका छोड़ता जावै जब मसका हो जावै, तो मोटे कपड़ेमें रखकर पोटरी बाँधिकर गाड़ै जो कपड़े में पारा रहजाय उसको साफकर ऐसा धोवे कि, सूर्यकीसी ज्योति होवै तब गोली बाँधिकर धतूरेके तेलमें दो दिन रक्खै फिर नींबूके रसमें दो दिन रक्खै, पीछे पोस्ताके रसमें दो दिन रखने पर निकाल ले और जसवंतीके पत्तोंके रससे धोकर साफ करले इस गोलीको जो दहिने भुजापर बाँधे तो वो मनुष्य देवताओंके सदृश होवे. गोली दिवाली याँ होलीके रोज बनावे अथवा शुद्ध होकर ग्रहण लगनेपर बनावै.

अथ केशजमनेका इलाज.

खरबूजेके बीज अंडेकी जर्दी ३० जैतून तेज-पात, मोरद लोहचूर्ण ये सब दवा बराबर ले कूट लेवे और मलहमकी तरह बनाकर लगावे, तो जिस जगह केश न होयँ, उस जगह १६ रोजमें केश निश्चय जमैं.

चित्रकादि चूर्ण.

चीता, पीपलामूल, पीपल, गजपीपल ये सब दवा बराबर ले कूट कपड़छान कर शहदके साथ छःमासे खाय, तो खाँसी दूर होय.

हरीतक्यादि चूर्ण.

हर्र, बहेडा, लोहारस यह तीनों दवा बराबर ले कूट कपड़छान कर छःमासा खाय,तो सबप्रकारके वातरोग दूर होयँ.

पंचवटिकादि चूर्ण.

पाँचो नमक दो तोले, कलमीसोरा दो तोले, नौसा-दर दो तोले,पीपर दो तोले,मिर्च दो तोले, ये सब दवा कूट चूर्ण बनाय छःमासा खाय तो उदररोग दूर होय.

हिंगाष्टकादि चूर्ण.

सोंठ एक तोला, भुना सोहागा एक तोला, बड़ी हर्र एक तोला, सेंधानमक एक तोला, हींग एक तोला, ये सब दवा कूट कपड़छान कर सहिं-जनेके पत्तोंके रसमें खरल करिके जंगली बेरके बराबर गोली बाँधै एक गोली सबेरे और एक शामको खायतो भूख खुलकर लगै और सबप्रकारके उदर रोग दूर होयँ.

दशमूलासव.

दशमूल२० तोला, पुस्करमूल(पोहकरमूल)१०० तोला, हड़ैं८०तोला, आंवला१२८तोला, चीता १०० तोला, धमासा ६० तोला, गुरुची ४०० तोला, बिसाला २० तोला, खैरसार ३२ तोला, विजौग १६ तोला, मजीठ ४ तोला, मुलहटी ४तोला, वायविडंग ४ तोला चवक ४ तोला, लोध ४ तोला, जीवक ४ तोला, ऋषभक ४ तोला. मेदा४तोला, महामेदा ४ तोला, ऋद्धि ४ तोला, वृद्धि ४ तोला, कंकोल ४ तोला, क्षीरकाकोली ४ तोला, पीपल ४ तोला, जीरा ४ तोला, गजपीपल ४ तोला, चिकनीं ४ तोला, पद्माख ४ तोला, कचूर ४ तोला, इलायची ४ तोला. हर्र काबुली ४ तोला, जटामासी ४ तोला, पित्तपापड़ा ४ तोला, नागकेसर ४ तोला, निसोत ४ तोला, हलदी ४ तोला, रास्ना ४ तोला, मेढ़ासींगी ४ तोला, सोंठ ४ तोला, सतावरि ४ तोला, इन्द्रयव४तोला, नागरमोथा ४ तोला, इन सब दवाओंका चौगुने पानीमें काढ़ा बनावै। जब पानी आधा रहै तो पीछे दाख२४० तोला, धौके फूल१२० तोला, गुड़१६तोला, शहद१२८तोला मिलायके घीके चीकने बरतनमें रख दे। पहले जटामासी मिर्ची दोनोंके चूर्णका धूपदेवै। पीछे पीपल८तोला, चन्दन८तोला, बाला ८ तोला जायफल८ तोला, लौंग८ तोला, दालचीनी ८

तोला, इलायची ८ तोला, तमालपत्र ८ तोला, नाग-केसर ८ तोला, कस्तूरी १ तोला, धतूरबीज ४ तोला, यह सब दवा घड़ोंमें डालके इसका मुँह बंद कर जमीनमें गाड़ दे फिर १५ दिनके पीछे रोगीका बल विचार खानेको देय तो धातु क्षय, पांच प्रकारके श्वाँस, छः प्रकारकी बवासीर ८ प्रकारका उदररोग, बीस प्रकारका परमा, महाब्याधि, अरुचि, पांडु, सब प्रकारके वातरोग, शूल, शर्दी, रक्तप्रदर, अठारह प्रकारके कुष्ठ रोग, मूत्र, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगोंको दूर करता है बांझको पुत्र देता है, और शरीरको नीरोग करता है.

गूगुल योग.

गिलोय ५६ टंक, गूगुल १२७ टंक, त्रिफला २०० टंक इन औषधियोंको तिगुना पानी डालके चुरावै ।जब २ भाग जरजाय एक भाग पानी रहजाय तब छानले फिर दात्यून, कूट, त्रिफला, वायविडंग, तज, गिलोय नि-सोत ये सब दवा ४।४ टंक ले चूर्ण कर आगके काढ़ामें मिलादे। खुराक ३ टंक इसके सेवनसे वातरक्त, दुष्टवर्ण, परमा, भगंदर, आमवात इत्यादि सब रोग दूर होयँ.

अथ गूगुलकिशोर.

शुद्ध भैंसागूगुल एक सेरको एक मन पानीमें चुरावै पीछे हर्र एक सेर, बहेड़ा एकसेर, आंवला एक सेर, गिलोय १६ तोला डालके चुरावै जब आधा रहजाय तब छान, पारा अढ़ाई टंक, गंधक अढ़ाई टंक, वायविरंग अढ़ाई

टंक, निसोत अढ़ाई टंक, गिलोय अढ़ाई टंक, दात्यूनी अढ़ाई टंक, पहले पारा गंधककी कजरी करै तब दवा कूट कपड़छान कर सब दवा एकमें मिला दे खुराक ८ मासा सबेरे खाय तो आमवात और वातरोग इत्यादि दूर होयँ.

१ दवा हैजेकी बीमारीको तुर्त शांत करै.

मिर्च एकमासे, अरहरके पत्ते एक तोले, लेकर खूब घोटै फिर पावभर पानी डालकर पिलावै तो तुर्त हैजा मिटै.

२ तथा.

आककी जड़को अदरखके रसमें खरल करै फिर मिर्च बराबर गोली बाँध एक गोली पानीके साथ खिलावै, तो हैज़ेका असर मिटै.

३ तथा.

बिजौरा नींबूके पंद्रह बीज दो तोले पानीके साथ मिश्री डालकर पिलावै, तो तुर्त अच्छा होय.

हुचकीकी पहली दवाई.

कलौंजी ३ मासे चूर्ण करके माखनमें खाय तो अच्छा होय.

तथा.

काले उर्द चिलममें रखकर तंबाकूके समान पीवै तो अच्छा होवै.

पीपलका चूर्ण.

एक सेर पीपल, दो सेर दूधमें चुरावै, जब दूध जल

जाय, तो पीपलको सुखाय कर चूर्ण कर चौदह मासे चूर्ण और छः तोला मिश्री डेढ़ पाव दूध डालकर प्रतिदिन पीवै तो नामर्दपन मिटै, वीर्य बढ़.

पीपलकी गोली.

अस्पंद, कपूर, बीजाबोल; अजवाइन इन सबको कूटकर अदरखके रसमें चनेंकी बराबर गोली बनावै एक गोली खाकर दूध पीवै, तो बहुत बल होय.

हर्डोंकी जवारिस.

हर्डें बारह तोले, सनाय बारहतोले, हर्डें घीमें चुराय कूट कपड़छानकर मधुमें मिलाय जवारिस तय्यार करै, फिर नव मासे खानेको देवे. यह आँखोंकी गर्मीको दूर करता, अन्नको पचाता और सबरोगोंको लाभ देताहै.

मिर्चादि चूर्ण.

मिर्च, सोंठमें पाँचो नमक मिलाकर कपड़छान करके सबेरे फंकी मारै तो कब्जियत दूर होय. यह बातरोगको बहुत लाभदायक है.

शुंठ्यादि चूर्ण.

सोंठ, मिर्च, पीपल, तज, तेजपात, इलायची, लवंग, जायफल, वंशलोचन, कचूर, बावची, अनारदाना इन्होंको बराबर ले कूट कपड़छान कर सब चूर्ण बराबर लोहरस लेवे और लोहरसके बराबर मिश्री मिलायकर छः मासे नित्य सबेरे खाय और ऊपरसे बकरीका दूध पीवै तो राजरोग, मन्दाग्नि, वीसों परमा दूर होयँ अत्यंत पुष्टहोय.

इति श्रीमुन्शी भगवानप्रसाद शिष्य भगतभगवानदास विरचित वैद्यक रसराज–महोदधिमध्ये गजकर्णकी दवा, मलहम, लेप, तेल बनानेकी विधि, खाँसी, दमा और अंडकोष सूजनेका इलाज. साँप काटेकी दवा, बिच्छूकी दवा, बावले कुत्तेके काटनेकी दवा, सांदेकी दवा, महजूम, बन्धजकी दवा, गर्मीतिजारीकी दवा, सब रोगोंकी दवा, हूककी दवा, सर्व ज्वरका चूर्ण और चौथिया तिजारीकी दवा, अति उपयोगी मंत्र यंत्र प्रयोगादि और घावका मंत्र, कानका मंत्र. प्रेतका मंत्र, और नकेहवा बेरबा घिनहीं जहरवातथनइलका एकमंत्र सनाय खानेकी उन्नीस विधि, पारेकी सिद्ध गुटिका, चूर्ण, गोली, दशमूल गूगुलयोग, गूगुल किशोर, सब रोगोंकी दवाई व सबके बनानेका सरल सरल उपाय वर्णन नाम पंचमखंड सम्पूर्ण ॥ ५ ॥

अथ कुष्ठ रोग वर्णन.

गुरुपत्नीके संग, गौ और गोत्रकी स्त्रीके संग मैथुन करनेसे कुष्ठ होता है अथवा विरुद्ध भोजन करनेसे, अजीर्णमें भोजन करनेसे, पतली, चिकनी, भारी वस्तुके खानेसे, मल मूत्र रोकनेसे, मछली और दूध के एकही संग खानेसे, शीतल गरम एकही संग खानेसे, ब्राह्मण, गुरु, माता, पिता, इनका आदर न करनेसे कुष्ठ होता है तथा पाप कर्म करनेसे एवं वात पित्त कफके कोपसे त्वचा, रक्त, मांस, लोहूको बिगाड़ कर

१८ प्रकारका कुष्ठ उत्पन्न होता है इसमें ७ महाकुष्ठ और छोटे छोटे ११ कुष्ठ सब मिलके १८ कुष्ठ हैं.

सात महाकुष्ठके लक्षण.

जिस कुष्ठका रंग काला लाल मिला हुआ तांबेके रंगका हो वा मिट्टीके खपरेके समान रूखा हो, कड़ा पतला चर्म्म होजाय और गूलरके फलके रंगके समान खाल होय तथा अंगमें पीड़ा सूजन हो.रुधिर काला हो,हाथ पैरमें कांखमें फुन्सियें हों इन सब उपद्रवोंके शांति होनेके लिये ३ चांद्रायण व्रत करै और ब्राह्मणोंको भोजन करावे तथा यथा शक्ति दान करे तो पापशांति होय और वैद्यकशास्त्रमें कही औषधियोंको दान करे तो कुष्ठकी शांति होय.

अथ कुष्ठकी दवा.

वायविडंग, त्रिकुटा,नागरमोथा,चीता,मीठा तेलिया,बच,गुड़ यह सब समभाग ले तीनबार लेप करेतो कुष्ठ दूर होय.

पुनः दूसरा लेप.

कलमी सोरा इमलीकी लकड़ीके कोइले पर धरे फिर कोइलेमें अग्नि जलाय रात्रिभर अग्निमें रहने दे सबेरे निकालकर कलीका चूना १ भाग,सोरका खार २ भाग मिलाय, जहाँ कुष्ठकी फुन्सियां होयँ तहां सँभालकर थोड़ा लेप करै, तो कुष्ठ अच्छा होय.

कुष्ठके खानेकी दवा.

सेहुँडका दूध आधासेर, भूंनेचने पाँच तोले एकमें मिलाय खल करे फिर चनेबराबर गोली बाँधे.कुष्ठवाले रोगीका बल देख सेवन करावे. गलितकुष्ठ दूर होय, इसपर खटाई और सब परहेज रक्खै, कुछ दिन सेवन करे तो आराम होय.

कुष्ठकी दूसरी दवा.

नीम, कडू परवर, कटैली, गिलोय, बांसा यह सब चालीस चालीस तोले ले कूटकर एक द्रोण पानीमें चुरावै जब चौथाई काढ़ा रहजाय तो घृत ६४ तोले त्रिफलेका काढ़ा ६४ तोले मिलायकर पकावै. घृतको सिद्धकर खानेसे कुष्ठ दूर होय और ८० प्रकारका वातरोग, ४० प्रकारका पित्तरोग, २० प्रकारका कफरोग. दुष्टव्रण, कृमि, बवासीर, पाँचों खाँसी इन सबको नाशै.

अथ त्रिफलादि मोदक.

त्रिफलाका चूर्ण ६० तोले, वायविड़ंग २८ तोले, लोहभस्म ८ तोले, बावची ४० तोले, शिलाजीत २ तोले, गूगुल ८ तोले, पोहकरमूल ४ तोले, निसोत १ तोला, मिर्च, पीपल, सुंठी, दालचीनी, तमालपत्र, केसर, नागरमोथा ये सब दवा दो दो तोले लेय सब औषधियोंके समान मिश्री मिलाय४तोलेके लड्डू बनाय सबेरे एक लड्डू नित्य खाय तो मनोवांछित भोजन करै.

१८ प्रकारके कुष्ठ, तिल्ली. गुल्म, भगंदर, ८० प्रकारके वायुरोग, ४० प्रकारके पित्तरोग, २० प्रकारके कफरोग, द्वंद्वज सन्निपात, शालक्यरोग, नेत्ररोग, भृकुटीरोग, कंठरोग, तालुरोग, जीभरोग, उपजीभरोग, कांधे कंठके बीचके रोग, भोजनके ऊपर देनेसे और पेटके रोगोंमें भोजनके मध्यमें खानेसे सम्पूर्ण रोगोंको नाशै, यह रसायन है.

अथ सफेदकुष्ठका लेप.

असगंध, वायविड़ंग, चीता, भिलावाँ, जमालगोटेकी जड़, अमलतास, निंबोली इनको कांजीमें पीस लेप करनेसे सफेद कुष्ठ नाश होवै.

पुनः लेप.

हरताल ४ मासे, बावची १६मासे, इनको गोमूत्रमें पीस कर लेप करनेसे श्वित्र (सफेदचकत्ते) नाश होवैं.

अथ घोड़ाचोली लिख्यते.

रस विष गंधक औ हरताल। त्रिकुटा त्रिफला औ भृंगराज॥ जमाल मिलायके बाँधै गोली। कह गोरख यह घोड़ाचोली॥ औषध.

पारा, हरताल, गंधक, बच्छनाग, पीपलामूल, मधु, पीपली, सोहागा, हड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, सफेद निबरसी यह सब औषधि सम भाग ले कपड़छान कर भृंगराजके रसमें छःदिन खल करै फिर मिर्च बराबर

गोली बाँधै और रोगीका बल विचार कर एक गोली शाम और एक सबेरं १ महीनातक खावै तो भूक बहुत लगै. जिस स्त्रीके बालक नहीं होता हो तो इस गोला-को ऋतुके पीछे तीन दिन स्त्री पुरुष दोनों आदमी पानके साथ खावैं तो अवश्य बालक होय. यह गोली गायके घीके साथ खाय, तो अजीर्णज्वर जाय, दही और अनारके दानेके साथ खाय तो संग्रहणी रोग जाय. जिसका पेट पत्थरके समान कड़ा होय, तो इस गोली-को पानीमें पीस पेट पर लेप करै, तो पीड़ा और क-ड़ापन दूर होय, और जो कोई यह गोली अदरखके र-सके साथ खाय, तो सब प्रकारका वातरोग जाय और जिस आदमीको बीछीने डंकमारा होय, तो यह गोली सोंठके साथ घावपर लेप करै, तो तुर्त बीछीका जहर दूर होय और अरसीके चूर्णके साथ खाय, तो तापज्वर जाय. जोरा और शक्करके साथ खाय, तो पुराना ज्वर जाय.

सेंदुर एक टंक, घी छः टंकके साथ एक गोली घिस कर लगावै. तो मुखकी झाईं दूर होय.

यदि यह गोली मिर्चमें पीस नास लेवै तो मृगी रोग, नाक रोग दूर होय, और खीरेके बीजके साथ गोली खाय, तो मूत्ररोग जावै, पेशाब होवै, अकरकरे-के साथ यह गोली खाय तो इन्द्रियकी पथरीको तुर्त निकालै, पानके रसके साथ पंद्रह दिन खाय, तो भूख

लगे, मधु पीपलके साथ खाय तो हड़फूटन रोग जाय, खसखसके रसके साथ खाय तो वायशूल रोग जाय, कडुआ गुंजा और अनारके रसके साथ गोली घिस बालोंपर लगावै तो बाल झड़जायँ और फिर जमआवें पानीके साथ घिस आँखोंमें लगावै तो जो आँखें लाल होयँ तो अच्छी होयँ.

मोचरस बदामके साथ उपरोक्त गोली खाय तो खून गिरना बन्द होय, सोंठ और स्त्रीके दूधके साथ गोलीको घिस कानमें डाले तो कानका रोग दूर होय और तुलसीके रसके साथ गोली खायतो तिजारी ज्वर जाय.

कोहरिया धतूरेके बीजके साथ यह गोली खाय तो सफेद कुष्ठ दूर होय और भंगरेके रसके साथ खाय तो शरीरकी सुस्ती जाय, सँभालूके रसके साथ खाय तो प्रमेह रोग जाय.

पीपर और गुग्बेलके साथ यह गोली लेप करै, तो सन्निपात दूर होय। पुराने गुड़के साथ यह गोली खाय तो मुँहकी दुर्गंध दूर होय, पावर रसके साथ यह गोली खाय तो मुँहकी जरदी और सूजन दूर होय, अँवरा के चूरणके साथ गोली खाय, तो सब प्रकारकी गरमी जाय, अँवराके चूरणके साथ वर्षदिन खाय, तो निरोग होय रोग कभी न पावै. मधुके साथ खाय तो शरीर पुष्ट और बल अतुलित होय.

मधुके साथ इन्द्रियपर लेप करै तो स्त्री बहुत प्यार करै। शंखाहोलीके साथ खाय, तो पिंडरोग जाय.

छोहारेके बीजके चूर्णके साथ गोली खाय तो बाँझ स्त्रीके गर्भ रहै। ब्राह्मीरस दमयंतीरसके साथ गोली खाय तो जलंधर रोग जाय.

नकछींकनी और निवोंराके रसके साथ गोली खाय तो पेटकी वायु तुर्त दूर हो जाय.

पीपल व हींगके साथ गोली खाय तो बवेशीरोग जाय। गंगेरूके रसके साथ गोली खाय तो बिन्दुकुशादि जाय। छांछके साथ गोली खाय तो शरीरकी सूजन जाय, सोंठके चूरणके साथ गोली खाय तो हथरसरोग जाय, जावित्रीके साथ गोली खाय तो बांझ स्त्रीके पुत्र होय.

ऊँटकटेरीके साथ गोली खाय तो पेटकी अग्निको तुर्त बुझावै। निबोरीके साथ गोली खाय तो दाँतका चबाव बन्द होय, सफेद चौंटलीमें घिसके आँखोंमें लगावै तो आँखोंका रोग दूर होय, निबोरेके साथ गोली-को घिसकर शरीर पर लगावै तो भूत प्रेत भाग जायँ. नीबीके फूलके साथ यह गोली खाय, तो सांपका विष दूर होय. नीबीके पत्रके साथ गोली खाय तो सब ज्वर जाय. पीपरके साथ गोली खाय तो अवलेहरोग जाय. काले नमकके साथ गोली खाय, तो पेटका मल दूर होय. भंगराके रसके साथ यह गोली खाय, तो सन्निपात

जाय. जीरे मिश्रीके साथ गोली खायं तो शरीरको पुष्ट करै। शहदके साथ गोली खाय तो बायगोला रोग जाय. इमलीके रसके साथ गोली खाय तो पित्तज्वर जाय. तुलसी और अनारके दानोंके रसके साथ गोली खाय तो शूलरोग जाय. तुलसीके रसके साथ घिस आँखोंमें लगावै तो रतौंधी जाय. सफेदचौंटलीमें घिस आँखोंमें डाले तो फूलीरोग जाय.

अथ दूसरा घोड़ाचोली.

पारा, त्रिफला, सोंठ, जमालगोटा, निसोत, कुटकी, बच्छनाग, हरताल, हलदी, मिर्च, सोहागा, अफीम, लवंग, जायफल, जावित्री, मधु, पीपल, वायविड़ंग ये सब दवा सम भाग ले कूट कपड़छान कर भंगराके रसमें छः दिन खरल करे, फिर मिर्च बराबर गोली बाँधै और ऊपरकी घोड़ाचोलीके अनुसार रोगीको देवै ॥ चौपाई ॥ भगवानदास धन्वन्तरिको शीश नवावै ॥ घोड़ाचोली गोली बनावै ॥ जो गुरुका ध्यान लगावै । अरु संतनको शीश नवावै ॥ यहि औषधको करै विचारी। इसका गुण है सबसे न्यारी ॥ संतन वचन ध्यानमें लावै । सोई वैद्यक सुख उपजावै ॥ जो परहेजसे गोली खावै । सो नर कभी रोग नहिं पावै ॥

इति घोड़ाचोली समाप्त।

अथ गोरखमुंड़ी कल्प प्रारंभः

अमावसके दिन जड़समेत मुंडी उखाडकर छायामें

सुखावे फिर एक तोला गायके दूधके साथ ४० दिन खाय तो शरीर निरोग होय. और इसी विधिसे एक वर्ष तक खाय तो महाबली होय । आचारसे रहै फिर वही चूर्ण शामको पानीमें भिगोवै और सबेरे बालोंमें मलै तो बाल काले होयँ । फिर वही चूर्ण इक्कीसदिन खाय और ब्रह्मचर्य्यसे रहै तो अग्निसे मुख न जले और न पानीमें डूबै तथा जिस मुंड़ीमें फल फूल नहीं लगा हो,तो उसको उखाड़ लावै और छायामें सुखाय चूर्ण कर दूधमें पीवै तो ब्रह्मज्ञानी होय, आगम जानै, महा-सिद्ध होय । फिर उसी चूर्णको पानीमें भिगोय आँखमें डाले तो आँखका रोग दूर हो और फिर वही चूर्ण जौके आटेमें मिलाय गायकी छाँछ लेकर साने और रोटी बनाकर गायके घीके साथ खाय तो कायाकल्प होय सुवर्ण जैसा शरीर होय। कुछ दिन सेवै तो पूज्य-मान होय। ब्रह्मचर्य्यसे रहे फिर मुंडी उखाड़कर रस निकाल शरीरमें मलै तो पीड़ा दूर होय । फिर मुंडीके बीज एक तोला नित्य खाय, वर्षदिन सेवै, तो बूढ़ा नहीं होय.

फिर मुंडीपंचांगले चूर्ण करके शहदके साथ कुछ दिन खाय, तो कवि होय और बल बहुत होय.

इति गोरखमुंडी समाप्त।

अथ शुक्रपाक ।

एरंड़ीका बीज एकसेर.दूध आठसेर,मिश्री चारसेर पहिले एरंडीके छिलके दूर करले फिर दूधमें मिलाय मिश्री डाल मधुरी आंचसे खोवा (मावा) कर पीछे सोंठ, पीपल, लवंग,इलायची,दालचीनी, सांठी,हड़, बाला, जावित्री, जायफल,तमालपत्र,नागकेसर,असगंध,रास- ना.खडगंधा,पित्तपापड़ी दोदो तोला ले कूट कपड़छान कर खोवेमें डाले, फिर अदरखरस एक तोला, लोहा- भस्म एक तोला, सब एकमें मिलाय पाक तैय्यार करै रोगीका बल देखकर सबेरे खानेको देवै । कुछ दिन सेवै तो अस्सी प्रकारका वातरोग दूर करै । चालिस प्रकारके पित्तरोगको दूर करै, आठप्रकारके उदररोगको हरै। बीस प्रकारके प्रमेहरोगको हरै। साठ प्रकारके नाड़ी- व्रण रोगको हरै,अठारह प्रकारका कुष्ठरोग हरै,सातप्रका- रका क्षयरोग हरै । पांच प्रकारका पांडुरोग हरै। पाँचप्र- कारका श्वास रोग हरै।चार प्रकारका संग्रहणिरोग हरै । और नेत्ररोगादि सब रोग दूर करै पथ्यसे ब्रह्मचर्यसे रहै।

अथ मेथीपाक प्रारम्भः ।

मेथी बत्तीस तोले, सोंठ बत्तीस तोले इनका चूर्ण कर कपड़छानकरके दूध दोसौ छप्पन तोले,घृत बत्तीस तोले सब एकमें मिलाय चुरावै । जब कड़ा होजाय, तब अग्निपरसे उतार लेवै। पीछे मिर्च, पीपल, सोंठ, पीपलामूल, चित्ता, अजवाइन, धनियाँ, जीरा,

कलौंजी, सौंफ, जायफल, कचूर, दालचीनी, तमालपत्र, नागरमोथा ये सब दवा चार चार तोले और सोंठ छः तोले, मिर्च छः तोले इनको चूर्णकर मिलाय पाक तैयार करै। ये मेथीपाक चार तोले अग्निबलको विचारकर खाय तो आमवात और सब वातरोगोंको शांत करै, तथा विषमज्वर, पांडुरोग, कामला, उन्माद, अपस्मार, प्रमेह, रक्तपित्त, अम्लपित्त, शिर-पीड़ा, नासिकारोग, नेत्ररोग, प्रदररोग और सूतिका रोग इन सब रोगोंको हरै संशय नहीं। यह शरीरको पुष्ट करै, बलवीर्यको बढ़ावै, सब रोगोंको हरै, पथ्यसे रहै.

जुलाब अमीरोंका.

चावल ९ टंक, शक्कर ९ टंक, गुलाबके फूल ९ टंक, दूध आधासेर ये सब एकमें मिलाय खीर बनावै फिर ९ टंक घी उसमें डालकर खाय तो जितना ठंढा पानी पीवै, उतना ही जुलाब होवै और गर्म पानी पीनेसे बन्द हो जाय। इसके बराबर दूसरा जुलाब नहीं.

इति श्रीभगतभगवानदास विरचित घोड़ाचोली गोरखमुंडीकल्प शुक्रपाक मेथीपाक जुला-बादिवर्णनं नाम उत्तर भाग समाप्त ॥

अथ लकवाकी दवा.

सवा २ तोले सनके बीज शहदमें मिलाय सबेरे खाय तो लकवा १९ दिनमें नाश हो जाय.

पुनः.

यह तेल लकवेको नष्ट करता है. सुफेद कनेरकी जड़के छिलके, सफेद चिर्मिटीकी दाल, काले धतूरेके पत्ते सब दवा दो दो तोले चार चार मासे लेना फिर कूटकर टिकिया बनाय पावभर तेलमें टिकिया डाल खूब घोटै फिर अग्निपर चुगवै जब दवा जल जाय तो उतार ठंढा कर अर्द्धाङ्गवायवाले और पक्षाघात-वालेके तेल मलनेसे शरीरका रोग दूर होय.

पुनः मिर्चादि लेप.

कालीमिर्च महीन पीस तेलमें मिलाय, गरमकर पतला लेप करे तो पक्षाघातको तुरंत नाश करै इसके बराबर दूसरी दवा नहीं.

पुनः वचका पाक.

लकवेकी दवा अजमाई हुई । वच ९ तोले, सोंठ कालाजीरा प्रत्येक दो दो तोले एकमें मिलाय कूट कपड़छान कर शहदमें मिलाके साढ़ ३ मासे, नित्य खाय तो अच्छा होय.

पुनः लकवेकी दवा.

बच ३ तोले, काली मिर्चे, पोदीना, स्याहजीरा, कलौंजी प्रत्येक दश दश मासे सब कूट कपड़छान कर पावसेर शहदमें मिलाय सात मासे खावे तो पक्षाघात लकवेको दूर करै.

लवंगादि चूर्ण.

लवंग १ तोले, जायफल १ तोले, पीपली १ तोले, बहेड़ा ३ तोले, मिर्च २ तोले, सोंठ १६ तोले इन सब दवाओंके बराबर खाँड़ मिलाय खानेसे खाँसी, श्वास, ज्वर, गुल्म, अग्निमंद और संग्रहणीको नाश करता है.

अथ व्रण फोड़नेका लेप.

मालकांगनी, सज्जीखार, एरड़ीबीज तीनों दवा बराबर ले कूट कपड़छान कर पानी डाल गरमकर लेप करै तो फोड़ा तुरंत फूटै.

तथा.

हाथीके दाँतका चूर्ण पीस व्रणपर लेप करै तो फूटै और पुराना व्रण (फोड़ा) नाश होय.

पुनः लेप.

भंगरा, हलदी, सेंधानोन, धतूरके पत्ते सब बराबर लेकर पीस ले फिर गरम करके लेप करै तो व्रण फूटै.

अंडोंका लेप.

महुएके फूल, एरंडीके बीज, मुलतानी मिट्टी, काले तिल सब मिलाय पीस भेंड़ीके दूधमें चुराय अंडपर लेप करै तो बहुत दिनकी सूजन दूर होय.

तथा.

अंडकोशवाले रोगीको जुलाब देय; तब ये लेप

करै. मालकां[illegible], एरंडीके बीज, असगन्ध, आमाहलदी, सब पीस भेड़ीके दूधमें मिलाय गरमकर लेप करै तो अच्छा होय सूजन हटै.

अथ अजीर्णका वर्णन.

पेट भारी रहे, शिर भारी रहे, आलस रहे, देह टूटे, मुँहसे पानी छूटे तो जानो कि अजीर्ण हुआ और पेटमें पीड़ा, जँभाई बहुत आवें, अजीर्णमें गरम पानी पीना हित है. स्नेह जुलाब देना उलटी करना हित है. शीघ्रतासे इसकी दवा करै, नहीं तो नाना प्रकारका रोग पैदा करता है.

अथ आहारका वर्णन.

हलकी रोटी तुरत पचजाती है. मावेदार रोटी देरमें पचती है. गरम गरम रोटी भोजन करनेसे उदरकी तरीको सोख लेती है, ठंढी रोटी उदरको तर करती है और सूखी रोटी भोजन करनेसे रोग पैदा करती है, तथा दाल तरकारी कच्ची न रहे, अच्छी प्रकारसे चुरालेवे. रोटी भी अच्छी तरहसे सेंक ले. मनुष्यके जीवनका आधार भोजन ही है सो मनुष्यको चाहिये कि सँभालके भोजन करै, कच्ची पक्की देख ले और गरम ठंढ़ी देख लेय, तथा जबतक अच्छी क्षुधा न लगै, तब तक भोजन न करै.

अथ मलका वर्णन.

मनुष्यको चाहिये कि मलको दो बार त्याग

करै रोकै नहीं. जो रोकैगा [illegible] गरमीसे वात पित्त मिल कर समस्त शरीरमें नाना प्रकारके रोग पैदा करेंगे. मनुष्य मलको बराबर त्याग करै और पेशाब उसी तरहसे करै रोकै नहीं. पेशाब रोकनेसे सुजाक प्रमेह पैदा होता है, इसे बचाये रहना.

अथ पानीका वर्णन.

पानी भोजनमें कमती पीवे. भोजनके दो घड़ी पीछे पीवे. गरम शरदकी प्रकृति समझकर पीवे. दरियाका पानी सबसे अच्छा, पीछे कुएँका पानी अच्छा है और तालपोखरीका पानी रोग पैदा करता है. मैथुनमें पानी विकार है. कुस्ती परिश्रममें विकार है. ठंढ पानीसे गरम पानीका स्नान करना हित है.

अथ शीतपित्तका वर्णन.

शीतपित्त महारोग है. क्षणमें निकलता है क्षणमें समाता है, दवासे दूर होता है. किन्तु उसकी जड़ नहीं जाती मरने तक रहती है. कभी शीतमें निकलता है, कभी गरमीमें निकलता है. शरीरका खून सब बिगाड़ देता है, इसके दूर करनेकी दवा लिखते हैं। परमेश्वरकी कृपासे रोगी निसंदेह निरोग होगा, यही दवा करना भूलना नहीं.

अथ शीतपित्तकी मालिश.

सज्जीखार, सेंधानमक, कड़वातेल मिलाय शरीर

एरंडीके
पर एक घंटा [illegible] रना. फिर गरम पानीका सें-
क करना. पानीका भाफ देना, जितना पानीके भा-
फसे सेंक करेगा,उतना रोग दूर होगा. इसी विधिसे
पन्द्रह दिन साँझ सबेरे जो करेगा तो शीतपित्तकी गाँ-
ठ दूर होजायगी. रोगी नीरोग हो जायगा. यह कुछ
कड़ी दवा नहीं है.

अथ शीतपित्तके खानेकी दवा.

उसबा मगरबी सात तोले,सनायकी पत्ती अढ़ाई तोले, सौंफ अढ़ाई तोले, बिसफैज दो तोले,सहदरा २ तोले,लालचन्दनका चूर्ण एक तोले,मिश्री सात तोले, सब दवा मिलाय कूटि कपड़छान कर सात तोले शहद मिलाय रोगीका बल देख इक्कइस दिनतक खानेको देय, तो शरीरके खूनको साफ कर देगा,खराब खूनको दूर करेगा,नया खून पैदा करेगा, शीत पित्तकी जड़ दूर होगी और रोगी निरोग हो जायगा.

अथ शीतपित्तमें पथ्य.

चावल,मूँग, कुलथी,करेला,पोईशाक,.गरम पानी, पित्तकफनाशक औषध ये सब शीतमें पथ्य हैं.

अपथ्य.

स्नान करना,घाम, खटाई, भारी अन्न ये रोगमें अपथ्य हैं। शीतमें पहिले उलटी जुलाब देना, पीछे आगलका दवा करना सेंकना.

अथ अच्छी रीति सिखाने का वर्णन.

मनुष्योंको उचित है कि अपने लड़कोंको बाल अवस्थामें अच्छी रीतिसे रखें और सिखावें पढ़ावें. और बालकको चाहिये कि, माता पिताकी आज्ञा माने, पढ़नेमें मन लगावे, सफाईसे रहे और अपनी जीवन-यात्रा निर्वाह करनेके लिये व्यवसाय करै. जो बाप दादा करते आये हैं. इसके उपरांत बिवाह करै, बालपनमें बिवाह होना पीछे कष्टदायक होता है, क्योंकि कुछ विद्या नहीं सीखी और न काम धंधा सीखा इससे उनको शोच चिन्ता करके बहुत कष्ट होता है. वरन् उसी सोचसे नाना प्रकारके रोग पैदा होते हैं; सो इस रोगको हमने अनेक प्रकारकी चिकित्सा अजमायी पर इसमें किसी दवाने काम नहीं किया, परमेश्वरकी कृपाके अतिरिक्त दूसरी दवा काम नहीं आती. मनुष्योंको चाहिये कि छोटेपनसेही भगवान्का ध्यान करैं और दान पुण्य यथाशक्ति किया करैं और बुरे कामको त्याग करै, अच्छा काम करैं और अच्छे आदमीकी संगति करैं बुरेसे दूर रहैं. अच्छा आदमी वह जो अपनी नीतिसे रहै और दूसरेका उपकार करै और बुरे आदमी चोर ज्वारी लबार बातछुटक उचक्के इनकी संगति करनेसे अनेक भाँतिकी तकलीफ उठानी पड़ती है. हमने इसको अच्छे प्रकारसे अजमाया है. और अनेक भांतिका दुःख उठाया है. हे सज्जन पुरुषो!

ऐसे सब लोगों [illegible] त्याग करो, यह वैद्यकी रीति है।

नाड़ीभेद-चौपाई.

वात पित्त कफ ये सुनि लहू । क्लेश होत इनहींसे देहू ॥
जो इनते एको बढ़ि जावै। तो जनु मृत्यु निकटआजावै॥
जो त्रिदोष ये बढ़हिं समाना। तो नर पहुँचे यमके धामा॥
रहि रहि पुनि हलकेही हाले। नाड़ीप्राण नाशनी चाले॥

दोहा.

रहि रहि नाड़ी जो चले, जो वह प्राण हराय ।
पुनः क्षीण शीतल चलै, सो यम घरलै जाय ॥

चौपाई.

समझ इलाज करै जो कोई। ताको अपयश कबहुँ न होई॥
हैं भगवानदास नादाना । सुनियो सज्जनपुरुष महाना॥
कठिन पारसी भाषाजान। रोगचिकित्सा और निदान ॥
तनिक लोभ ना कीजे भाई । दयाधर्म करिदेहु दवाई ॥

इति श्रीमुन्शी भगवानप्रसादके शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यक रसराज महोदधि भाषा ग्रंथ समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

तथा-गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-
कल्याण-बंबई.